

मिथिलाक विभूति



ललित नारायण मिश्र
नति ३ नारायण मिश्र

डा. मदनेश्वर मिश्र



मैथिली अकादमी, पटना

मिथिला-विभूति

ललित नारायण मिश्र

लेखक

डॉ० मदनेश्वर मिश्र

परामर्शो, समग्र ग्रामीण विकास, बिहार; अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना;
भूत पूर्व कुलपति, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।



मैथिली अकादमी प्रकाशन—११२

मिथिला विभूति ग्रन्थमाला पुष्प—७

प्रकाशक,

मैथिली अकादमी,

श्रीकृष्णपुरी, पटना-१

© मैथिली अकादमी, पटना

प्रथम संस्करण, १९८३

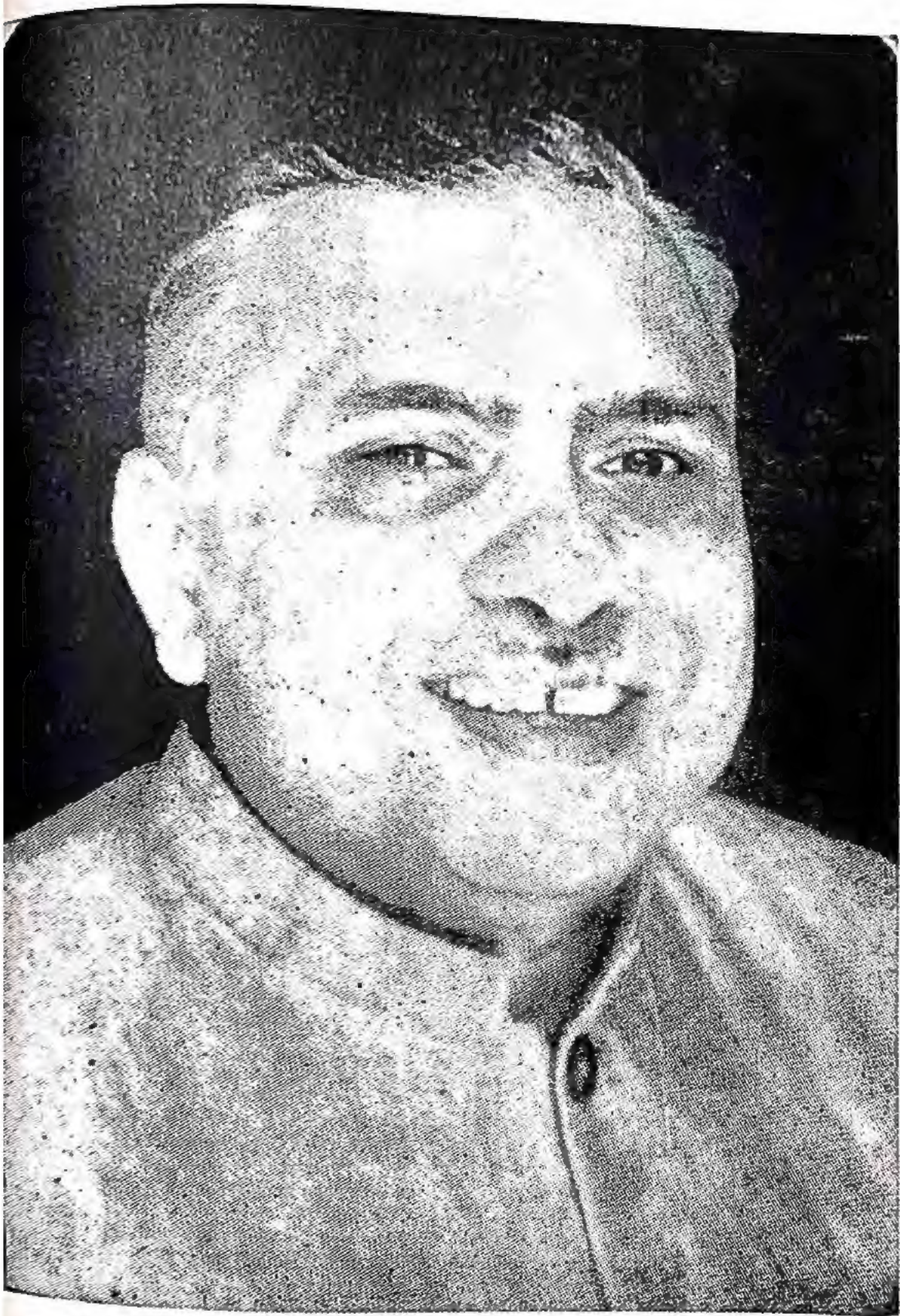
प्रति—११००

मूल्य— { सजिल्द—८.००
अजिल्द—६.००

मुद्रक :

मुरलीधर प्रेस,

मुसल्लहपुर, पटना-६



स्व० ललित नारायण मिश्र

१. आरम्भ

मिथिलामे महामहोपाध्याय भवनाथ उर्फ अयाची मिश्रक वंश अत्यन्त गरिमामय एवं उदात्त रहल अछि । एहि वंशमे एकसँ एक विद्वान, नैयायिक मीमांसक एवं अनेक महामहोपाध्याय भेल छथि । एहि वंशक बीजी पुरुष छलाह महामहोपाध्याय रत्नेश्वर आ ओ सोदरपुर (दरभंगा)क वासी छलाह । महामहोपाध्याय रत्नेश्वरकेँ तीन पुत्र छलथिन—हलेश्वर, सुरेश्वर आ जीवेश्वर । इहो तीनू गोटा महामहोपाध्याय छलाह । सुरेश्वरकेँ दू पुत्र छलथिन—सरबय एवं विश्वनाथ आ दूनू महामहोपाध्याय । महामहोपाध्याय विश्वनाथकेँ रविनाथ, रघुनाथ एवं लक्ष्मीनाथ तीन पुत्र छलथिन आ तीनू महामहोपाध्याय छलाह । महामहोपाध्याय रविनाथकेँ सेहो तीन पुत्र—महामहोपाध्याय जीवनाथ, महामहोपाध्याय भवनाथ उर्फ अयाची एवं महामहोपाध्याय देवनाथ । महामहोपाध्याय अयाची मिश्रक सोदर भ्राता महामहोपाध्याय जीवनाथक सन्ततिमे ललित बाबू अबैत छथि । जीवनाथक पुत्र धेध, धेधक पुत्र राघव, राघवक पुत्र पशुपति, पशुपतिक पुत्र हरिहर, हरिहरक पुत्र सदाशिव, सदाशिवक पुत्र बदली, बदलीक पुत्र गोविन्द, गोविन्दक पुत्र चेतन, चेतनक पुत्र हियभरण, हियभरणक पुत्र सम्पति एवं सम्पतिक पुत्र पं० रमानाथ मिश्र शास्त्री छलाह । रमानाथक पुत्र तोफालाल, जनकलाल, अभय नन्दन, अजयनन्दन, एवं रविनन्दन मिश्र भेलाह । पं० रविनन्दन मिश्रक पुत्र भेलाह ललित नारायण, कमल नारायण (लड्डू बाबू), श्याम नारायण, मृत्युंजय नारायण एवं जगन्नाथ । तोफालालक पुत्र भेलथिन्ह—पं० राजेन्द्र मिश्र, भूतपूर्व एम० एल० ए० एवं बिहार प्रदेश काँग्रेसक सभापति । उपर्युक्त वर्णनसँ ई स्पष्ट भ' जायत जे मिथिलाक अत्यन्त सम्मान्य एवं विद्वानक वंशमे ललित बाबू अवतीर्ण भेलाह । हिनकर मूल अछि सोदरपुरिण दिगौन । ई लोकनि सोदरपुरक वासी छलाह आ तदुपरान्त दिगौन ग्राम चल गेलाह । मूलक उपर्युक्त दूनू नाम ग्रामहिक नाम थिक ।

पितृपक्षमें ललित बाबूके विरासतमें विद्या भेटलनि । हिनकर वंश मूल रूपे विद्वानक वंश अछि आ बड़ स्वाभिमानी । एहि वंशक महामहोपाध्याय भवनाथ मिश्रक नाम अयाची एहि कारणे पड़लनि जे ओ फकरहुगं कोना याचना नहि कयलनि । कहल जाइत अछि जे ओ विद्यार्थीके पढ़ावथि, विद्वान लोकनिसे शास्त्र-चर्चा करथि आ अपन बाड़ीमे जे किछु साग-पात हांडन ताहिसे प्राण-रक्षा करथि । कतहु किछु याचनाक लेल नहि जाथि । एकटा कथा अछि जे एक बेर अयाची मिश्रक ओहिठाम बंगालक एकटा विद्वान कोना शंका-समाधानक अभिप्रायसे शास्त्र-चर्चाक निमित्त पहुँचलाह । आर्थिक दृष्टिसे महामहोपाध्याय जीक विपन्नावस्था छलनि । परन्तु एकटा दूरदेशी विद्वानक सम्मान सेहो आवश्यक छल । नीक जकाँ हुनका भोजन कराओल जाय ताहि हेतु महामहोपाध्याय जी एक गोट लोटा मोदीक ओहिठाम बंधकी राखि भोजनक सामग्री जुटओलनि—किछु चिक्कसि, घृतादि । पंडिताइन बाड़ीसे साग तोड़ि अनलनि । परन्तु पाहुनके एकेटा तरकारी कोना देल जाय ? ते पंडिताइन बाड़ीसे खम्हाउर उखाड़य गेलीह । खम्हाउर उखाड़बाक क्रममे हुनका अशरफीसे भरल एक तमघैल भेटलनि । ओहिमेसे एकटा अशरफी निकालि पूर्ण विन्याससे भोजनक व्यवस्था भेल । बंगाली पंडितजी भोजनो-परान्त अपन कार्य सम्पन्न क' चल गेलाह । जखन पंडितजीके अशरफीसे भरल तमघैल भेटबाक कथा कहल गेल त' ओ बड़ दुःखी भेलाह । ओ कहलथिन जे स्वर्ण जतवा पावौ ओकर द्विगुण दान करी । परन्तु, पंडितजीके तँ द्विगुण दान करवाक सामर्थ्य नहि छलनि । ते ओ अपन पुत्र शंकरके अशरफी वाला तमघैल ल' क' राजकोषमें जमा करबाक निमित्त राजाक ओहि ठाम पठओलनि । महामहोपाध्याय जी कोनो तरहे ओकरा अपन धन मानबाक लेल तैयार नहि भेलाह । शंकर सेहो अपन कालक अद्वितीय विद्वान भेल छथि—महामहोपाध्याय शंकर मिश्र । राजदरबारमे पहुँचि शंकर राजकोषमे अपन बाड़ीसे उखड़ल धनके जमा कयलनि आ तकरा बाद राजासे भेट कयलनि । राजदरबारमे शास्त्र-चर्चा भेल आ राजा हुनक विद्या आ प्रतिभासे अत्यन्त प्रभावित भेलाह आ सभसे अधिक प्रभावित भेलाह एहि वंशक निर्लोभ चरित्रसे । शंकरके अचुर-द्रव्य विदाइमे द' राजा हुनका सम्मानपूर्वक बिदा कयलनि । ओही दिन राजा ईहो निश्चय कयलनि जे शंकरक पिता जे एहन निर्लोभ पंडित छथि हुनकासे भविष्यमे भेट कयल जाय । जखन शंकर सब द्रव्यादि आ वस्तुजात ल' गाम पहुँचलाह तँ शंकरक माय महामहोपाध्याय

जीसँ कहलथिन जे शंकर द्वारा आनल धन तँ आव राजकोषमे जमा नहि करय पड़त ? ओ गद्गद छलीह जे एके दिनमे हुनक पुत्र हुनका लोकनिक दुःख-दारिद्र्य समाप्त क' देलथिन । परन्तु पंडितजी शंकरक मायके कहलथिन- 'राजकोषमे तँ जमा नहि करय पड़त मुदा शंकरक नार काठ्यवाली चमाइनके अहाँ कहने छलियैक जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरे होयतैक ।' पंडिताइन सेहो एहि प्रसंगके स्मरण कयलनि आ फल ई भेल जे सभ किछु ओहि चमाइनके बजा क' द' देल गेल । जनश्रुति अछि जे ओ चमाइन ओहि द्रव्यसँ एकटा पोखरि खुनओलक आ ओकर नाम पड़ल 'चमैनिआं पोखरि ।' एही वंशक छलाह ललित बाबू । एहन बुझि पड़ैत अछि जे एहि वंशक लेल धनक एके प्रयोजन छल आ ओ छल दान । ललित बाबू अपने कुलक ई कथा नहि सुनने छलाह की ? दान देब तँ हुनक संस्कारमे छल । ओ दान देवाक हेतु जगत्विख्यात छलाह । ई संस्कार हुनक वंशक संस्कार छल, ई परम्परा हुनक वंशक परम्परा छल ।

ललित बाबूक आतिथ्य विख्यात अछि । हमर मित्र श्री एम० ए० एम० गिलानी, जे सम्प्रति इन्टरमीडिएट शिक्षा परिषद्क अध्यक्ष छथि आ पहिने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे प्रतिकुलपति छलाह जखन हम ओतय कुलपति छलहुँ, एक दिन प्रसंगवश कहलनि जे जखन ओ सहरसामे कलक्टर छलाह तँ ललित बाबूक आतिथ्यक भार हुनका सरकार दिससँ देल गेल । ललित बाबू सहरसा आयल छलाह आ राज्य-अतिथि (स्टेट गेस्ट) छलाह । गिलानी साहेब मंझटिमे रहथि जे आतिथ्यमे कोनो त्रुटि ने भ' जाय । परन्तु ललित बाबूक अबितहिँ बात बदलि गेल । ई गिलानी साहेब आ हुनक संगी लोकनिके बलुआ अयबाक निमंत्रण द' गाम चल गेलाह । बलुआ पहुँचलापर गिलानी साहेब एवं हुनका मित्र सभके ललित बाबू अपना हाथे परसिक' खोजओलनि । कत' राजकीय अतिथिक भार हुनकापर छलनि आ कत' ओकर बदलामे ओएह बलुआ जरक' ललित बाबूक अतिथि भ' गेनाह । ललित बाबू 'अतिथिदेवो भव'क सिद्धान्तमे विश्वास करैत छलाह । जनिक पूर्वज विपन्नावस्थामे लोटा बंधकी राखि अतिथि-सत्कारसँ नहि चुकलाह, तनिक सन्ततिपर एकर प्रभाव नहि रहय तँ आश्चर्य ।

विद्या-प्रेम, विद्यानुशीलन, विद्वानक संगति आ अपन माटि-पानिके चीन्हब ललित बाबूक विशिष्टता छल । पांडित्यपूर्ण वंशमे अवतरित

ललित बाबू ओहि वंशक राभटा गुण ल' क' एहि पृथ्वीपर आयल छलाह । हिनक पितामह पं० रमानाथ मिश्र गारवी ओहि पांडित्यपूर्ण परम्पराके अधुण रखलनि आ ललित बाबूके ई पितृक सम्पत्तिक रूपमे प्राप्त भेलनि । सरस्वतीक एहि कुलपर सभ दिन कृपा रहल आ ललित बाबू अवतीर्ण भेलाह सरस्वती-पूजहि (माघ शुक्ल पंचमी) दिन । ई तँ भेल ललित बाबूक पितृकुलक परिचय आ हिनकापर पितृवंशक परम्पराक प्रभाव । हिनक मातृकुलक परिचय सेहो अपने ढंगक अछि ।

ललित बाबूक मातृक छनि कुमर बाजितपुर, तत्कालीन जिला मुजफ्फरपुर आ सम्प्रति वैशाली जिला । हिनक मातामह छलथिन पं० परमानन्द कुमार । कुमारजीक मूल भेल ओइनिबार । कर्णाटवंशीय महाराज हरिसिंह देवक बाद मिथिला राज्यक उत्तराधिकारी भेलाह ओइनिबारवंशीय राजपंडित कामेश्वर ठाकुर । हुनका तीन पुत्र छलथिन—राजा भोगीश्वर, महामहत्क कुमुदेश्वर तथा महाराजाधिराज भवेश्वर । महाराजाधिराज भवेश्वरके चारि पुत्र—हरिसिंह, पार्णागारिक उदय सिंह, कुमार त्रिपुर सिंह आ समस्त-प्रक्रिया-विराजमान हरिभक्तिपरायण महाराजाधिराज गरुड़नारायण पदांकित देवसिंह । देवसिंहके दू पुत्र—महाराजाधिराज रूपनारायणपदांकित शिव सिंह आ महाराज पद्मसिंह । महाराज शिवसिंहक दरबारमे विद्यापति रहैत छलाह ई सबके प्रायः बुझल अछि । महाराज शिवसिंह आ पद्मसिंह दूनू गोटाक निःसंतान रहबाक कारणे राजा भोगीश्वरक पुत्र महाराज गणेश्वर मिथिलाक राजगद्दीपर बैसलाह । हुनका तीन पुत्र—महाराज वीरसिंह, महाराज कीर्तिसिंह आ गोविन्द । एहि गोविन्दक संतान छथि ललित बाबूक मातामह श्री परमानन्द कुमार । ई लोकनि महाराजक सन्तति भेलाक कारणे कुमार कहावय लगलाह । एहि वंशमे उत्पन्न भेलीह पं० परमानन्द कुमारक पुत्री स्वनामधन्या यमुना देवी, जे ललित सन लालक गौरवशालिनी माता छलीह ।

ललित बाबूक मातृकुलक एहि संक्षिप्त विवरणसँ ई स्पष्ट अछि जे मातृ-पक्षमे ललित बाबू ओइनिबारवंशीय राजकुलक सन्तान छथि । ओइनिबार वंशीय राजा लोकनि पूर्वमे ओइनी नामक ग्राममे रहैत छलीह । जे पूसाक निकट अछि । एही कारणे ओ लोकनि ओइनिबारवंशीय कहओलनि । ललित बाबूक मिथिला आ मैथिल संस्कृतिक प्रति प्रेम, मैथिल मर्यादाक निर्वाह, पोषण-प्रवृत्ति, राजसी विचार आ व्यवहारक मूलमे छल हुनक मातृपक्षक वंश ।

परम्परा । मिथिलाक शासकक वंशमे उद्भूत ललित बाबूमे प्रशासकीय परम्परा कोनो नवीन घस्तु नहि छल ।

ललित बाबूक पितृपक्षमे छल विशुद्ध पांडित्य-परम्परा—अनेक महामहोपाध्याय, कर्मकांडी, विद्वान शास्त्र-चिन्तन आ अनुशीलनमे संलग्न तँ दोसर दिस मातृपक्षमे महाराज शिवसिंह सन वीर, प्रजापालक, देशरक्षक, मातृभूमिक रक्षार्थ अमरत्व प्राप्त कयनिहार, दानी, विद्या आ विद्वानक संरक्षक । कोनो व्यक्तिक निर्माणमे वंश-परम्परा आ वातावरण दुनूक योग रहैत छैक । उपर्युक्त विवरणसँ हुनक वंश परम्परा स्पष्ट भ' जाइत अछि । आब दोसर पक्ष—वातावरणकेँ देखल जाय ।

ललित बाबू २ फरवरी, १९२२केँ अपन मातृक कुमर बाजितपुरमे सरस्वती-पूजाक दिन (माघ शुक्ल पंचमी) एहि घरा-घामपर अयलाह । ओ घर, जतय ललित बाबूक जन्म भेल, हिनक मातृकमे एखनहुँ वर्तमान अछि । ई घर वस्तुतः भाग्यशाली अछि । एकरा त' मिथिलाक तीर्थस्थलक रूप देवाक चाही । ई मिथिलाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विद्यापतिहुक जन्म-स्थलपर कोनो भव्य स्मारक नहि बन सकल । मंडनमिश्रक डीहक स्थान मात्र बराबोल अछि, कोनो स्मारक नहि अछि । मां उग्रताराक कृपासँ लोक केँ ई बुझवामे अवैत छैक जे मंडनमिश्रक डीह ओहि ठाम छलनि । हुनक डीह उग्रतारा-मन्दिरक समीपे अछि । मिथिलाक एहन कतेको महापुरुषक कोनो स्मारक हुनक जन्मस्थलपर नहि अछि । ललित बाबूक जन्मस्थलपर हिनक व्यक्तित्वक अनुरूप स्मारकक निर्माण आवश्यक । केँ करत ?- वस्तुतः सम्पूर्ण मैथिल समाज, मिथिला आ बिहार वासीक ई कर्तव्य थिक ।

ललित बाबूक प्रारंभिक शिक्षा कुमर बाजितपुरहिमे भेल । तत्पश्चात् ई बलुआ बाजार मिडिल स्कूलमे अध्ययन कयलनि । मिडिल पास कयलाक उपरान्त ई विलियम हाइ स्कूल, सुपौल (सहरसा) सँ हाइ स्कूलक पढ़ाई समाप्त कयलनि । हिनक बाल्यावस्थाक किछु काल कुमर बाजितपुरमे आ तदुपरान्त सम्पूर्णतः कोशी क्षेत्रहिमे बीतल । पहिने हिनक परिवार बलुआ बाजारमे नहि रहैत छल । ई लोकनि ओतयसँ किछु दूर अवस्थित बसान-पट्टी ग्राममे रहैत छलाह । कोशीक विभीषिकाक कारणेँ हिनका लोकनिकेँ बलुआ बाजार आवय पड़लनि । ललित बाबू अपन बाल्यावस्थाहिसँ कोशी क्षेत्रक शोक, दुख आ दारिद्र्यसँ परिचित छलाह ।

ललित बाबू जखन मेना छलाह तखनहिं देशमे राजनीतिक हलचल आवि चुकल छल । भारतीय राजनीतिक जीवनक एकमात्र उद्देश्य छल भारतमाताके परतन्त्रताक बेड़ीसँ मुक्त करव । महात्मा गांधी भारतीय राजनीतिक मंचपर आवि गेल छलाह । स्वतन्त्रताक प्राप्तिक हेतु राष्ट्रीय आन्दोलन जन-आन्दोलनक रूप ल' रहल छल । ओ एहन युग छल जखन भारतीय सपूत स्वतन्त्रता-संग्राममे अपनाके आहुति क' रहल छलाह । अमरत्व प्राप्त क' रहल छलाह । एहि सभक एकमात्र उद्देश्य छल अंग्रेजके भारत वर्षसँ निष्कासित करव । महात्मा गांधीक नेतृत्वमे स्वतन्त्रता आन्दोलन सक्रिय रूप धारण कयलक । पं० जवाहर लाल नेहरू, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरदार पटेल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस प्रभृति नेतागण भारतीय स्वतन्त्रताक हेतु कटिबद्ध छलाह । ब्रिटिश सरकारक दमनात्मक नीति चलि रहल छल जकर अन्तिम परिणति भेल १९४२क स्वतन्त्रता-संग्राम । वर्तमान शताब्दीक तृतीय दशकमे राजनीतिक आन्दोलनक संगहि विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी सेहो जीवनके जर्जर बना रहल छल । जन-जीवन अस्तव्यस्त छल । एहि समयमे कोशी क्षेत्रक सभसँ पैघ समस्या छलैक कोशीक बाढ़ । कोशी मिथिलांचलक 'शोक-नदी'क रूपमे अपन प्रलयंकर लीला क' रहल छलीह । ओहि क्षेत्रक लोक मलेरिया आ कालाजारक कारणे अगणित संख्यामे मरि रहल छल । आइ जे भूमि उर्वरा आ शस्यश्यामला छल से अगिले दिन बालुका-राशिमे परिणत भ' जाय । प्रतिवर्ष कोशीक बाढ़मे सम्पूर्ण क्षेत्र जलमग्न भ' जाइत छल । कोशीक धार बदलैत रहैत छल तेँ जे भूमि एहि वर्ष अक्छ छल, अगिला वर्ष ओ मरुभूमिमे परिणत भ' जाइत छल । जेना मरुभूमिमे दूर-दूर तक कोनो गाछ-वृक्ष आ सड़क नहि रहैत अछि, तहिना छल एहि क्षेत्रक रूपरेखा । बीच-बीचमे कोशीक मरना धार सभ । सम्पूर्ण क्षेत्र वंजर, सुनसान, शस्यहीन । रोगी, निर्वल, मलेरिया आ कालाजारसँ आक्रान्त लोकक छोट-छोट जतय-ततय वस्ती । सहस्र धारमे उमड़ैत कोशी हजार-हजार नर-नारीके एक दिनमे उजाड़वाक शक्ति रखैत छल । की मनुष्य आ की पशु-पक्षी, की गाछ-वृक्ष, कोशीक बेगवती बाढ़क चपेटमे प्रतिदिन धराशायी होइत छल, भासि जाइत छल, नष्ट भ' जाइत छल । आइ ई काल्पनिक जेकाँ वृक्ष पड़त परन्तु ई वास्तविकता छल । बाढ़ि गेल आ ओकर बाद आयल मलेरिया, कालाजार आ नाना प्रकारक रोग । असंख्य व्यक्ति अकाल काल-कवलित होइत छल । मुर्दा जरयवाक हेतु लकड़ी नहि भेटैक । श्राद्ध प्रत्येक घरमे

एक अनवरत कर्म भ' गेल छल । कृषियोग्य भूमिमे सबतरि कारक जंगन । शक्तिहीन सर-नारी आ कठिन भूमि । कृषि-कार्य ठप्प । आजीविकाक कोनो साधन नहि । लोक 'ताहि गोविन्द' क' रहल छल । ललित बाबू नेना छलाह । सभ देखैत छलाह, अनुभव करैत छलाह, संभवतः किछु करबाक संकल्प लैत छलाह ।

दोसर बात जे बालक ललितकेँ प्रभावित कयलकनि से छल राजनीति । हिनक परिवारक लोक राजनीतिमे रुचि रखैत छलथिन । ललित बाबूक पिता आ काका तँ राष्ट्रीय आन्दोलनक गतिविधि निकटसँ देखि रहल छलाह । हिनक पितृवैत भाए पं० राजेन्द्र मिश्र जी तँ ओहिमे सक्रिय रूपेँ भाग ल' रहल छलाह । हिनक पारिवारिक परिवेश एहन छल जे संवेदनशील बालक ललित अपन बाल्यावस्थहिसेँ राष्ट्रीय-आन्दोलन आ कोशीक संहार-लीलासँ प्रभावित होमय लगलाह । देश आ समाजक दुःखक कारण हिनका दुइए टा देखबामे अवैत छलनि—भारतपर अंगरेजक आधिपत्य आ कोशीक ताण्डव-लीला । अपन घरक लोकसँ सतत हिनका राजनीति आ सामाजिक क्षेत्रक बात सुनबामे अवैत छलनि आ शनैः शनैः हिनकापर ओ प्रभाव करय लागल । हिनकर परिवेश मूल रूपेँ हिनक बाल्यावस्थहिमे एहन अग्नि सुनगओलक जाहिमे ई अंगरेजी सत्ता आ कोशीक विभीषिकाकेँ भस्मसात् क' देब' चाहैत छलाह । हिनक पिता आ पितृवैत भाए पं० राजेन्द्र मिश्र ललित बाबूक जे व्यक्तित्व बनि रहल छल तकर विकासमे सहायक भेलथिन । पिताक स्वाभिमान, पारिवारिक देश-प्रेम आ कोशी अंचलक विपन्नावस्था बालक ललितकेँ दाताक रूपमे निर्माण क' रहल छल । ललित बाबूक व्यक्तित्वकेँ वृद्धिवाक हेतु एहि पृष्ठभूमिकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक ।

ललित बाबूमे जे दानशीलताक पक्ष छल सेहो हिनक बाल्यावस्थहिमे जड़ि पकड़लक । ई अपन बाल्यावस्थहिमे देखलनि जे कोशीक बाढ़िसँ झमारल सैकड़ो नरकंकालकेँ कोना हिनक पिता जीवन-रक्षार्थ प्रतिदिन अन्न-दानसँ सहायता करैत छलथिन । हिनक पिता अत्यन्त सम्पन्न लोक छलाह । हजारो बीघाक चास छलनि आ वंश-परम्पराक अनुकूल ई पीड़ित जनताकेँ साहाय्य देब अपन धर्म वृद्धैत छलाह । भूमि नहि उपजैक आ विभिन्न प्रकारक रोगसँ लोक सीदित-पीड़ित रहैत छल । एहन स्थितिमे अन्न-दाने जीवनयापनक एकमात्र सहारा छलैक । सरकारी ऋण अथवा साहाय्य तँ 'कूँटक मुहमे जीरेक फोरन' छल । हिनक पिताक एहि दानसँ जाहि माइक

बच्चा जीवित रहि जाइत छलैक तकरा सभकेँ आशीर्वाद दैत आ कृतज्ञता प्रकट करैत ललित बाबू देखैत छलथिन आ बाल्यावस्थामे देखल इएहु दृश्य सभ हिनक दानशीलताक मूलमे अछि ।

कोशीक संहार-लीलाक कारणेँ हजारो-हजार नर-नारीक कष्टन ललित बाबू बाल्यावस्थहिसेँ देखैत अबैत छलाह आ इहो देखैत छलाह जे हिनक पिता आ परिवारक लोक सभ कोना द्रवित भ' जन-समूहक दुख निवारणार्थ तत्पर रहैत छलाह । ई मोनहिमोन एहि दुरवस्थासँ जन-समूहक उद्धारक संकल्प लैत छलाह । यातायातक जे कष्ट कोशी अंचलमे रहिक' ललित बाबू देखलनि आ अनुभव कयलनि तकरे प्रभाव छल देशमे यातायातक सुविधा हेतु ललित बाबूक अथक प्रयास । हिनक पिता सपूत ओकरा कहैत छलथिन जे देशमे रेल-मार्गक विस्तार करय, यातायातक सुविधा बढ़ाबय । हुनको ई धारणा कोशी अंचलक दुर्गतिहिक कारणेँ बनल छल । बालक ललित अपन पिताक भावनासँ पूर्ण परिचित छलाह । कल्पना करू जे कोशीक बाढ़िक कारणेँ रेलवे स्टेशन जयबाक हेतु ललित बाबूक गामसँ पचीस-पचीस मील धरि कोनो सड़क नहि छल । पुरान रेलवे लाइन कोशीक बाढ़िमे ध्वस्त भ' गेल छल । कोनो सवारी वा यातायातक सुविधा नहि छल । कोना ओहि अंचलक वीया-पूता पढ़बा लेल अथवा लोक आजीविकाक हेतु बहरायत । ललित बाबू ई सभ देखैत छलाह, प्रतिदिन अनुभव करैत छलाह आ भावी जीवनमे किछु करबाक संकल्प लैत छलाह । पिछड़ल अंचलक यातायातक व्यवस्थामे सुधारक निर्णय ललित बाबू रेल-मन्त्री भेलाक पश्चात नहि आपितु बालक ललितक रूपमे ल' लेने छलाह ।

हिनक पिता प्रारम्भहिसेँ हिनकामे स्वाभिमान आ देश-प्रेम भरि देलथिन । ओ ललित सन नेनासँ अंगरेजक नोकरी कस्यबाक पक्षमे नहि प्रत्युत हिनका हाथेँ ओकर साम्राज्य समाप्त करयबाक युक्तिमे छलाह । अत्यन्त सम्पन्न परिवारमे जन्म भेलोपर ललित बाबूकेँ शहरी जीवनक चटक-मटक आकृष्ट नहि क' सकल । ई ग्रामवासी छलाह आ ग्रामीण वातावरण हिनक पोर-पोरमे भीजल छलनि । हिनक बाल्यावस्था ग्रामीण परिवेशमे बीतल । गामक सुख-दुख आ गामक अर्थनीतिक प्रशिक्षणक हिनका कहिओ आवश्यकता नहि भेलनि । ई कादोक कमल छलाह । भारतक उन्नतिक अर्थ हिनका लेल ग्रामक उन्नति छल । बाल्यावस्थहिमे कोशी क्षेत्रक विपन्न ग्रामीण अवस्थाक जे छाप हिनकापर पड़ल से अमिट

छल । गागीण भारतक उन्नतिक संकल्प ई बाल्यावस्थहिमे क' लेने छलाह । हिनक परिघेस एहि लेल हिनका बाध्य कयल गनि । गामक जे नमशा ई बालकपनमे देखलनि ओ हुनक आखिसँ कहिओ नहि हटल । ई जाति-पाति, हिन्दू-मुसलमान आ संकीर्ण 'धर्मान्धतासँ ऊपर छलाह । कोशीक बाहिक कारणेँ कोशी क्षेत्रक जे विषम परिस्थिति छल तकरा ललित बाबू अपन बाल्यावस्थहिसँ निकटसँ देखने छलाह, अनुभव कयने छलाह । कोशी क्षेत्र ओहि समयमे की छल—दुःखी प्राणी आ दुखिया परिवार सभक विराट सम्मेलन । जाति-पाति आ धर्मान्धताकेँ एहिमे कोनो स्थान नहि छलैक । बालक ललित अपनाकेँ एही आर्त प्राणीक समूहक एक सदस्य मानैत छलाह । एकमात्र मानव धर्म हिनक संस्कार भ' गेलनि आ दुखी मानवताक उद्धार करब एकमात्र कर्तव्य । ओहि अवस्थामे संवेदनशील बालक ललितक संस्कार निर्मित भ' रहल छल । धर्मनिरपेक्षताक पृष्ठपोषकक प्रशिक्षण भ' रहल छल । वातावरण आ परिवेश हिनका भावी जीवनक लेल तैयार क' रहल छल ।

कोशी क्षेत्रमे जंगल, कास, बनैआ सुगर आ अन्यान्य हिसक जन्तुक राज्य भ' गेल छल । लोक निष्प्राण आ नेतृत्वविहीन । एहन विषम परिस्थितिमे लोक त्राता त्राकि रहल छल । लोकक दुखसँ उद्धार करयबाला वीर सपूतक आगमनक कामना क' रहल छल । कमला-बलान आ कोशीक बाढ़िसँ मिथिलांचल सैकड़ो वर्षसँ पीड़ित छल परन्तु एहिसँ उद्धार करयबाला केओ नहि छलैक । जन-जीवन आर्तनाद क' रहल छल । ओहि समयक मिथिलांचलक ओहि क्षेत्रक जन-मानसक परिचय एहिसँ सुन्दर रूपेँ नहि देल जा सकैत अछि :—

कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ । कखन हरब दुख मोर ।

दुखहिँ जनम भेल, दुखहिँ गमाओल, सुख सपनहुँ नहि भेल,

हे भोलानाथ ।

भोलानाथ मिथिलावासीक आओर अधिक आर्तनाद नहि सुनय चाहैत छलाह । विद्यापतिहिक समयसँ मिथिलावासी भोला बाबाक प्रार्थना क' रहल छलाह । महादेव सन्तुष्ट भेलथिन । युगपुरुष ललित बाबूकेँ ओ चिर-कालसँ पीड़ित मिथिलावासीक दुख हरण करबा लेल पठओलनि ।

२. शिक्षा

निलिभम हाथ स्कूल, मुपीनसँ ललित बाबू पटना विश्वविद्यालयक मैट्रिक्यु-
लेशन परीक्षामे तीस अंकरसँ उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि । ओहि समयमे बिहारमे
मैट्रिक्युलेशनक परीक्षा पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित होइत
छल । प्रवेशिका परीक्षा पास कयलाक उपरान्त उच्च शिक्षाक हेतु सी०
एम० कालेज, दरभंगामे जाग लिखओलनि । ओतहिसँ ई आइ० ए० क परीक्षा
पास कयलनि । एक बेर तँ ई १९४१ ई०मे स्वतन्त्रता-संग्रामक आन्दोलनक
काममे गिरफ्तार भेलाह । पुनः १९४२क अगस्त क्रान्ति प्रारम्भ भेल ।
'करू ना गरू' बाला ई क्रान्ति छल । ललित बाबू एहिसँ कोना पृथक
रहितथि ? ई एहि आन्दोलनमे पूर्ण उत्साहसँ कूदि पड़लाह । आन्दोलनक
काममे हिनका पकड़ो गोली सेहो लागल छल आ जखन पकड़ल गेलाह तँ
कारि वर्षक कारावासक दण्ड हिनका देल गेल । किन्तु एहि घटनासँ ने
हिनक पिता निचलित भेलथिन आ ने स्वयं ललित बाबू । हिनक पिता
बरोबरि जेलमे ललित बाबूसँ भेट करथिन । ई पटना जेलमे राखल गेल
छलाह । हिनक पिता अंगरेज सरकारसँ क्षमा-प्रार्थना क' ललित बाबूके
जेलसँ मुक्त करयबाक पक्षमे नहि छलाह । ओ उच्च न्यायालयमे मोकदमा
लड़िक' किछु दिन सजाय कटलाक बाद हिनका जेलसँ मुक्त करओलनि ।
स्वतन्त्रता-सेनानीक शिक्षा लेल ताहि दिन जेल एक अपूर्व प्रशिक्षणालय भ'
गेल छल । ललित बाबू एहू प्रशिक्षणालयक अनुभव प्राप्त कयलनि । जेलसँ
मुक्त भेलाक बाद ई पुनः उच्च शिक्षा दिस ध्यान देलनि । पिता सेहो
एहिपर जोर देलथिन । हिनक पिताक दृढ़ धारणा छलनि जे बिना
उच्च शिक्षा प्राप्त कयने हुनक पुत्र हुनक इच्छाक अनुरूप सफल राष्ट्रकर्मि
नहि भ' सकताह ।

आन्दोलनक प्रथम चरणक बाद १९४३ई०क उत्तरार्द्धमे ई तेज नारायण
पुबली (आब बनौली) कालेज, भागलपुरमे बी० ए० अनर्स (अर्थशास्त्र)

कक्षामे नाम लिखओलनि । हमहूँ ओही वपं ओही कक्षामे ओतहि नाम लिखओलहुँ आ तहिएसँ हमरालोकनि सहपाठी भेलहुँ, मित्र भेलहुँ । हमरालोकनि कालेजक छात्रावासमे रहैत छलहुँ । हमरालोकनिकेँ भागलपुरमे कएकटा प्राध्यापकक विशेष स्नेह प्राप्त भेल । अर्थशास्त्रमे स्वर्गीय प्रो० गिरिधर चक्रवर्ती आ प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसादक हमरालोकनि ऋणी छी । प्रो० चक्रवर्ती बादमे गणेश दत्त कालेज, बेगूसराय आ पुनः मुरारका कालेज, सुलतानगंजक प्रधानाचार्य भेलाह । प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसाद बादमे वेतिया कालेजक प्रधानाचार्य भेलाह । ओ हमरा दुनू गोटापर बहुत स्नेह रखैत छलाह आ वरोबरि अपना ओहि ठाम पढ़बा लेल बजाबथि । आनन्द बाबू, भागलपुर शहरमे मुन्दीचक मुहल्लाहमे रहैत छलाह आ हमरालोकनि छात्रावासमे । ई दूरी लगभग तीन मीलक छल । हम दुनू गोटा विचारलहुँ जे टमटमसँ जयवामे बहुत समय लागि जाइत अछि । ओहि समयमे भागलपुरमे टमटमक अतिरिक्त हाथसँ खींचयबाला रिक्शा चलैक जाहिमे आओर अधिक समय लगैक आ ललित बाबू तँ ई कहिक जे मनुष्यपर मनुष्य कोना सवारी करत ओहिपर कहियो नहि चढ़लाह । अन्ततोगत्वा सवारीक हेतु साइकिल किनवाक हमरालोकनि विचार कयलहुँ । ई द्वितीय विश्वयुद्धक काल छल । आवश्यक सामग्रीपर नियंत्रण भ' गेल छल । मुश्किलसँ दोकानदार एक हरक्युलिस साइकिल बेचब गछलक । हमरा लोकनिक विचार भेल जे दुनू गोटे एके साइकिलसँ काज चलायब । ओहिमे कैरियर लगवओलहुँ आ साइकिल कीनि लेलहुँ । आब प्रोफेसर साहेबक ओहि ठाम अथवा आनो ठाम हमरालोकनि साइकिलपर जाइ । एहिसँ समयक बचत होअय । जखन दुनू गोटाकेँ एके संग कतहुँ जयबाक होअय तँ ललित बाबू साइकिल चलाबथि आ हम कैरियरपर बैसी । हम कतबो हिनका कहिअनि जे हमरा साइकिल चलाबय दिय' आ अहाँ कैरियर पर बैसू, परन्तु ओ से नहि मानथि । बात ई छल जे ई कैरियरपर बैसबा लेल बनले नहि छलाह । वस्तुतः देशक हमरा सन-सन असंख्य प्राणीक भार वहन करबाक लेल भगवान हिनक रचना कयने छलथिन । अस्तु । हमरा लोकनिक दोसर कम्बिनेशन छल प्रधान हिन्दी । हमरालोकनि ई निश्चय कयने छलहुँ जे हिन्दी घरमे कहियो नहि पढ़ब । क्लासिक पढ़ाईसँ काज चलायब आ समयक उपयोग अर्थशास्त्रक लेल करब । हम दुनू गोटे सँह कयल आ बढ़ियाँ अंक्सँ हिन्दीमे सफलता प्राप्त कयल । ओहि समयक एक प्रसंग मन पड़ैत अछि । हिन्दी विषयमे एकटा कहानीक पुस्तक सेहो कोसंमे छलैक । ओकर

एक कहानीमे दू गित वार्तालापक क्रममे भावी जीवनपर विचार करैत छल । हम दुनू गोटा एके संगे ओहि कहानीके पढ़ि रहल छलहुँ । हम ललित बाबूके पुछलिअनि जे अध्ययन समाप्त कयलापर ओ की करताह । कहानीवाला एक गित कहने छलैक जे ओ धन कमयबाक हेतु पश्चिम दिस जायत । ललित बाबू कहलनि—“हम ज्ञानार्जनक हेतु देश-विदेशक पर्यटन करव आ राष्ट्र-सेवामे लागि जायब ।” हमरा ओहिना मोन अछि । खाली कक्षामे बैसिक हमरालोकनि ई वार्तालाप कयने छलहुँ । तखन हमरालोकनि चतुर्थ वर्षमे पढ़ैत छलहुँ सन् १९४४ ई०मे । ई सभ बातचीत गणेशप्पमे भेल छल परन्तु ललित बाबू सत्य कहने छलाह । जे ओहि समयमे ई बजलाह सँह भावी जीवनमे कयलनि । राष्ट्र-सेवाक कार्य तँ ई विद्यार्थि जीवनमे प्रारम्भ क’ चुकल छलाह ।

अंग्रेजीक अध्यापक प्रो० सत्येन्द्र दत्त, प्रो० बृजगोपाल गुप्त आ प्रो० निशाकान्त सरकार ललित बाबूकेँ खूब मानैत छलथिन । हिनक हस्तलिपि सुन्दर नहि कहल जा सकैत छल परन्तु सुस्पष्ट रहैत छल । कहियो-कहियो प्रो० गुप्त हिनका आओर सुन्दर अक्षर लिखबाक हेतु प्रेरित करैत छलथिन । हमरालोकनिपर प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसादक बड़ कृपा रहैत छलनि । प्रो० प्रसाद जखन बादमे बेतिया कालेजक प्रधानाचार्य भेल छलाह तँ ललित बाबू हमरा पुछने छलाह जे बधाइक तार पठओलियनि कि नहि । हम नहि पठओने छलिअनि । एहिपर ई हमरा तुरन्त तार पठयबाक आग्रह कयलनि । एहिमे हिनक दर्शन छल जे ककरो उपलब्धिपर प्रसन्नता व्यक्त कयलासँ ओहि व्यक्तिकेँ प्रोत्साहन भेटैत छैक आ ओ उत्साहित भ’ आओर अधिक काज करवाक प्रेरणा प्राप्त करैत अछि । ई ‘बधाइ’ बाला बात हम ललित बाबूसँ सिखलहुँ । प्रो० निशाकान्त सरकार अंगरेजीक प्राध्यापक छलाह आ अंगरेजी ‘लिटरेरी युनियन’क अध्यक्ष । ललित बाबू ओही समयसँ वाद-विवाद अथवा विभिन्न परिषदक कार्यक्रममे भाग लैत छलाह तँ ओ विशेष रूपेँ हिनकापर प्रसन्न रहैत छलथिन । हमरालोकनिक प्रधानाचार्य स्वर्गीय हरलाल दास गुप्तकेँ ई ज्ञात छलनि जे ललित बाबू ‘आनर्स सेमिनार लाइब्रेरीसँ वरोबार किताब ल’ क’ पढ़ैत छलाह, तँ ओ हिनकापर विशेष प्रसन्न रहैत छलथिन । देखू ओ युग जे प्रधानाचार्यकेँ ई ज्ञात रहैत छलैक जे कोन छात्र लाइब्रेरीक व्यवहार करैत अछि आ कोन नहि । ललित बाबूक सम्बन्धमे हुनका जानकारी रखवाक एक विशेष कारण इहो छल जे हुनका

ई आशा छलनि जे विश्वविद्यालयमे 'आनर्स'मे नीक स्थान प्राप्त क' ई कालेजक प्रतिष्ठा बढ़ओताह । प्रधानाचार्यक एहि आशाक ई पूर्ति कयलनि । भागलपुरहुमे ललित बाबू राजनीतिसें अलग नहि छलाह । एतय हम हिनका विशेषतः कांग्रेसक संगठनादि पर विशेष विचार करैत देखिअनि । १९४२क आन्दोलनमे भाग लेबयवाला जे हिनक मर्गा-माथी जेतसँ छुटिक' अवैत छलथिन हुनकालोकनिक पुनर्वासपर ई विशेष रूपेँ विचार करथि । ओहि समयमे हिनका हम बीच-बीचमे सहरसाक श्री कामता प्रसाद गुप्तसँ कांग्रेसक संगठनादिपर विचार करैत देखिअनि । १९४५ ई०मे बी० ए० आनर्स (अर्थशास्त्र)क परीक्षामे नीक स्थान पावि एम० ए०मे ओहि वर्ष पटना कालेजमे अर्थशास्त्रमे नाम लिखओलनि । हमहूँ ओतहि ओही विषयमे नाम लिखओलहुँ । ललित बाबू रानीघाट स्थित पोस्ट ग्रेजुएट होस्टलमे रहैत छलाह ।

पटना कालेजमे हमरालोकनिक प्राध्यापक छलाह स्व० प्रो० गोरख नाथ सिंह, प्रो० सचीन दत्त, प्रो० विश्वनाथ मुखर्जी, प्रो० दिवाकर झा (जे बादमे पटना विश्वविद्यालयमे अर्थशास्त्रक विभागाध्यक्ष भेलाह) आ प्रो० एच० लाल । हमरालोकनिक विभागाध्यक्ष छलाह प्रो० ज्ञानचन्द । ललित बाबूक स्पेशल ग्रुप छलनि 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति' आ हमर छल 'इण्डियन फाइनान्स' । प्रो० सचीन दत्त, जे बादमे भारतीय प्रशासनिक सवामे चल गेलाह, हमरालोकनिकेँ राजनीतिशास्त्र पढ़वैत छलाह । गोरख बाबू आ सचीन दत्त ललित बाबूकेँ बड़ मानैत छलथिन । राजनीतिशास्त्रमे हिनक सूझबूझ आ सुन्दर अभिव्यक्तिए एकर कारण छल । किछु दिन डा० अमृतधारी सिंह, डा० ज्ञानचन्दक विदेश चल गेलापर, हमरालोकनिकेँ पढ़ओने छलाह । गोरख बाबू जीवनक अन्तिम दिन धरि हिनका मानैत रहलथिन । ललित बाबू सचीन दत्तक पढ़यबाक कलाक प्रशंसक छलाह । डा० ज्ञानचन्दक समाजवादी विचारधारासँ ई प्रभावित छलाह । प्रो० अमृतधारी सिंह जी ललित बाबूक ज्ञान-पिपासासँ प्रभावित छलाह । ओ बरोबरि ललित बाबूकेँ प्रश्न लिखबाक लेल दैत छलथिन । समाजसेवीक रूपमे सेहो ओ ललित बाबूसँ प्रभावित छलाह । आ तेँ ललित बाबूकेँ प्रो० सिंहक स्नेह प्रचुर मात्रामे प्राप्त छलनि । ललित बाबूकेँ सामान्यतः भागलपुर एवं पटनामे सब शिक्षकक प्रति आदरभाव छलनि आ हुनकालोकनिक हिनका स्नेह प्राप्त छलनि । राजनीतिमे लागल रहितहुँ हम ललित बाबूकेँ बरोबरि अध्ययनक प्रति जागरूक देखिअनि ।

पटना कालेजमे श्री बलिराम भगत, श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा प्रभृति हमरालोकनिक संगहि पढ़ैत रहथि । ललित बाबूके श्री बलिराम भगतसँ बड़ दोस्ती छलनि । दुनू गोटे पढ़ितहुँ काल काँग्रेसक सत्रिय राजनीतिमे छलाह । एक दिनुक प्रसंग अछि । मोलाना अबुल कलाम आजाद पटना विश्व-विद्यालयक दीक्षान्त-समारोहमे भाग लेबाक लेल आयल छलाह । ललित बाबू आ बलिराम बाबू ई निश्चय कयल जे 'स्टूडेंट काँग्रेस' दिससँ हुनका मानपत्र देल जाय । 'ललित बाबू स्टूडेंट काँग्रेसक संगठन-कर्तामेसँ रहथि । ओ दुनू गोटा मिलिक' मानपत्र तँ लिखि लेलनि परन्तु ओकर लिखावट हुनका लोकनिके पसिन्न नहि छलनि । समय बहुत कम छलैक आ किछुए कालमे मानपत्र पढ़बाक छलैक । एही बीचमे ओकरा शीशामे सेहो मढ़यबाक छलैक । एहि दुनू गोटाके काजमे संलग्न देखि हमहुँ हिनकालोकनिक लग गेलहुँ । ललित बाबू तँ लगभग हमर खुशामद कयलनि जे अक्षर नीक भेलाक कारणे हम यथाशीघ्र मानपत्र लिखि हुनकालोकनिके द' दिअनि । हम लिखि देलिअनि आ दुनू गोटा बड़ प्रसन्न भेलाह । हमर लिखावट कोनो सुन्दर नहि कहल जा सकैत अछि परन्तु ललित बाबूके पसिन्न छलनि ।

एही समयमे पं० जवाहरलाल नेहरू पटना आयल छलाह आ ललित बाबू, बलिराम भगत, तारकेश्वरी सिन्हा, राम लखन सिंह यादव प्रभृति स्टूडेंट काँग्रेस दिससँ समारोहपूर्वक हुनक स्वागत कयने छलथिन । विराट आयोजन भेल छल । हजारो विद्यार्थी उपस्थित छल । विद्यार्थी-जीवनहिमे ललित बाबूमे संगठनक अपूर्व क्षमता आवि गेल छलनि । पं० नेहरू एहि समारोहसँ खूब प्रसन्न भेल छलाह आ ललित बाबूक प्रसन्नताक त' कोनो ठेकाने नहि छल । ई हिनकर संगठन-सफलता छल । भागलपुरमे हम विद्यार्थी संगठनमे हिनका ओतबा अभिरुचि नहि देखने छलिअनि जतबा पटनामे स्टूडेंट काँग्रेसक संगठनमे । एहिमे तँ ई जी-जान अरोपि देने छलाह । हमरा एखनहुँ धरि ओ चित्र आंखिक सामनेमे अछि जाहिमे साइन्स कालेजक मैदानमे माइकपर विद्यार्थी काँग्रेसक सभामे ललित बाबू जोरदार भाषण कयने छलाह ।

स्टूडेंट काँग्रेसक अधिवेशन तँ सफल भेल परन्तु एहि सफलताक रहस्य सभके नहि वृत्तल छैक । बलिराम बाबू प्रभृति अधिवेशनक निश्चय-सँ क' लेलनि परन्तु एहि कार्यक लेल द्रव्यक आवश्यकता छैक । विद्यार्थीलोकनिके

साधनक अभाव छल आ एहि कारणे हिनका लोकनिमे किछु क्षण लेल विचार-विमर्शक क्रामे हतोत्साहिता आव' जागल । परन्तु ललित बाबू सभकेँ आपसत कयलनि । ई कहलथिन जे आवश्यक कोपक उपाय ई करताह । चिन्ताक कोनो विषय नहि । ललित बाबू एहि समयमे कमाइत नहि छलाह । पितासँ एहि कार्यक हेतु धन मडबामे संकोच छलनि । परन्तु धन प्राप्त करब तँ अनिवार्य छल; नहि तँ अधिवेशन कोना होइत ? ललित बाबू अपन सासुर बिदा भेलाह आ अपन पत्नीसँ हुनक मूल्यवान आभूषण ल' बन्धकी राखि स्टुडेन्ट काँग्रेसक अधिवेशनक हेतु द्रव्य जुटओलनि । हिनक पतिपरायणा धर्मपत्नी ई बात ककरहु नहि कहलथिन । जखन सासुर गेलीह आ ओत' आभूषण-विहीन देखि हुनका लोक पुछय लगलनि तखन अन्ततोगत्वा ललित बाबू एहि रहस्यक उद्घाटन कयलनि ।

हमरा मोन अछि जे ओहि समयमे जखन आपुन अपेक्षा मूल्य स्तर बहुत नीचाँ छल, ललित बाबू अपन पितासँ पाँच सय रुपैया प्रति मास पढ़बाक हेतु खर्च लैत छलाह । सामान्य रूपेँ पचहत्तरि रुपैया तक हमरालोकनिकेँ एक मासमे खर्च लगैत छल । ललितो बाबू सामान्ये रूपेँ रहैत छलाह परन्तु हिनक शेष रुपैया काँग्रेस कार्यकर्ता आ संगठनक सहायता आ नव पुस्तक सभ किनबामे खर्च होइत छल । हिनका पुस्तक पढ़बाक खूब सौख छलनि । हमरालोकनि अपना मे सामयिक प्रकाशन सभपर खूब चर्चा करी ।

१९४५ ई० मे यू० एन० ओ० क स्थापना भ' गेल छल । ललित बाबू बीच-बीचमे हमरा पुछथि जे यू० एन० ओ० मे कोनो काज पाबि क' जायब उचित होयत कि नहि । हम बरोबरि हिनका कहिअनि जे एम० ए० पास कयलाक बाद आओर किछु सोचल जाय । एक विषयक आओर ई जिज्ञासु छलाह जे बिहार सरकारकेँ कोशी-पीड़ित जनसमूहक उद्धार लेल कोना प्रभावित कयल जाय । ई तखनुका गप्प थिक जखन हमरालोकनि एम० ए० क विद्यार्थी छलहुँ । एहि सभक पाछाँ हिनक एके उद्देश्य छल जे ई कोनो एहन स्थानपर पहुँचथि जतयसँ युग-युगसँ कोशीक विभीषिकासँ आक्रान्त मिथिलाक उद्धार क' सकथि ।

१९४७ ई० मे हमरालोकनिकेँ एम० ए० क परीक्षा देबाक छल । एही वर्ष १५ अगस्तकेँ देश स्वाधीन भेल । १४ तारीखक रातिमे हमरालोकनि सुतलहुँ नहि । बारह बजे रातिएसँ शंखध्वनि आ तारासँ सम्पूर्ण पटना

• गुंजायमान छल । हमरालोकनिक एम० ए०क परीक्षा शीघ्र प्रारम्भ होमय बाला छल । एहि सभमे ललित बाबू आ बलिराम बाबू सन विद्यार्थीक पढ़व तँ हर्ज भेले छलनि, हमरो सन विद्यार्थीक अध्ययनमे स्वतंत्रताक उल्लासक कारणे बाधा भेल छल । ललित बाबूक नेतृत्वमे हमरालोकनि ३०-४० छात्र पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति सर सी० पी० एन० सिंह (सम्प्रति उत्तर प्रदेशक राज्यपाल)क ओहिठाम 'माडल' क' उपस्थित भेलहुँ । सलौती पूर्णिमाक दिन छल आ प्रस्ताव ई भेल जे पहिने हुनका राखी बान्हि देल जाय, जकर भार हमरे देल गेल, आ पश्चात् अध्ययन लेल समय भेटय तज्जन्य परीक्षाक तिथि बढ़यबाक माह कयल जाय । सर सी० पी० एन० ध्यानपूर्वक हमरा लोकनिक बात सुनलनि आ ओ तिथि बढ़ायब स्वीकार नहि कयलनि; परन्तु, दू पत्रक परीक्षाक बीच समय देबाक आश्वासन देलनि जे वस्तुतः भेटबो कमल । हमरालोकनि अध्ययनमे लागि गेलहुँ ।

एहि समयक एक घटना मन पड़ैत अछि । एक दिन ललित बाबूसँ अशोक राजपथ स्थित पिन्टू होटल (आब ई ओतय नहि अछि) लग भेंट भेल । खूब हड़बड़ीमे छलाह । कहलनि जे हमरहि तकैत छलाह आ हमरा आग्रह कयलनि जे हम हुनका संगहि हुनक डेरा (आर ब्लॉक) चली, जतय हुनक अग्रज पं० राजेन्द्र मिश्र रहैत छलथिन । ओ इहो कहलनि जे दस दिन ओ ओतयसँ हमरा आब' नहि देताह । हम ओहि समयमे बी० एम० दास रोड स्थित 'पैगोडा' लौजमे रहैत छलहुँ । ओ हमरा कोनो सामान नहि लेब' देलनि आ हम हुनका संगहि हुनक निवास स्थानपर गेलहुँ । ललित बाबूक उद्देश्य छल एम० ए०क परीक्षाक तैयारीक योजना बनायब । हम दुनू गोटे किछु दिन ओतहि एके संगे अध्ययन कयल आ प्रत्येक पत्रक लेल किछु प्रश्नक उत्तर तैयार कयलहुँ । एहिमे एक प्रश्न छल 'हाइ कमान्ड' (आला कमान) सँ सम्बन्धित, आ ई राजनीतिशास्त्र बाला पत्रमे अपेक्षित प्रश्न छल । ओहि दिन धरि हमरा 'हाइ कमान्ड'क विषयमे स्पष्ट ज्ञान नहि छल । ललित बाबू पहिले-पहिल हमरा 'हाइ कमान्ड'क रूप-रेखा, कार्य आ ओकर आवश्यकताक सम्बन्धमे बतओने छलाह आ पुनः विशद रूपसँ काँग्रेस 'हाइ कमान्ड'क सम्पूर्ण पहलू पर प्रकाश देने रहथि । ओहि समयमे हमरा की वृत्तल छल जे एक दिन स्वयं ई काँग्रेस 'हाइ कमान्ड'क सदस्य होयताह । अस्तु, परीक्षाक तिथि सेहो आवि गेल आ

सम्पन्नो भेल । ललित बाबू नीक अंकसँ एगो ए० परीक्षाम विश्वविद्यालयमे उच्च स्थान प्राप्त कयलनि ।

परन्तु एखनहुँ हुनक ज्ञान-पिपासा बनले छलनि ओ पीएच० डी० कर' चाहैत छलाह । एकरा हेतु पटना विश्वविद्यालयमे अपन नामो पंजीकृत करओलनि । हुनक व्यक्तित्वक अनुरूपे हुनक शोधक विषय छल 'उन्नैसम शताब्दीमे ब्रिटिश साम्राज्यक औपनिवेशिक नीति' । एहिपर ओ बहुत किछु सामग्रियो एकत्र कयने छलाह । हुनका पीएच० डी०क उपाधिसँ ओतेक प्रेम नहि छलनि जतबा एहि विषयसँ । १९४८-४९ मे पटनामे बिहारक प्रथम इकोनोमिक कन्फरेन्सक आयोजन कयलनि । ओहि समयमे ओ पटना विश्व-विद्यालयक सीनेटक सदस्य छलाह । बिहार राज्य काँग्रेस समितिक अर्थ एवं खाद्य विकासक सचिवक रूपमे ओ जूट उत्पादन पर सेहो शोध कयने छलाह । राजनीतिमे लागल रहितहुँ ओ बरोबरि नीक अंकसँ विश्वविद्यालयीय परीक्षा सभमे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि । एक लेखमे ललित बाबू स्वयं शिक्षाक परिभाषा कयने छथि जे निम्नलिखित अछि :—

“शिक्षाक वास्तविक अर्थ अछि मस्तिष्क आ शरीरक एहन प्रशिक्षण जे परिवर्तनशील परिस्थितिक अनुरूप अपनाकेँ ढारबा योग्य संतुलित व्यक्तित्व उत्पन्न क' सकय ।”

वस्तुतः ललित बाबू अपन शिक्षणकालमे एहि बातकेँ स्मरण रखने छलाह आ हुनक शिक्षा हुनका एहि योग्य बना देने छलनि जे अपनाकेँ कोनो स्थिति विशेषक अनुरूप बना लैत छलाह । हुनक भावी जीवन-दर्शनक बीज-वपन हुनक बाल्यास्थहिमे भ' चुकल छलनि आ हुनक शिक्षण-प्रशिक्षण एकर समुचित विकासक हेतु अनुकूल वातावरणक रचना कयलक ।

३. राजनीति

एम० ए०क परीक्षाफल १९४८मे प्रकाशित भेलाक बादे ललित बाबूके टी० एन० जे० कालेज (आब टी० एन० बी० कालेज) भागलपुरमे अर्थशास्त्र विषयमे प्राध्यापकक पदपर नियुक्तिक हेतु पत्र भेटलनि । हुनका एहि काजमे ममत्व आ अभिरुचि छलनि किन्तु हुनक पिताके ई स्वीकार नहि छल जे ओ नोकरी वृत्ति करथि । एकबेर ओ ललित बाबूके कहने छलथिन जे 'सपूत त' ओ देशक काज आबय, जे कोशीके बन्हबाबय आ रे० चलबाबय ।' कोशी क्षेत्रमे कोशीक जे प्रचंड उत्पात छल आ यातायातक जे दुरवस्था छल ओहिमे हुनक पिताक एहन सोचब अत्यन्त उचित छल जे उपर्युक्त कोटिक कार्य करयबाला वस्तुतः सपूत थिक । एहि सपूतत्वक कामना ओ अपन पुत्र ललिते बाबूमे कयने छलाह । ललित बाबू एहि तीनू बातके गिरह बन्हने छलाह । जाहि पिताक ई आकांक्षा छलनि से कोना अपन पुत्रके नोकरी वृत्तिमे—चाहे ओ अध्यापने कार्य किएक ने हो—जयबाक सहमति दितथि । ललित बाबूमे परदुःखकातरता, कर्मठता आ समाज-सेवाक भावना देखि क' ओ विश्वस्त छलाह जे ई एक दिन अपन परिवार आ देशक नाम उजागर करताह । ते ओ ललित बाबूके कहलथिन जे "अध्यापन-कार्यमे अहाँके जतबा वेतन भेटत ओकर द्विगुण हम अहाँके देब । अहाँ कैचाक चिन्ता छोड़ि राष्ट्रीय आ सामाजिक कार्यमे लागि जाउ ।" पुनः दोसर अवसर आयल । बिहारक तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ० श्रीकृष्ण सिंह निश्चय कयने छलाह जे ललित बाबूके संयुक्त राष्ट्र संघमे कोनो उच्च पदपर पठाओल जाय । किन्तु ललित बाबूक पिता एहिमे अपन सहमति नहि देलथिन । ओ तँ ललित बाबूके देशक सेवक बनावय चाहैत छलाह । ओ कटिबद्ध छलाह ललित बाबूके राष्ट्र-सेवाक हेतु अर्पित करबाक लेल ! अस्तु, ललित बाबूक पिता ने हुनका प्रोफेसर बनय देलथिन आ ने यू० एन० ओ० मे जाय देलथिन । ललित बाबू स्वयं पिताक इच्छाक अनुरूप राष्ट्र-सेवाक व्रत विद्यार्थि जीवनमे ल' चुकल छलाह । पिताक सम्पूर्ण सहयोग आ प्रेरणाक फलस्वरूप ओ एहि पथपर आरुढ़ रहलाह ।

१९४० ई० में जखन ललित बाबू स्कूलक विद्यार्थि छनाह तखनहि ओ धाना कांग्रेस कमीटीक अध्यक्ष निर्वाचित भेल छलाह । हम उगर कहि आयल छी जे १९४२क आन्दोलनमे ओ सोत्साह स्वतन्त्रता-संग्राममे कूदि पड़लाह । एक बेर १९४१ ई०मे सेहो ओ राष्ट्रीय आन्दोलनक क्रममे गिरफ्तार भेल छलाह । १९४२क आन्दोलनमे हुनका पैरमे गोली लागल छलनि आ चारि वर्षक कठिन कारावासक दण्ड भेटल छलनि । १९४६ ई०मे ओ अखिल भारतीय छात्र परिषदक सदस्य निर्वाचित भेल छलाह । १९३७ ई०मे अखिल भारतीय छात्र कांग्रेसक अधिवेशन पटनामे आयोजित कयलनि जकर चर्चा भ' चुकल अछि । १९४६ ई०सँ १९४८ ई० धरि ओ एहि संस्थाक अध्यक्ष रहलाह । १९५० ई०मे हुनके प्रयाससँ पटनामे प्रथम बिहार आर्थिक सम्मेलन भेल छल आ एहि संस्थाक ओ सचिवो रहलाह । एहि कालमे ओ पटना विश्व-विद्यालयक सिनेटक सदस्य सेहो छलाह । बिहार प्रदेश कांग्रेस कमीटीक आर्थिक आ खाद्यान्न विभागक सचिवक रूपमे ओ बिहारमे जूट उत्पादन आ खाद्यान्नक स्थितिपर शोधपूर्ण आलेख तैयार कयने छलाह । १९५० ई०मे ओ सहरसा जिला कांग्रेस कमीटीक सदस्य सेहो निर्वाचित भेल छलाह । एही समयमे ओ जूट उत्पादक संघक अध्यक्ष सेहो छलाह ।

राष्ट्रीय नेताक रूपमे हुनक विकास १९५० ई०मे अखिल भारतीय कांग्रेस समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाक पश्चात् प्रारम्भ भेल । १९५२ ई०मे ओ सहरसा क्षेत्रसँ संसदीय चुनावमे लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह । एहि सम्बन्धमे डा० जगन्नाथ मिश्र (वर्तमान मुख्यमंत्री)क उक्ति देखू :—

“१९५० ई०मे पहिल बेर ललित बाबू अखिल भारतीय कांग्रेस समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाह । ललित बाबूके अपना इलाकामे एक होनहार व्यक्तिक रूपमे ओही समयसँ देखल जा रहल छल । ओना तँ बिहारे पिछड़ल छल किन्तु हमर इलाका सहरसा आओरो पिछड़ल छल । ई इलाका निरन्तर कोशीक क्रूरताक शिकार रहि चुकल छल । ओहि क्षेत्रक सामान्य जनता गरीबीकबीभत्सदृश्यके छोड़ि आओर देखनहि की छल ? अभावक दारुण वेदनाके छोड़ि आओर भोगनहि की छल ? सहर्षा (सहरसा) जे गुणक विपरीत नाम पड़ल छल, तकरा नामानुकूल करवाक आन्तरिक अभिलाषासँ जेना लोक सभ ललित बाबूके अपन अगुआ चुनलक । लोकके होइक जे आइ ने काल्हि दुख-दरदक एहि नरकसँ ओ ओकरा सभक त्राण

करथिन आ ललित बाबू एहन छलाहो । हुनका हृदयमे दीन-दुखियाक लेल बहुत दर्द छलनि । खाहे फफरो फगड़ा फाटल होइक, भैंग होइक, खाहे फगड़ा आ देहसँ दुर्गन्ध निकलि रहल हो, ललित बाबू जखन आँफरासँ भेंट करैत छलाह तँ लगैक जेना ओ अपना सहोदरसँ भेंट क' रहल होयि । फफरोसँ कोनो दुराव नहि । जखन केओ आर्थिक सहायता माँगथ आवय तँ ओ शक्ति भरि ओकर सहायता करबासँ नहि चूकथि । एही सभ कारणसँ ओहि इलाकाक लोक हुनका पाछाँ पागल रहैत छल । ललित बाबूक इएह स्नेहीस्वभाव हुनका १९५२ ई० क संसदीय चुनावमे भारी मतसँ विजयी बनओलक ।”

एम० ए० पास कयलाक बाद ओ निर्मलीमे कोशी पीड़ितक सम्मेलन कयने छलाह । क्षेत्रक हेतु स्नेह, किछु करबाक संकल्प आ कोशी क्षेत्रक कार्याकल्प करबाक निश्चयक परिणाम छल ई । संसदमे ओ प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू तथा देशक आन वरिष्ठ नेतालोकनिक ध्यान कोशीक समस्या दिस आकृष्ट कयलनि । पुनः डा० जगन्नाथ मिश्रक शब्दमे “लोक-सभामे ललित बाबू उपेक्षिता निर्बन्धा शोक-सरिता कोशीक एतबा चर्चा कयलनि जे ओ संसदीय क्षेत्रमे ‘कोशी मिश्र’क नामे विख्यात भ’ गेलाह ।” १९५४ ई०मे कोशीक बाढ़िक ताण्डव-नृत्य ओ पं० जवाहर लाल नेहरू आ डा० श्रीकृष्ण सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री, बिहारकेँ देखओलनि । लोक-सभामे तँ ओ प्रयास करिते छलाह । हुनक एहि प्रयत्न सभक फलस्वरूप भारतक प्रथम पंचवर्षीय योजनामे कोशी-योजना सेहो सम्मिलित कयल गेल । स्मरणीय अछि जे प्रथम पंचवर्षीय योजना १९५१ में प्रारम्भ भ’ गेल छल । कोशी परियोजनाक प्रारम्भ जन-सहयोगसँ भेल । पं० नेहरू आ श्री गुलजारी लाल नन्दाक परामर्शपर ललित बाबू एहि योजनाक कार्यान्वयनमे जन-सहयोगक प्रयोग कयलनि । ललित बाबूक प्रारम्भिक राजनीतिक जीवन ‘भारत सेवक समाज’सँ सेहो सम्बन्धित छल । कालान्तरमे ओ एहि संस्थाक सचिवक पद सेहो प्राप्त कयलनि । भारत सेवक समाजक कार्यकर्ता आ पदाधिकारीक रूपमे ओ बिहारक अविस्मरणीय सेवा कयलनि । कोशी परियोजना प्रारम्भ भेलापर ललित बाबूक नेतृत्वमे भारत सेवक समाजक सहयोगसँ कोशीक १४० मील लम्बा तटबन्धक निर्माण संभव भेल । एहि समयमे संसदमे ओ विशेष रूपेँ कोशी क्षेत्रक यातायातक समस्या, रेलवे लाइनक पुनर्निर्माण आ जूट उत्पादन कर’ वाला गृहस्थक समस्याक चर्चा

करंत छलाह । जूटक धाम मझ पटि गेल छलैक आ कृषकक अथरथा छिन्न भ' गेल छलैक । कोशी तँ तर्षाक विषय रहये करय । लोक-सभामे १९५५-५६ ई०मे हुनका प्राक्कलन समितिक सदस्य बनाओल गेल आ १९५६-५७ ई०मे ओ कोशी योजनान्तर्गत भारत सेवक समाजक सार्वजनिक सहकारिता-कार्यक प्रभारी रहलाह ।

१९५७ ई० मे ओ पुनः लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह । एहि बेर ओ केन्द्रीय श्रम आ रोजगार मन्त्रालयमे संसदीय सचिव नियुक्त कयल गेलाह । १९६०मे श्रम योजना आ रोजगार मन्त्रालयक उपमन्त्री भेलाह । एही कालमे जेनेवामे अन्तरराष्ट्रीय श्रम-संघटनक ४२म अधिवेशनमे भारतीय प्रतिनिधिक रूपमे ओ भाग लेलनि । कोइला आ लोहा उद्योगक श्रम सम्बन्धक अध्ययनार्थ ओ अमेरिकाक यात्रा कयलनि । मजदूर आन्दोलनमे हुनका रुचि छलनि । १९६२-६४क अवधिमे ओ 'नेशनल प्रोजेक्ट कन्स्ट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेड'क अध्यक्ष आ भारत सेवक समाजक सचिव भेलाह । 'भारतीय लौह कामगार फेडरेशन'क सेहो एहि कालमे सचिव छलाह । ओ बिहार भाइ० एन० टी० यू० सी०क कार्य-समिति आ आल इण्डिया जनरल काउन्सिल, आइ० एन० टी० यू० सी०क कार्य-समितिक सदस्य छलाह । ओ 'कांग्रेस फोरम' पत्रिकाक सफलतापूर्वक सम्पादन कयलनि ।

१९६२ ई०मे लोक-सभाक सदस्यताक लेल ओ प्रत्याशी छलाह परन्तु निर्वाचित नहि भ' सकलाह । परन्तु, एकर विरुद्ध जे ओ चुनाव याचिका दायर कयलनि ताहिमे सफल रहलाह । हमरा ओहिना मोन अछि जे ओ एहि याचिकाक प्रसंगे हमरा जेठ भाइ पं० कपिलेश्वर मिश्रसँ, जे ओहि समयमे पूर्णियामे पब्लिक प्रोसेक्यूटर छलाह, सतत विचार-विमर्श करथि । बहुत दिन ओ संसदसँ बाहर नहि रहलाह । १९६४ ई०मे ओ राज्य-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह आ कालान्तरमे श्रम उपमन्त्री, नियोजन उपमन्त्री, गृह उपमन्त्री, वित्त उपमन्त्री एवं सम्पूर्ण उत्तरदायित्वक सहित राज्य स्तरीय विदेश व्यापार मन्त्री बनाओल गेलाह ।

२६ फरवरी, १९६४ केँ ललित बाबू केन्द्रीय गृह उपमन्त्री नियुक्त भेलाह । २३ जनवरी, १९६६केँ वित्त उपमन्त्री बनाओल गेलाह । एही वर्ष कराचीमे कोलम्बो योजना सम्मेलनमे भाग लेलनि । १३ मार्च, १९६७ केँ ओ श्रम एवं पुनर्वास मन्त्रालयमे उपमन्त्री नियुक्त भेलाह । अक्टूबर १९६७मे

जेनेवामे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय भ्रम राधठनक प्रणारी समितिक अधिवेशनमे भाग लेलनि जकर चर्चा पहिनहुँ कयल गेल अछि । १५ नवम्बर, १९६७ केँ ओ प्रतिरक्षा उत्पादन मन्त्री बनलाह । जखन ओ प्रतिरक्षा मन्त्रालयमे छलाह तँ अस्त्र-शस्त्र निर्माणक काज बड़ कुशलतासँ चलओलनि । एकरे फल छल जे जखन १९७१ ई०मे पाकिस्तान भारतपर भीषण आक्रमण कयलक तँ ओकरा मुँहतोड़ जवाब द' पराभूत करवामे ललित बाबूक योगदान अविस्मरणीय रहल । ललित बाबू एहि मन्त्रालयक ढाँचामे आमूल परिवर्तन क' देशकेँ आयुधक सम्बन्धमे आत्मनिर्भरता दिस बढ़ओलनि । एहि मन्त्रालयमे जे हुनकर जे काज भेल ताहिसँ हुनक योग्यता आ प्रतिभाक प्रमाण भेटैत अछि । विदेश व्यापार आ रेल मन्त्रालयमे हुनक कार्य-कलापक लेखा-जोखा भिन्न-भिन्न अध्यायमे कयल जायत ।

ललित बाबूमे संगठनक अद्भुत क्षमता छल । एकर प्रत्यक्ष प्रमाण ओहि समयमे देखबामे आयल जखन १९६९मे कांग्रेसमे दरारि पड़ल । कांग्रेस दू भागमे बँटि गेल । बिहारक लगभग सभ शीर्षस्थ नेता सिडिकेटक पक्षमे चल गेलाह । एकसरे ललित बाबू इन्दिरा जीक संग रहलथिन । १९७१क मार्चमे सामान्य चुनाव भेल जाहिमे श्रीमती इन्दिरा गान्धीक कांग्रेसक प्रत्याशी सभकेँ अप्रत्याशित सफलता भेटलैक । इन्दिरा कांग्रेसकेँ लोक-सभामे ३५० स्थान भेटलैक । कांग्रेस टुटलाक बाद इन्दिरा कांग्रेसमे जतबा सदस्य छल ओहिसँ १२० स्थान अधिक ओकरा १९७१मे भेटलैक । ललित बाबू एहि चुनग्वमे अपने ठाढ़ नहि भेलाह । ओ चुनावक संगठनमे रहिक' इन्दिरा कांग्रेसक हेतु अजेय बहुमत प्राप्त करबाक प्रयासमे छलाह । एहिमे हुनका पूर्ण सफलता भेटलनि । १९७२मे ओ दरभंगासँ संसदक चुनावमे ठाढ़ भेलाह आ अजेय बहुमतसँ सोसलिस्ट पार्टीक श्री रामसेवक यादवकेँ पराजित क' संसद-सदस्य भेलाह ।

नेहरूक पश्चात ललित बाबू सभ दिन अपन राजनीतिक जीवनमे इन्दिरा जीक संग देलथिन । ओ कहैत छलथिन जे हमर साथ दुइएक आर्ग्य छुकैत अछि - एक ईश्वरक आ दोसर इन्दिरा जीक । दुःखक कालमे जखन सिडिकेट वाला इन्दिरा जीक विरोधमे रह्य तखनसँ जीवन पर्यन्त ललित बाबू इन्दिरा जीकेँ निष्ठापूर्वक संग देलथिन ।

बिहारमे ओ कांग्रेसक स्थिति सुदृढ़ कयलनि । जखन कांग्रेसक विभाजन भेल छल आ तकर बादे जे बम्बइमे अधिवेशन भेल छल ओहिमे बिहारक अधिकाधिक डेलीगेटकेँ भाग लेबा लेल ललित बाबू स्वयं पत्र लिखने रहथिन । ओहि समयमे कैक गोटा अपनाकेँ गौरवान्वित बूझि आ हमरा ललित बाबूक मित बूझि हुनक हाथक लिखल पत्र देखओने छलाह । हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व राजनीतिमे हुनका लेल बहुत सहायक भेलनि ।



४. विदेश-व्यापार मंत्री

जून, १९७०मे ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्री नियुक्त भेलाह । ४ फरबरी, १९७३ तक ओ एहि पदपर रहलाह । एहि अवधिमे निर्यात-विकास तथा विदेश-व्यापारमे भारतक हिस्सेदारीमे पर्याप्त वृद्धि भेलैक । ललित बाबू चिलीक सेन्टयागो नगरमे आयोजित अधिवेशनमे भारतीय शिष्टमंडलक नेतृत्व कयलनि । पश्चात् लीमा ओ पेरूमे आयोजित सतहत्तरि देशक सभाक अध्यक्षता कयलनि । एशिया '७२ नामक तृतीय एशियाई व्यापार-मेलाक आयोजन सेहो हिनके नेतृत्वमे भेल । इंग्लैण्डमे व्यापार प्रेफरेन्सपर ब्रिटिश सरकारसँ समझौता-वार्ता कयलनि । पेरिसमे फ्रेंच सरकारसँ भारत तथा यूरोपीय आर्थिक समुदायक बीच आर्थिक सम्बन्धपर समझौता-वार्ता कयलनि । ई रूस, युगोस्लाविया, रूमानिया आ हंगरी सरकारसँ सेहो व्यापार-वार्ता कयलनि । व्यापार-वार्ताक क्रममे ई पाकिस्तान, स्विटजरलैण्ड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, हांगकांग, बेल्जियम तथा आन-आन देशक भ्रमण कयलनि ।

विदेश-व्यापार मन्त्रित्व कालमे ललित बाबू कतेको एहन काज कयलनि जे चमत्कारपूर्ण छल । मधुबनीक चित्रकला एहि अवधिमे विश्वप्रसिद्ध भ' गेल । काल्हि धरि जे कला मधुबनीक लग-पासक गामक धूरामे पड़ल सड़ि रहल छल, आइ ओ अन्तरराष्ट्रीय बजारमे आकर्षणक केन्द्र बनल अछि । मधुबनी क्षेत्रक सैकड़ो लोक एहि कलाक बले अपन जीविकोपार्जन क' रहल छथि । जयन्ती जनता एक्सप्रेसकेँ मधुबनी चित्र कलासँ सजायव ललिते बाबूक काज छल जकरा चलैत देश-विदेशक यात्रीकेँ एकरा देखबाक अवसर प्राप्त भेलैक । मधुबनी चित्रकलाक प्रचार-प्रसार आ प्रोत्साहनक मूलमे छथि ललित बाबू । बिहारक लेल ई बिहारहिमे निर्यात-निगमक स्थापना करओलनि जाहिसँ बहुत वस्तुक निर्यातमे बिहारकेँ सुविधा भ' गेलैक । विदेश-व्यापार मन्त्री रहितहुँ ई मिथिलाचलक किवा देशक आन समस्या

के बिसरैत नहि छलाह । विदेश-व्यापार मन्त्रीक हैसियतिसँ जखन ई नेपालक संग व्यापारिक समझौता करैत छलाह तखनहि बहुत दिनसँ लम्बित पश्चिमी कोशी नहरि योजनाक स्वीकृति नेपाल सरकारसँ करओलनि । फलस्वरूप ३० जनवरी, १९७४के पश्चिमी कोशी नहरिक निर्माण प्रारम्भ भ' गेल । हिनके मन्त्रित्व-कालमे जूट निगमक स्थापना भेल आ जूटक न्यूनतम मूल्य निर्धारित भेल । जूट उत्पादकक हेतु ई एक पैघ काज भेलैक । न्यूनतम मूल्य निर्धारणक पश्चात् कृषकगण किछु आश्वस्त भेलाह । ई निर्यात अभिवृद्धिक नीतिके व्यावहारिक रूप प्रदान कयलनि आ भारतीय अर्थ-व्यवस्थाके सुदृढ़ कयलनि । हिनक प्रयत्नक फल ई भेल जे विदेश-व्यापारक सन्तुलन भारतक पक्षमे मोड़ल जा सकल । ई अर्थशास्त्रक गम्भीर विद्वान तँ छलाहे संगहि व्यावहारिक पक्षमे सेहो बड़ कुशल छलाह । भारतीय विदेश व्यापारके ई दिशा-निर्देश देलथिन । अन्तरराष्ट्रीय व्यापारक पेचीदगीके सोझरथबामे जाहि वणिक-वृद्धिक आवश्यकता पड़ैत छैक ताहिमे ललित बाबू ककरोसँ पाछाँ नहि छलाह ।

जखन ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्रीक रूपमे नियुक्त भेलाह तँ दिल्लीक शीर्षस्थ क्षेत्रमे ई आशंका छल जे विदेश-व्यापार सन विशेषज्ञता बाला क्षेत्रके श्री मिश्र सन राजनीतिक व्यक्ति समुचित दिशा नहि द' सकथिन । पुनः ई सोचल जाइत छल जे एहि मन्त्रालयमे अफसरशाहीक बोलबाला पहिनहिसँ छल । की ललित बाबू हुनकालोकनिक चांगुरसँ निकलि सकताह ? की अफसरलोकनिके मनमाना करबाक छूट नहि भेटि जयतनि ? ललित बाबू अढ़ाय वर्षसँ उपर एहि मन्त्रालयमे मंत्री रहलाह आ अपन कार्य-पद्धतिसँ एहि सभ आशंकाके निर्मूल क' देलनि । हिनक मन्त्रित्व-कालमे ई मन्त्रालय जाहि सफलतासँ काज कयलक से सिद्ध करैत अछि जे ललित बाबू सर्वाधिक योग्य विदेश-व्यापार मंत्री छलाह । हिनकर दृष्टि बड़ सूक्ष्म छलनि आ एहि मन्त्रालयक काजके ई सफलतापूर्वक सम्हारलनि तथा विदेश-व्यापारके सर्वथा नव भूमिका देलनि ।

हिनकर मन्त्रित्व-कालमे अनेक निगमक स्थापना भेल । सार्वजनिक क्षेत्रक उद्योगक क्षमतामे हिनका पूर्ण आस्था छलनि आ इएह कारण छल जे ई कतेको एहन काज कयलनि जाहिसँ देशक अन्तरराष्ट्रीय व्यापारमे एहि क्षेत्रक प्रमुखता हो । ई भारतीय रूइ निगमक स्थापना करओलनि । एहि निगम

द्वारा प्रति वर्ष १०० करोड़ रुपैयाँ अधिक मूल्यक मूल्यक आयातक कार-
 बार होस्त छल । योगर महत्वपूर्ण निगम छल भारतीय काजू निगम जे
 प्रति वर्ष ४० करोड़ रुपैयाँक मूल्यक कच्चा काजूक निर्यात करैत छल ।
 भारतीय जूट निगमक एहि उद्देश्यसँ स्थापना कयल गेल जे मध्यवर्णी
 लोकनिके 'हुटाक' जूटक निर्यात बढ़ाओल जा सकय । एही प्रकारे भारतीय
 चाय व्यापार निगमक स्थापना एहि उद्देश्यसँ कयल गेल जे भारतीय चाहुक
 बिक्री अधिक मूल्यपर कयल जा सकय । विदेशमे भारतीय मशीनक निर्यात
 बढ़यबाक उद्देश्यसँ भारतीय प्रायोजना तथा उपकरण निगमक स्थापना
 भेल । भारतक विशाल समुद्री खाद्य साधनक निर्यातकेँ बढ़यबाक हेतु सामुद्रिक
 उत्पाद विकास प्राधिकरणक स्थापना भेल । नव-नव वस्तुक निर्यातकेँ बढ़ा
 क' निर्यात व्यापारकेँ नव दिशा प्रदान करबाक उद्देश्यसँ व्यापार विकास
 प्राधिकरणक स्थापन भेल । फिल्मक आयात-निर्यात हेतु एक एजेन्सीक
 स्थापना भेल । एहि सभक फल ई भेल जे ललित बाबूक विदेश-व्यापार
 मन्त्रित्व-कालक अन्तिम चरणमे ८० प्रतिशत आयात आ २५ प्रतिशत
 निर्यात व्यापार सार्वजनिक क्षेत्रक संस्था द्वारा होमय लागल । ललित बाबूकेँ
 सार्वजनिक क्षेत्रक संस्थामे पूर्ण आस्था छलनि । आयात-निर्यात व्यापारक
 क्षेत्रमे जे एकाधिकार जकाँ बनल छल 'तकरा ई सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा
 तोड़बाक सफल प्रयास कयलनि । हिनक धारणा छलनि जे बिचोलिया सभक
 कारणे कच्चा रबड़, जूट आ तूरक समुचित मूल्य उपजाबयवालाकेँ नहि
 भेटैत छलनि जखन कि एहि नगदी फसिलसँ उत्पादित वस्तुक दाम
 उपभोक्तालोकनिकेँ बहुत अधिक देबय पड़ैत छलनि । हिनकर उद्देश्य
 छलनि जे वास्तविक उपभोक्ताकेँ उपयुक्त वस्तुक लाभकर मूल्य भेटैक ।
 एक आओर महत्वपूर्ण कार्य जे ई अपन मन्त्रित्व-कालमे कयलनि से छल
 गरीबक लेल सूती मिल द्वारा सस्त वस्त्रक निर्माणमे वृद्धि । गरीबक लेल
 वस्त्रक निर्माणक प्रक्रिया पहिनहिसँ प्रारम्भ छल परन्तु नहि बनओलापर
 मिलकेँ किछु जुर्माना देबय पड़ैत छलैक । मिलसभ सामान्यतः सस्त वस्त्र
 निर्माणक अपेक्षा जुर्माना देब अधिक लाभप्रद बुझैत छल । ललित बाबू एहि
 स्थितिक अध्ययन क' मिल सभक लेल ई अनिवार्य क' देलथिन जे ओकरा
 सभकेँ कान्ट्रोलवाला वस्त्र अधिक परिमाणमे बनाबय पड़ैतैक । इएह कारण
 छल जे हिनक मन्त्रित्व-कालमे सस्त कपड़ाक उत्पादन दस गुण अधिक भ'
 गेल । जतना दूर मूल्यवृद्धिक प्रश्न छल ई सस्त कपड़ाक मूल्य बढ़यबाक

रुझने लगे हैं। ई १९४१ साल में मुद्रा पड़ित साल में गरीब सालाह में मुद्रा-समस्या के लिए मरणां एहिमें दुर्गम में जायगा।

हिनकर मन्त्रालय-कार्य में मोविदात मर ला अन्त मन्त्रालय-की देखभाल मर भारतक व्यापार सम्बन्ध में भेल। हिनके कार्यालय में मोविदात मर चयना देखक तब व्यापार कर-काता देस सभ में संबंध-मुख्य में भेल। हिनकर प्रमुख उद्देश्य छल भारतक विदेश-व्यापारक असंतुलनके हटावब आ ताहिने हिनका हुन सफलता भेटलनि। १९६१-६२ में भारतक व्यापार-मंतुननक सम्बन्ध १०० करोड़ रुपैयाक छल जे १९७०-७१ में घटिक १०० करोड़ रुपैया में सेहो कम में रहल। १९७१-७२ में ७३ करोड़ रुपैयाक आ १९७२-७३ में एहिमें पछिला वर्षक अपेक्षा ३६३ करोड़ रुपैयाक अधिक निर्यात भेल। एहि तीन वर्षक अवधि में निर्यात में भेल सम्पूर्ण वृद्धि चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में रखल रहल लक्ष्य में ७ प्रतिशत अधिक छल। विदेश-व्यापार मंत्रीक रूप में हिनकर मन्त्रालयक अंकन एहिमें स्पष्ट में जाइत अछि। विदेश-व्यापारक इतिहासक ई काल भारतक लेल प्रगतिशील एवं उल्लेखनीय अछि। विभिन्न राष्ट्रवादी देशों में बधा रहल, पोल्ण्ड, अमेरिका, चेकोस्लोवाकिया आदिने, हुनके द्वारा मिथिलाक चित्रकलाक प्रचार-प्रसार भेल। एहिमें हमारा लोकनिक सांस्कृतिक क्षेत्र में तँ विकास भेबे कयल, संगहि अधिक मात्रा में विदेशी मुद्राक अर्जन सेहो भेल। एतबे नहि, एहिमें मिथिलांचलक सैकड़ों नर-नारीक रोटी-रोटीक समस्याक समाधान भेल। ललित बाबूक शब्दहिने विदेश-व्यापार में सम्बन्धित हुनक विचार देखू :—

“अन्तरराष्ट्रीय बाजार की प्रवृत्ति बढ़त रही है। बेचनेवाले, खरीदनेवाले और माल दोनों बढ़त रहे हैं। हम कब तक जूट की गड़्डी और चाय की डिब्बी लिए हाट में बैठे रह सकते हैं? सफल होने के लिए हमें कच्चे मालों के बराबर बना-बनाया माल बाहर भेजना होगा—इंजीनियरी का सामान, नमीनों के कल-मुर्बे, पंखे, एयर कंडीशनर, सभी कुछ। हमें लातानी कनरीका, बट्टीका, मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप हर जगह अपनी मंडी बनानी होगी। अपने ग्राहकों के मन में भारतीय माल के प्रति विश्वास पैदा करना होगा। हमने काफ़ी नई जमीन तोड़ी है, हम सुदूर कोनों में भी पहुँचे हैं—हमारे विदेश व्यापार की संभावना बहुत अधिक है।”

देखू ललित बाबूक दूर दृष्टि आ हिनक विषयाग । औद्योगिक दृष्टिसँ आगाँ बढ़ल राष्ट्र राभकेँ ई स्पष्ट शब्दमे कहैत छलथिन जे भारतकेँ भिक्षा-दान नहि चाही, भारत रचनात्मक साझेदारी चाहैत अछि । भारत एक विकासशील देश अछि आ ललित बाबूमे ओकरा एक सशक्त नेता भेटलैक ।

एक अन्य अवसरपर हुनक उक्ति देखू :—

“आपको अन्तरराष्ट्रीय लेन-देन में अपना संतुलन बनाए रखना है, आयात के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करनी है, अपने सुरक्षित कोष का मजबूत बनाए रखना है—इस सबके लिए जरूरी है कि आप अंदरूनी खपत को नियंत्रित कर अन्तरराष्ट्रीय मंडीमें अपने माल को बेचें । आजके गर्दन तोड़ मुकाबले के युग में यह तभी संभव है जबकि एक ओर आपका माल ऊँचे दरजे का हो और दूसरी ओर आप एक कुशल व्यापारी हों ।”

उपर्युक्त विचारहिक कारणेँ हमरालोकनि जनैत छी जे ललित बाबूक कार्यकालमे भारतक विदेश-व्यापार अभूतपूर्व गति, प्रगति आ दिशा प्राप्त कयलक । ई एक बातमे स्पष्ट छलाह जे भारतीय व्यापारीकेँ उत्पादित वस्तुक गुण आ प्रकार उत्कृष्ट कोटिक राख’ पड़तैक आ व्यापारिक ढंगमे कुशलता आन’ पड़तैक । विदेश-व्यापारमे सफलताक हेतु हिनकर दृष्टिमे ई दुनू गुण आवश्यक छल आ तेँ ई विकसित देशसभसँ भिक्षादानक नहि प्रत्युत रचनात्मक हिस्सेदारीक अपेक्षा रखैत छलाह । नेपालक संग प्रतिदिन भेल जाइत कठिनतर व्यापारक सम्बन्धकेँ सोझराक’ ई जाहि प्रकारक नेपाल-भारत व्यापार समझौता कयलनि से हिनक कौशल आ राज-नीतिक सूझ-बूझक परिचय दैत अछि ।

ललित बाबू जाही कोनो मन्त्रालयमे रहलाह, मिथिलांचलक अथवा देशक आन समस्याकेँ बिसरैत नहि छलाह । हम पहिनहि कहि आयल छी जे कोना ई पश्चिमी कोशी नहरिक निर्माणक स्वीकृति नेपाल नरेश महाराज महेन्द्रसँ प्राप्त कयलनि जखन ई व्यापार-संधिपर हस्ताक्षर करवाक लेल काठमांडू गेलाह । एहि काजक हेतु कतबा दिनसँ राज्य सरकार आ केन्द्रीय सरकार प्रयत्नशील छल परन्तु काज आगाँ नहि बढ़ैत छलैक । ललित बाबू अपन चुम्बकीय व्यक्तित्वसँ अनायास ई काज क’ लेलनि । एहने दोसर उदाहरण अछि । विदेश व्यापार मन्त्रित्व कालमे ई दरभंगामे मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करओलनि ।

ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्रित्व-कालमें मास्कोक यात्रापर रेल
 छलाह आ घुमबाक क्रममें लेनिन लाइब्रेरी रोहो देखलनि । ओहि ठाम
 देवालपर लिखल एक वाक्य हिनका बड़ आकृष्ट कयलक आ ओ छल—
 “यातायातक सुविधा आ बिजलीक उपलब्धि विकासक मूलमन्त्र थिक ।”
 हिनक अनुज श्री मृत्युंजय नारायण मिश्र हमरा कहलनि जे एकटा इहो
 कारण छल जे ललित बाबू हर्षपूर्वक रेल मन्त्रालयक भार स्वीकार कयलनि
 आ अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रके बिहारमें बिजली विभागक भार
 स्वीकार करबाक हेतु अभिप्रेरित कयलथिन ।



५. रेल मंत्री

५ फरवरी, १९७३ के ललित बाबू रेल मंत्रीक पदभार ग्रहण कयलनि । पदभार ग्रहण कयलाक बाद दू सप्ताहक भीतर २० फरवरीके दिनका पार्लियामेन्टमे रेलवे बजट प्रस्तुत करवाक छलनि । रेल द्वारा निर्माण कार्यक व्यय आ कर्मचारीपर होगय वाला खर्चमे लगातार वृद्धि भ' रहल छलैक । दोसर दिस जन-साधारणक आर्थिक स्थिति रोहो खराबे छलैक । एहने स्थितिमे ललित बाबूके पार्लियामेन्टमे रेलवे बजट प्रस्तुत करवाक छलनि । रेलवेक परिचालनात्मक तथा अन्याय प्रकारक व्ययक वृद्धिमे पूरा करवाक एके उपाय छल महसूलमे वृद्धि । जखन-जखन किराया-भाड़ामे वृद्धि होइत छैक, एकर कटु आलोचना होइत अछि आ विधेय रूपे जखन मूल्य-वृद्धिक कारणे जनताक आर्थिक स्थिति खराब हो । एहिसँ जन-साधारणमे आक्रोश उत्पन्न होयब स्वाभाविक अछि । परन्तु रेलवेके घाटासँ बचयवाक हेतु ललित बाबूके बाध्य भ' क' रेल महसूलमे वृद्धिक निर्णय लेअय पड़लनि । ई अर्थशास्त्री छलाह आ सभ स्थितिके सोझाँमे राखि एहि रूपे किराया बढ़-ओलनि जे जन-साधारण अधिक भारक अनुभव नहि करय । मालक किरायामे सेहो वृद्धि भेलैक परन्तु दैनिक उपयोगक अनिवार्य वस्तु यथा खाद्यान्न, नोन, मटिया तेल, चीनी, दूध, फल, हरियर तरकारी सभके ओहि वृद्धिसँ मुक्त राखल गेल । यात्रीक महसूलमे विधेय रूपे उच्च श्रेणीक किरायामे वृद्धि कयल गेल । प्रथम तथा वातानुकूलित श्रेणीपर भार पड़लैक । द्वितीय श्रेणीक यात्रीके सामान्यतः दूरगामी मेल अथवा एक्सप्रेसक किरायाक वृद्धिक भार सह' पड़लैक । वस्तुतः ललित बाबू समाजवादी विचारक छलाह आ सामान्य जनके यथासंभव भार देवाक पक्षमे नहि छलाह । ई १९७४-७५क रेलवे बजटमे १४० करोड़ रुपैयाक अतिरिक्त राजस्वक व्यवस्था कयलनि आ रेलवेक वित्तीय स्थितिके सुदृढ़ कयलनि ।

ललित बाबूक रेल-मंत्रित्व-कालक जे अविस्मरणीय घटना अछि से थिक मइ, १९७४क आम हड़ताल। ओना तँ अपन सम्पूर्ण कार्यवाधिमे हिनका रेलवे कर्मचारी द्वारा कार्यस्थगन आ हड़तालक सामना करय पड़लनि। परन्तु आम हड़ताल एक अभूतपूर्व घटना छल। ई हड़ताल यदि सफल भ' जाइत तँ रेलवेक चक्का जाम भेलाक संगहि विकासो कार्य ठप्प भ' जाइत, राष्ट्रक सभ प्रगति स्थगित भ' जाइत। परन्तु ललित बाबू पूर्ण मानवीयतासँ 'डटिक' एहि हड़तालक मोकाबला कयलनि। रेलगाड़ीक आवागमन जारी रहल, हड़तालो जारी रहल आ अन्ततोगत्वा हड़ताल समाप्त भेल। एहि अवधिमे ई कर्मचारीलोकनिके 'स्पष्ट रूपे' कहलथिन—

“रेलवे प्रशासन अपनी ओर से सदैव प्रयत्नशील रहेगा कि कर्मचारियों का असंतोष दूर हो और गम्भीर रूप होने से पूर्व ही समस्या हल हो जाये। इस समय जबकि राष्ट्र आर्थिक कठिनाइयों के बीच से गुजर रहा है, हम किसी प्रकार भी हड़ताल को सहन नहीं कर सकते क्योंकि इससे एक के बाद दूसरी प्रतिक्रिया होगी और आवश्यक सामग्री के परिवहन में भी बाधा पड़ेगी।”

रेल हड़तालक समाप्ति पर जे प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी हुनका पत्र लिखने छलथिन तकरा हम नीचाँ उद्धृत करैत छी :—

“पिछले कुछ दिनों से आप, रेल मंत्रालय और रेलवे बोर्ड सभी को बड़े ही कष्टप्रद वातावरण में काम करना पड़ा है। मैं मानती हूँ कि रेलवे ने स्थिति को बहुत ही अच्छे ढंग से और विवेकपूर्वक संभाला है। हड़ताल की समाप्ति से हमारी कठिनाइयों का अन्त नहीं हो जाता। वास्तव में यह तो कुछ अन्य परेशानियों की शुरुआत है। हमें रेल कर्मचारियों से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहिए, जिससे हम उनकी समस्याओं को बखूबी समझ सकें इन्हें दूर कर सकें। हमने उनके साथ जो भी वायदे किये हों, उन्हें बिना विलम्ब किये, अमल में लाया जाना चाहिए।

भारतीय रेलों—वस्तुतः समूचे देश—के लिए पिछले कुछ सप्ताह बहुत ही दबाव और तनाव भरे रहे। लेकिन शुक्र है कि आपके द्वारा स्थिति के कुशलतापूर्वक संचालन और रेल कर्मचारियों की कर्तव्यपरायणता के कारण हम इस परीक्षापूर्ण घड़ी में खरे उतरे और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को अंधकार में गिरने से बचाया जा सका।”

रेल भवनमें हड़तालक समाप्तिक बाद महाप्रबन्धक लोकमिक बैराने ललित बाबू स्वयं कहने छलथिन :—

“हड़ताल समाप्त हो गई है, लेकिन कई समस्याएँ हैं जिन्हें सुलझाना है। उन्हें तुरत और गम्भीरता से सुलझाना है। साथ ही यह याद रखिए कि कर्मचारियों की शिकायतें यदि ध्यानपूर्वक सुनी और समय पर दूर कर दी जाती हैं और उनके लिए कल्याण-व्यवस्थाएँ समयपर कर ली जाती हैं तो ऐसे आन्दोलनों की संभावना कम हो जाती है।”

छैक कतहु बदलाक भावना किंवा सामन्ती तेवर ? कर्मचारी आ अधिकारीमे कटुताक भावना नहि आबय तकरा लेल ई अधिकारीगणके बेर-बेर ‘क्षमा करू आ बिसरि जाउ’क सिद्धान्त अपनयबाक हेतु चेतावनी देलथिन। ई अछि एक ज्वलन्त उदाहरण मानवतावादी श्री ललित नारायण मिश्रके चिन्हबाक।

ललित बाबू अपन पिताक एहि बातके कखनहु नहि विसरैत छलाह जे ‘सपूत ओ जे रेल चलाबय’। हिनकर कार्यकालमे अनेक नव रेल लाइन बनल, अनेक छोटी आ मीटर लाइनक परिवर्तन बड़ी लाइनमे भेल, अनेक नव लाइन पिछड़ल अंचलमे बनल। १९७३-७४क रेल-बजट प्रस्तुत करैत काल ललित बाबू पिछड़ल इलाकासभमे नव लाइनक निर्माणक सम्बन्धमे नव दृष्टिकोण अपनयबाक संकेत कयलथिन। हिनक दृढ़ धारणा छलनि जे पिछड़ल इलाकामे रेल-यातायातसँ प्रारम्भहिसँ लाभक आशा नहि करबाक चाही। एहि इलाका सभमे आरम्भहिसँ ओतबा माल आ यात्री भेटब संभव नहि जाहिसँ रेल-यातायात लाभप्रद भ’ जाय। परन्तु रेल लाइनक निर्माणो-परान्त एहन क्षेत्रसभ विकसित भ’ जायत आ पश्चात् रेलवेके लाभ होमय लगतैक। एहि घोषित नीतिक अनुसार देश भरिमे हिनक कार्याविधिमे पिछड़ल इलाका सभमे नव रेल लाइन बनयबाक हेतु सर्वेक्षण कयल गेल। एहिमे मध्य प्रदेशक वस्तर जिलामे दिल्ली-रुजहुरा-जगदलपुर लाइन, उड़ीसामे जामपुरा-वाँसपानी आ महाराष्ट्र एवं कर्नाटकक मंगलौर-आष्टा लाइन, आन्ध्र प्रदेशमे नडी-कुडी-बीबी नगर लाइन, त्रिपुरामे धरमनगर-उनखौरा-सबरम लाइन, मणिपुर राज्यक सिलचर-जीरीवाम लाइन, हिमाचल प्रदेशक नांग-तलबाड़ा लाइन आ पश्चिम बंगालक मालदा-बेलुर घाट लाइन विशेष रूपे उल्लेखनीय अछि।

ललित बाबूक ध्यान विशेष रूपे छोटी आ मीटर लाइनके बड़ी लाइनमें परिवर्तित करबाक दिस गेलनि । ओ नीच जेका जनैत छलाह जे मीटर अथवा छोटी लाइनसँ यात्री वा मालके बड़ी लाइनपर उतारवा आ चढ़वामे बड़ कष्ट होइत छैक । हुनका इहो बुझल छलनि जे छोटी आ मीटर लाइनक मालगाड़ीक डिब्बासँ मालक चोरी सर्वाधिक होइत छैक । हुनक निश्चय छलनि जे छोटी आ मीटर लाइनके शनैः शनैः देश भरिसँ समाप्त क' ओकरा बड़ी लाइनमे परिवर्तित क' देल जाय आ इहो जे एहि कार्यमे पिछड़ल इलाकाके प्राथमिकता देल जाय । तदनुसार न्यू बंगाल गॉव—गुवाहाटी-बंगलुर-गुन्तकल-एर्नाकुलम-निवलों, अहमदाबाद-दिल्ली, वरीनी-कटिहार, गुंटूर-मचरला, समस्तीपुर-दरभंगा आ मुरादाबाद-रामनगर आदि खंडपर छोटी अथवा मीटर रेल लाइन सभके बड़ी रेल लाइनमे बदलवाक निश्चय कयल गेल । फलस्वरूप पूर्वोत्तर रेलवेपर ६०४ कि०मी० लम्बा बाराबंकी-समस्तीपुर मीटर लाइनके बड़ी लाइनमे बदलबाक कार्य सर्वाधिक महत्वक अछि । एकर उद्घाटन २१ अप्रैल, १९७३के प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कयल गेल । एहि लाइनक परिवर्तनपर लगभग ४६.३४ करोड़ रुपैया खर्चक अनुमान छल । उत्तर प्रदेशमे मुरादाबाद आ रामनगरक बीच ७८ किलोमीटर लम्बा मीटर रेल लाइनके बड़ी लाइनमे बदलबाक शुभारम्भ २० जनवरी, १९७४के स्वयं प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी कयलनि । एकर पूर्व ९ जनवरी, १९७४के उत्तर प्रदेशमे रामपुर काठ गोदामक बीच ९८ किलोमीटर लम्बा बड़ी लाइनक उद्घाटन प्रधानमंत्रिये द्वारा सम्पन्न भेल ।

कतेको बन्द लाइन सभके ललित बाबू चालू कयलनि । पश्चिम बंगालमे हावड़ा-आमता-चम्पाड़ांगा रेल लाइनके ओकर प्रबन्धक मार्टिन लाइट रेलवेज द्वारा १ जनवरी, १९७३ के बन्द क' देल गेल छल । एहि लाइनक बन्द भेलासँ जनताके बड़ कष्ट होइत छलैक । ललित बाबू एकरा तँ चालू करबे कयलनि संगहि एकरा बड़ी लाइनमे परिवर्तित करबाक सेहो आदेश देलथिन । १६ जुलाई, १९७४ के ७३.५३ कि० मी० लम्बा एहि लाइनक निर्माण कार्यक शुभारंभ प्रधान मंत्री कयलनि । १९०७मे स्थापित १७३ कि० मी० लम्बा शाहदरा-सहारनपुर छोटी लाइन सेहो घाटा लगबाक कारणे बन्द क' देल गेल छल । एकरहु बड़ी लाइनमे बदलबाक कार्य प्रारंभ क' देल गेल । एतवे नहि, रेल लाइन सभक पुनस्थापनाक काज सभपर सेहो विशेष रूपे ध्यान देल गेल । उत्तर प्रदेशक छितौनासँ बिहारक वगहा धरि

२१.४१ कि० मी० लम्बा मीटर लाइनका पुनर्स्थापना आ गंडक पुलक निर्माण-कार्यक शुभारंभ २२ अक्टूबर, १९७४ के भेल । ५ करोड़ रुपैयाक लागतमें बनयबाला काशी रेलवे स्टेशनक उद्घाटन १४ जनवरी, १९७४ के श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कयल गेल ।

रेलवेक विकास आ उन्नतिक हेतु श्री ललितनारायण मिश्रक मंत्रित्व-कालमें जतना काज कयल गेल तकर वर्णन संक्षेपमें एतय प्रस्तुत कयल जा रहल अछि । १४ अप्रैल, १९७३ के जानकी एक्सप्रेसक उद्घाटन क' सम्पूर्ण मिथिलांचल एवं नेपाल तराइमें द्रुतगामी रेल सेवाक सुविधा प्रदान कयल गेल । समस्तीपुर-बाराबंकी बड़ी लाइनक निर्माणसँ बिहारक जनता कलकत्ता दिल्ली आ बम्बई आदि नगर सभमें सुविधापूर्वक जा सकैत छथि । १८ जून, ७३ के सरायगढ़ तथा प्रतापगंजक बीच २३ कि० मी० नव रेल लाइनक निर्माण द्वारा सहरसा जिलाक सुदूर क्षेत्र सभमें सम्पर्क कयल गेल । १८ सितम्बर, ७३ के प्रतापगंज तथा फारबिसगंजक बीच ४९ कि० मी० लम्बा नव रेल लाइन सेवाक उद्घाटन क' सहरसा तथा पूर्णिया जिलाक सुदूरतम क्षेत्रक बीच सम्पर्क स्थापित कयल गेल । २ अक्टूबर ७३ के रेल सेवा आयोग, मुजफ्फरपुरक कार्यालयक उद्घाटनसँ बिहारी युवकलोकनिके रेल सेवामें सुविधापूर्वक प्रवेश करबाक अवसर प्राप्त भेलनि । ३१ अक्टूबर, ७३ के बड़ी लाइनपर चल'बाला जयन्ती जनता एक्सप्रेसक उद्घाटन क' दिल्लीसँ मिथिलाक सीधा सम्पर्क स्थापित भेल । एहि गाड़ी द्वारा मिथिलाक चित्रकलाक सेहो खूब विज्ञापन भेल । ९ जनवरी, १९७४ के उत्तर प्रदेशक रामपुर एवं हल्दवानीक बीच ९१.७३ कि० मी० लम्बा बड़ी लाइनक निर्माण-कार्यक उद्घाटन द्वारा सम्पूर्ण नैनीतालक तलहटी क्षेत्रक लेल पूर्ण विकासक मार्ग प्रशस्त कयल गेल । १० जनवरी, ७४ के मुरादाबाद तथा रामनगरक बीच ७८ कि० मी० लम्बा बड़ी लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल । २२ फरवरी, ७४ के सकरी आ हसनपुरक बीच ७५ किलो मीटर लम्बा नव रेल लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल । एहि रेल लाइनसँ एहि क्षेत्रक जनताके कृषि उत्पादन अधिक लाभकर भ' जयतैक आ संगहि प्रसिद्ध तीर्थस्थान कुशेश्वरनाथक मंदिरसँ सम्पर्क भ' जयतैक । १५ जून, १९७४ के झंझारपुर आ लोकहा बजारक बीच नव रेल लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल । १६ जून, ७४ के सरायगढ़ तथा प्रतापगढ़क बीच नवनिर्मित रेल लाइनपर रेल

सेवाक उद्घाटन कयल गेल । २ जनवरी, १९७५ केँ मधुबनीपुरमँ मुनफकपुर वाला बड़ी लाइनक उद्घाटन स्वयं ललित बानू कयलनि । जहिमे ओ अपन प्राणदान सेहो कयलनि । बिहारक सेवामे ई दिनकर अन्तिम कार्य छल । एहि अवसरपर भाषण करैत ओ जे बजनाहू से परिचयक अछि हुनकर रेलवे विकासक नीतिक ।

“रेल मंत्रालय ने पिछड़े हुए इलाकों में नयी रेलवे लाइनें बिछाने के लिए योजना आयोग से २२५ करोड़ रुपये की मांग की है । योजना आयोग ने इस काम के लिए केवल १०० करोड़ रुपये देने की स्वीकृति दी है । लेकिन इतनी कम राशि से हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएँगे । हमने कल्याणकारी राज्य की स्थापना की है । इसलिए हम केवल उसी योजना को लागू करना नहीं चाहते जिससे हमें आर्थिक लाभ हो । हमें तो यह भी देखना होगा कि किस प्रकार हम लोगों को अधिक से अधिक सुविधा दे सकें, किस प्रकार उद्योग-धंधों को गाँव-गाँव में फैला सकें और किस प्रकार हम पिछड़े हुए इलाकों तक समृद्धि और विकास की रोशनी पहुँचा सकें । इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर हमने देश के कई इलाकों में, विशेषकर पिछड़े हुए इलाकों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में नयी रेल लाइन बिछाने के कार्यक्रम की शुरुआत की है । चूँकि बिहार याता-यात की दृष्टि से हमारे देश में काफी पिछड़ा राज्य रहा है, इसलिए हम इस बात की भरसक कोशिश कर रहे हैं कि यहाँ अधिक से अधिक नयी रेलवे लाइनें बनाई जायँ और मौजूदा छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में बदला जाय । बिहार में इस समय जिन नयी रेलवे लाइनों को बनाने और छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में बदलने का काम चल रहा है उनपर लगभग साढ़े सैंतीस करोड़ रुपये खर्च होंगे ।”

ललित बाबूक दृढ़ धारणा छलनि जे बिहारक पिछड़ापनकेँ दूर करबाक हेतु एतय रेलवेक विकास आवश्यक अछि । हुनक इहो कहब छलनि जे कोइला आ खनिज पदार्थक प्राचुर्य रहितहुँ बिहार राज्य आर्थिक दृष्टिसँ उपर नहि उठि सकैत अछि । रेलवेक विस्तार द्वारा ओ बिहारक विकासक हेतु कटिबद्ध छलाह । एहि सभ बातकेँ ध्यानमे रखैत हुनकेँ शब्दमे हुनक योजनाक रूपरेखा देखू । ई ओ समस्तीपुर वाला अपन भाषणमे कहलथिन :—

“...कई और योजनाओं के सम्बन्ध में भी सर्वेक्षण किए जा रहे हैं ।

इन्में मुख्य हैं—समस्तीपुर-रक्सौल, राँची-लोहरदगा और बरोनी-

कटिहार के मीटर लाइन खंडों को बड़ी लाइन में बदलने के लिए किए जाने वाले सर्वेक्षण । इन तीनों लाइनों पर लगभग तेइस करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है । हमारा यह प्रयास है कि हम पूरे बिहार राज्य में रेलवे लाइनों का जाल बिछा दें और इसलिए हम बिहार के कई अन्य क्षेत्रों में मीटर और बड़ी लाइन बनाने जा रहे हैं । इनमें से कुछ पर काम हो रहा है और कुछ पर अगले वर्ष काम शुरू कर दिया जायगा । ये लाइनें हैं—मन्दार हिल से दुमका के रास्ते सैथिया तक नयी बड़ी लाइन, भीमगंज से बख्तियारपुर तक मीटर लाइन, मधेपुरा से सिंहेश्वर स्थान तक मीटर लाइन, डेहरी आन सोन से पिपराडीह तक बड़ी लाइन, राँची से कोरवा तक बड़ी लाइन, गया से राजगीर तक बड़ी लाइन, सोनपुर से पहलेजाघाट और दरौदा से महाराजगंज तक की मीटर लाइन को बड़ी लाइन में बदलना और निर्मली से सरायगढ़ के खंड को फिर से चालू करना । वाराणसी से समस्तीपुर के बीच छोटी लाइन को बड़ी लाइन में बदलने का काम भी शुरू हो चुका है, जिसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा यानी समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर के बीच की बड़ी लाइन आज तैयार हो गयी है । इस इलाके के यातायात के इतिहास में आज एक नया अध्याय शुरू हो रहा है ।”

एही भाषणक क्रममे ओ कहलथिन जे पटना लग गंगा नदीपर एक रेलवे पुल बनयवाक सेहो निश्चय कयल गेल अछि आ एकर सर्वेक्षण कार्य सेहो प्रारम्भ भ' गेल अछि । हुनक आशा छलनि जे पाँचम पंचवर्षीय योजना कालमे ई काज आरम्भ क' देल जायत । परन्तु आई तँ छठम पंचवर्षीय योजनाक सेहो दू वर्षसँ अधिक बीति रहल अछि मुदा गंगापर रेलपुलक कार्य प्रारम्भ नहि भेल । के कराओत ? जाहि संकल्प आ तीव्रतासँ ललित बाबू योजनासभक कार्यान्वयन करैत छलाह से आव प्रायः कल्पनातीत अछि । एकर अतिरिक्त विशेष रूपेँ बिहारमे किछु स्टेशन सवपर नव भवन बनयवाक किंवा वर्तमान भवनक विस्तारक कार्य सेहो ओ प्रारम्भ करओलनि । सुपौल, झंझारपुर, दरभंगा, मधुबनी, सिकरी, सहरसा प्रभृति स्टेशनसभ पर भवन निर्माण अथवा भवन विस्तारक काज हुनके प्रारम्भ कराओल छल । समस्तीपुरक भाषणमे ओ कहने छलथिन जे उपलब्ध साधनसँ बिहार राज्यक स्टेशन सभपर यात्री सम्बन्धी अधिक सुविधा प्रदान कयल जायत । एहि उद्देश्यसँ किछु स्टेशनपर विश्रामालय आ प्रतीक्षालयक विस्तारक कार्य सेहो प्रारम्भ कराओल गेल छल ।

नव रेलवे लाइनक निर्माण, पुरान लाइनक पुनस्थापना आ गेज परिवर्तनक अतिरिक्त यात्री-सुखसुविधासँ सम्बन्धित अनेकानेक कार्य ललित बाबूक मंत्रित्वकालमे भेल । सवारी गाड़ी सभसँ तृतीय श्रेणीक 'लॉप क' क' ओ जन-साधारणकेँ तृतीय श्रेणीक यात्री कहयवाक अभिशापसँ मुक्त कयलनि आ द्वितीय श्रेणीक यात्रीक सुख-सुविधामे वृद्धि कयलनि । गाड़ीमे भीड़-भड़कका कम करवाक हेतु गोहाटी मेल, अवध एक्सप्रेस, जानकी एक्सप्रेस आ जयन्ती जनता सन अधिक आरामदायक आ दूरगामी सवारी गाड़ी सभक व्यवस्था कयलनि । एहि गाड़ी सभक साज-सज्जा चित्ताकर्षक आ कलात्मक बनाओल गेल । सवारी गाड़ीक डिब्बा सभमे प्रकाशक उत्तम प्रबन्ध कराओल गेल, नीक शौचालय आ छत सभ अधिक गरम नहि हो सकर हेतु विशेष व्यवस्था कराओल गेल । प्लेटफार्म सभपर छतक, पानिक नलक आ टिकट घरक पर्याप्त व्यवस्था कराओल गेल । रेलमंत्री होयवाक तीन-चारि मासक अभ्यन्तर ललित बाबू दिल्ली आ कलकत्ताक बीच नित्य चलैवाला सुपर पार्सल एक्सप्रेस गाड़ी चलयवाक आदेश पारित कयलनि जाहिसँ व्यापारी वर्गकेँ खूब सुविधा भेलैक । ई गाड़ी सभ दिल्लीसँ कलकत्ता मात्र ३४ घंटामे पहुँचि जाइत अछि ।

ललित बाबू हिन्दीकेँ रेलवे प्रशासनमे राजभाषाक रूपमे पूर्ण गरिमाक संग प्रतिष्ठित कर' चाहैत छलाह । रेलवेमे राजभाषा हिन्दीक निदेशालय स्थापित भ' चुकल छल । ललित बाबू निदेशक श्री शिवसागर मिश्रसँ परामर्श क' रेल मंत्रालयमे रेलवे हिन्दी सलाहकार समितिक गठन कयलनि । एहिमे रेल मंत्रालयक प्रमुख अधिकारीक अतिरिक्त गैर-सरकारी सदस्यक रूपमे संसद-सदस्य, विधायक, पत्रकार आ साहित्यकारकेँ सेहो राखल गेल । स्वयं रेल मंत्री एहि समितिक अध्यक्ष आ निदेशक, राजभाषा एकर सचिव नियुक्त भेलाह । 'हिन्दी कार्यान्वयन समिति'क नामसँ सभ क्षेत्रीय रेलपर एहि प्रकारक समितिक गठन कयल गेल । क्षेत्रीय रेलपर हिन्दीक प्रगतिक समीक्षाक हेतु पाँच सदस्यवाला एक उच्च स्तरीय समितिक नियुक्ति कयल गेल । रेलवेसँ सम्बन्धित एक विशेष शब्दकोष निर्माणक हेतु 'रेलवे शब्दावली समिति'क सेहो गठन कयल गेल । हिन्दीभाषी क्षेत्रमे स्थित रेलवे कार्यालय आ रेलवे बोर्डक बीच हिन्दीमे सेहो पत्र-व्यवहार हो, एहि आशयक परिपत्र जारी कयल गेल । रेल सेवा आयोगक परीक्षाक माध्यम हिन्दी सेहो हो सकर प्रयास कयल गेल । ई हुनके प्रयासक फल अछि जे हिन्दीभाषी क्षेत्रमे

प्रायः सभ प्रमुख स्टेशनपर अधिकांश कार्य हिन्दीमे होइत अछि । एक बेर सलाहकार समितिक बैठकमे अध्यक्षता करैत ललित बाबू कहने छलथिन जे कर्मचारीक संख्या आ जनतासँ प्रत्यक्ष सम्पर्क कारणेँ हिन्दीक प्रचार-प्रसारमे रेल मंत्रालयक विशेष दायित्व अछि । आ तेँ जनहितकेँ ध्यानमे रखैत ओ रेलवे अधिकारीलोकनिसँ हिन्दी सिखबाक आ रेलवेक काजमे ओकर अधिकसेँ अधिक प्रयोग करबाक अनुरोध कयने छलथिन । एहि प्रकारेँ रेलवेमे ओ हिन्दीक गरिमाकेँ प्रतिष्ठित कयलनि । ओ उच्चकोटिक देशभक्त छलाह आ राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रति हुनका पूर्ण अनुराग छलनि । ओ कार्यालयमे किंवा अन्यत्र अपन आत्मीय जनसँ तेँ मातृभाषा मैथिलीमे वार्तालाप करैत छलाह, मुदा संविधानमे हुनक अटुट आस्था छलनि आ तेँ रेलवेमे हिन्दीकेँ ओ समुचित पदपर प्रतिष्ठित करबाक हेतु सतत प्रयत्नशील रहलाह ।

रेल सेवामे हरिजन एवं जनजाति सभक हितक रक्षाक हेतु ओ विशेष ध्यान देलनि आ हुनकालोकनिक नियुक्तिपर सतत निगरानी रखबाक हेतु रेलवे बोर्डमे एक वरीय पदाधिकारीक अधीन एक निगरानी कक्षक स्थापना कयलनि । आदिवासीलोकनिक सुविधाक हेतु रेलवे सविस कमीशन, कलकत्ताक एक शाखा आदिवासी-क्षेत्र राँचीमे स्थापित कयल गेल ।

समाजमे शिक्षित युवकक बेरोजगारी दूर करबाक हेतु आ समाजमे श्रमक प्रतिष्ठा स्थापित करबाक हेतु स्टेशनसभक बुक स्टाल आ 'दोकान सभक बन्दोवस्ती शिक्षित बेरोजगारकेँ देबाक घोषणा कयल गेल आ बहुत 'गोटाके' ई काज देल गेल ।

रेल सुरक्षा दलक कार्य सन्तोषजनक नहि छल । ललित बाबू एकरा मूलमे जा एहि समस्यापर विचार कयलनि । रेलवेमे चोरी आदिक कारणेँ क्षतिपूर्तिक दावाक संख्यामे प्रतिदिन वृद्धि भेल जाइत छल । जुलाई, १९७३ क' रेल सुरक्षाक वार्षिक समारोहक अवसरपर ओ एहि समस्यापर विशेष रूपेँ विचार कयलनि । एहिपर सम्यक रूपेण विचारार्थ ओ एक उच्चस्तरीय समितिक नियुक्ति कयलनि । रेलवे सुरक्षा दलक कर्मचारीकेँ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस सन वर्दी आ वेतन देबाक ओ अनुशंसा कयलथिन । हुनक विश्वास छलनि जे एहिसँ ओकरा लोकनिमे चुस्ती आ कार्यशीलता अबैतैक । मकान, बैरेक, भोजनालय तथा प्रोन्नति आदिक विशेष सुविधाक हेतु ओ आदेश निर्गत कयलनि । परन्तु संगहि ओ हुनकालोकनिकेँ इमानदारी आ अनुशासनक हेतु सेहो अभिप्रेरित कयलथिन ।

ललित बाबू जखन रेल मंत्रालयमे योगदान कयलनि तखन रेलवेमे प्रबन्धक आ कर्मचारीक सम्बन्ध मधुर नहि छल । ओ दयालु प्रकृतिक छलाह । धनिक कल्याणक भावनासँ ओत-प्रोत छलाह । कर्मचारी सभसँ वार्तालाप द्वारा ओ भरिनक एहि समस्याक समाधान करबाक प्रयत्न कयलनि । जतबा दूर घरि संभव छल हुनकालोकनिक मांग मानि लेल गेल । हुनकालोकनिक 'संवर्ग-समीक्षा'क मांग सेहो ओ मानि लेलथिन । मुदा जखन ओ देखलनि जे ई नभ कयलो उत्तर स्थितिमे सुधार नहि भ' राष्ट्रहितक विरोधे दिस बात जा रहल अछि तँ अपन रुखिमे कड़ापन अनलनि । प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी किवा राष्ट्र अथवा रेलक विरोधीकेँ ओ बर्दास्त नहि क' सकैत छलाह । हुनक कहब छलनि जे कार्यकुशल एवं प्रभावकारी प्रशासनक लेल सभसँ पहिल आवश्यकता अछि अनुशासनक । जखन हुनका ई बुझबामे आबि गेलनि जे रेल हड़तालक पाछाँ राष्ट्रविरोधी तत्व आबि गेल अछि तखन ओ १९७४क हड़तालकेँ समाप्त करवाक हेतु कठोर रुखि अपनबोलनि । अनुशासनक पालन कयनिहार कर्मचारीगणकेँ ओ विविध प्रकारक सुविधा द' प्रोत्साहन देबाक घोषणा कयलनि जाहिमे अग्रिम वेतन-वृद्धि, सेवा-निवृत्तिक स्थितिमे कार्य-कालमे एक वर्षक वृद्धि किवा परिवारक कोनो सदस्यकेँ नौकरी देब सम्मिलित छल । अनुशासनहीनता हुनका बर्दास्त नहि छलनि । ओ आम रेल हड़ताल केँ राष्ट्रविरोधी बूझैत छलाह आ राष्ट्रहितकेँ सर्वोपरि राखि ओ एकर समाधान कयने छलाह । मुदा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते'क सिद्धान्तसँ ओ कर्म-निष्ठ योगीक रूपमे एहि घटनाकेँ लेने छलाह । हुनका एहिमे कोनो प्रति-जोषक भावना नहि छलनि । राष्ट्र आ देशसेवा हुनका लेल सर्वोपरि छल आ एकरहि सर्वोपरि राखि ओ रेल हड़तालक समस्याक समाधान कयलनि । आइ.घरि सम्पूर्ण देशक लोक ललित बाबूकेँ रेलमंत्रीक रूपमे श्रद्धापूर्वक स्मरण करैत अछि । अपन कमे दिनुका कार्यकालमे रेलक विकासक हेतु जे ललित बाबू कयलनि से आन कोनो रेलमंत्री नहि क' सकलाह । बिहार आ देशक दुर्भाग्य अछि जे रेलक विकासहिक कार्यक्रमक कार्यान्वयनमे हुनक प्राण गेल ।

६. जन-नायक

१९६५ ई०क बाद देशक राजनीतिमे आ विशेष रूपेँ बिहारक राजनीतिमे ललित बाबूक रचनात्मक योगदान स्मरणीय रहत । एक निष्ठावान राजनीतिज्ञक रूपमे जीवन पर्यन्त देशक स्थिरता आ देशक नेतृत्वकेँ सुदृढ़ करबामे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि । भूतपूर्व रेल-मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठीक शब्दमे—‘श्री ललितनारायण मिश्रको भारत के इतिहासमें एक योद्धा राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, वफादार कार्यकर्ता और नैक सहृदय इंसान के रूपमे स्मरण किया जायगा ।’ ललित बाबू निपुण राजनीतिज्ञ आ प्रशासक तँ छलाहे परन्तु हुनकामे सबसँ पैघ विशेषता छलनि हुनक आत्मीयता । भेंट कर’वालाक प्रति हुनक व्यवहार एतेक स्नेहपूर्ण आ मधुर होइत छल जे भेंट कयनिहार हुनका लगसँ एक मधुर स्मृति लइए क’ बिदा होइत छल । हुनकामे एक विशिष्ट आकर्षण छल, इएह कारण छल जे जे केओ हुनका लग आयल, हुनकर भ’ गेल । परिवारक अर्थ हुनका लेल अपन पत्नी आ संतान तक सीमित नहि छल । ओ हुनकेलोकनिक सुख-सुविधापर ध्यान राखथि ई तँ कहिओ नहि भेल । परिवारक अर्थ हुनका दृष्टिमे छल ओ सब ननुष्य जे हुनक सम्पर्कमे आयल । ओ कोनो जातिक हो, कोनो धर्मक हो, सब हुनकर आत्मीय । एहि प्रसंगमे श्री शिवसागर मिश्र, निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालयक विचार देखू —

“नि सन्देह कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो तक की कसौटी पर कसी नहीं जा सकतीं । ललित बाबू के जीवन की भी कुछ बातें ऐसी ही हैं । कुछ लोग ललित बाबू को निपुण राजनीतिज्ञ मानते थे । मेरी दृष्टिमे ललित बाबू अत्यधिक भावुक और पारिवारिक व्यक्तित्व थे । उनकी दृष्टिमे उनका परिवार अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ और दामाद तक ही सीमित नहीं था । घर्मपत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ और दामादके अतिरिक्त ललित बाबू ने अपने भाइयों, भाइयों के सगे सम्बन्धियों और मित्रों तथा मित्रों के निकटतम व्यक्तियों को भी अपने परिवार का अंग माना । हित-चिन्ता करते समय वे पहले भाइयों और मित्रों को प्राथमिकता दिया करते थे; घर्मपत्नी,

पुत्र और पुत्रियों को बाद में । वास्तविकता तो यह है कि बलित बाबू ने अपने निजी परिवार की समृद्धि की बात कभी सोची ही नहीं ।”

ललित बाबू देवता तें नहि परन्तु मानवोचित मूल्यसँ सम्पन्न पूर्ण मानव छलाह । ओ एक आस्थावान पुरुष छलाह । जीवितावस्थामे ककरो गुण ओहि रूपें नहि बुझाइ छैक जेना मरणोपरान्त । ललित बाबू बहुत नम्र आ सरल प्रकृतिक लोक छलाह । ककरहुसँ अपनत्व जोड़वामे हुनका कनेको देरी नहि होइत छलनि । ओ मतत जागरूक आ सफल राजनीतिज्ञ होइतहु उदारताके कहियो नहि छोड़लनि । कार्य-संकुल रहितहु निर्लिप्त भावसँ जीवन व्यतीत करैत छलाह । आत्मीयता हुनक स्वभाव छल । एहिमे कोनो प्रकारक कृत्रिमता नहि छल । हुनका मात्र परिवारे लेल नहि बरन् सम्पूर्ण देश लेल आत्मीयता छलनि आ तेँ हिमालयसँ कन्या कुमारीके रेलसँ जोड़वा लेल ओ व्यग्र छलाह जाहिसँ समस्त भारतक परिवारमे पारिवारिक सम्बन्ध घनिष्ठतर भ’ सकय । हुनक राष्ट्र-प्रेम आ देश-भक्तिक पृष्ठभूमिमे इएह आत्मीयता व्यापक अर्थमे छल । एही आत्मीयताक कारणे हुनक कीर्तिगाथा हुनक नश्वर शरीरक संगहि समाप्त नहि भेल । श्री शंकर दयाल सिंह, भूतपूर्व संसद-सदस्य कहैत छथि—

“यह सही है कि आज ललित बाबू नहीं हैं लेकिन उनकी जीवन्तता, उनकी दरियादिली, उनका मृदु स्वभाव एवं हर किसी को मदद करने की उनकी अपनी प्रवृत्ति कोई भुला नहीं सकता । दोस्त हो या दुश्मन, प्रतिपक्ष का कोई सदस्य हो या सत्ताबद्ध दलका, उनसे हर किसी का सम्बन्ध रहता था और शाब्द ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब उनके ९ नम्बर अकबर रोड में कोई-न-कोई पार्टी या बड़ा समारोह नहीं होता हो । उनकी आंखों में वह शील था, जिसे ढूँढ़ पाना कठिन है ।”

‘हम स्वयं जखन कखनहुँ दिल्ली गेलहुँ, ललित बाबू भोजनक आग्रह अवश्य कयलनि आ कमसँ कम एक संध्या भोजन तँ हुनका ओहिठाम करहि पड़ल । ओ प्रेममूर्ति छलाह आ स्नेहक पुंज छलाह । ललित बाबूक मरणोपरान्त जे पहिल बेर दिल्ली गेलहुँ तँ हमरा लागल जेना आब हमरा दिल्लीमे केयो अछिए नहि । एहि प्रसंगमे श्रीमती अरुणा आसफ अलीक विचार देखू—

“My association with him was not of a formal nature. He always regarded me as his elder sister and used to confide in me as one does to a member of one's family. Some times I had to give him unpleasant advice but I was never misunderstood for telling him what I thought was wrong. He was a large hearted person and Lalit Narayan's real

strength was not his affluence as some persons were made to believe. He was loved for his accessibility and his genuine qualities as a friend.

वस्तुतः ललित बाबू अपन सम्पन्नताक कारणे नहि, प्रत्युत सुनमतामें सभके उपलब्ध होयबाक कारणे लोकप्रिय छलाह ।

ललित बाबू भारतीय संस्कृतिक कट्टर उपासक छलाह । भारतीय कला, संस्कृति आ साहित्यक श्रीवृद्धिक हेतु ओ सतत प्रयत्नशील रहलाह । मधुबनी चित्रकलाके पुनर्जीवित करबाक हुनकहि श्रेय अछि । आइ के नहि जनैत अछि जे एहिसँ लाखो रूपैयाक विदेशी मुद्रा हमरालोकनि अर्जित करैत छी आ मिथिलांचनक सैकड़ो स्त्रीगणक हेतु ई जीविको गार्जनक साधन अछि । ललित बाबूक स्वर्गीय भेलापर एहि सभ घग्मे चूल्हि नहि जरल छल । लोक शोक-मग्न छल आ बुझि पड़ैत छलैक जे आब जेना केयो ओकरालोकनिके देखनिहार नहि रहि गेलैक । देशमे आ विशेष रूपेँ मिथिलांचलक जन-मानसमे दोसर कोनो जन-नायक ललित बाबू सन प्रवेश नहि क' पओलनि । स्वदेश आ मिथिलाक कला-संस्कृतिक प्रति हुनका जे प्रेम छलनि से हुनके शब्दमे देखू । ई अंश समस्तीपुरमे देल गेल हुनक अंतिम भाषणसँ उद्धृत अछि —

“समस्तीपुर को मिथिला का प्रवेश द्वार कहा जाता है । मिथिला की संस्कृति और कला आज संसार में प्रसिद्धि पा रही है । यहाँ की कला और दस्तकारी आज विदेशी मुद्रा अर्जित कर रही है । अमर महाकाव्य रामायण की प्रेरणा-बिन्दु बनने का गौरव इसी मिथिला-भूमि को प्राप्त है । विद्यापति के भक्ति-भावना से भरे हुए गीतों की गूँज आज भी मिथिला की माटीमे सुगन्ध बिखेर रही है । दूसरी ओर वैशाली का गौरवपूर्ण ऐतिहासिक वैभव आज संसार के विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित करता है । आज से लगभग २६ सौ वर्ष पूर्व, जबकि संसार में सभ्यता और राजनैतिक परम्पराओं का अर्थ तक मालूम नहीं था, तब यहाँ लिच्छिवियों ने एक सुनियोजित गणतंत्र की पद्धति को अपनाकर सफलतापूर्वक अपने राज-काज को चलाया था । मुजफ्फरपुर से ३५ किलोमीटर दूर वैशाली की अभिषेक-पुष्करणी, राजा विशाल के खंडहर और तीर्थंकर महावीर का जन्मस्थान आज देश के कोने-कोने से यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है । अंगरेजी हुकूमत के दमनचक्र के नीचे पिसकर यहाँ की वह भूमि जर्जर हो चुकी थी जिस भूमि पर कभी सुख, समृद्धि और सभ्यता-संस्कृति के प्रतीक राजा जनक, सिंह सेनापति, तीर्थंकर महावीर, बुद्ध, बाल्मीकि, अष्टावक्र, विद्यापति, विधि व्यवस्थापक गौतम, मंडन मिश्र आदि विचरण किया करते थे । महिमाभयी

नारियों जैसे गार्गी, मैत्रेयी, भारती, कारमायनी तथा लज्जिमा के तेजमय व्यक्तित्व से प्रकाशित यहाँ की धरती ने स्वर्ग का रूप धारण कर लिया था। लेकिन सबसे बड़ा पाप है गुलामी, जिसने ऐसी पवित्र भूमि को भी धन-सम्पदा से हीन बना दिया।”

ललित बाबू भूमि-पुत्र छलाह। ओ अपन म टि-पानिके कहियो नहि बिसरलाह। मिथिलाक गरिमामय इतिहास एदति हुनक आँखिक सोझांमे रहैत छल। देश आ मिथिलांचलक पुनरुद्धारक लेल हुनका हृदयमे आगि जरैत रहैत छल। मिथिलांचलमे रेलक विकासक कार्यक्रमहिमे ओ अपन प्राणक आहुति देलनि। मिथिलामे यातायातक विकास, हस्तशिल्प आ चित्रकलाक विकास एवं शिक्षाक विकास सब दिस हुनक ध्यान छलनि। ई सभकेँ ज्ञात छैक जे ५ अगस्त, १९७२ केँ श्री केदारपाण्डेय जीक मुख्यमंत्रित्वकालमे ओ मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करओलनि। एक दिन हुनका हम ओहि विश्वविद्यालयक कुलपतिक हैसियतिसँ कहलियनि जे पूर्णिया-सहरसा क्षेत्रक लोककेँ विश्वविद्यालयक मुख्यालय धरि अयबामे बड कष्ट होइत छैक। ओ उत्तर देने छलाह जे यथा-शीघ्र हम एहन ट्रैनक व्यवस्था करबैत छी जे अहाँक विश्वविद्यालयक सम्पूर्ण क्षेत्रमे एकहि ट्रैनसँ यातायातक सुविधा भ’ जायत। वस्तुतः ई ओ करओलनि। जानकी एक्सप्रेस भ’ गेलाक उपरान्त लोकक ई असुविधा दूर भ’ गेलैक। हुनक चरित्रक ई विशेषता छलनि जे शीघ्रातिशीघ्र निर्णय ले’ कोनो योजनाकेँ कार्यान्वित करबा लेल कटिबद्ध भ’ जाइत छलाह। मिथिला विश्वविद्यालयक नामकरण हुनक मृत्युक उपरान्त श्री अब्दुल गफूरक मुख्यमंत्रित्वकालमे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय कयल गेल जकरा श्री कपूर्री ठाकुरक मुख्यमंत्रित्वकालकमे पुनः मिथिला विश्वविद्यालय क’ देल गेल। एहू समयमे हमही ओतय कुलपति छलहुँ आ एहि नाम परिवर्तनक कारणेँ हम कुलपति पदसँ इस्तीफा द’ देल। परन्तु पुनः वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्रक कार्यकालमे ई ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय भ’ गेल। कोनो राष्ट्रीय नेताक मृत्युक पश्चात् नाम हटयबाक ई संभवतः प्रथम उदाहरण अछि। एहिसँ एकरो परिचय भेटैत अछि जे किछु वर्गकेँ ललित बाबूक नामहुँसँ कतेक भय होइत छल। परन्तु ओ तँ जीवनहिसँ मुइलाक बादक कोन कथा, वीतराग छलाह। एहन काज सभक प्रभाव हुनकापर, हुनक जीवनकालहुँमे नहि पड़ैत छल। ललित बाबू एहनो लोक सभकेँ, जे संसदक भीतर आ बाहर हुनक विरोध करथि, सहायता

देलथिन आ एहि सम्बन्धमे ओ ककरहु किछु नहि कहलथिन । हुनक जमाय डा० गौरीशंकर राजहंस एहि सम्बन्धमे लिखैत छथि—“जब उनपर (ललित बाबू पर) विपक्ष से आक्रमण हो रहा था, तब एक बार मैंने दबी जवान से कहा था कि वे यह क्यों नहीं बताते कि विपक्ष के अमुक-अमुक आदमियों को उन्होंने कब-कब मदद की है, ताकि वे बेनकाब हो सकें । इस पर ललित बाबू ने हँसकर कहा था कि राजनीतिमें हर लोग एक दूसरे के विरुद्ध हो सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत जीवनमें विपत्तिग्रस्त मित्र की यदि कभी सहायता की जाय इसकी चर्चा जवानपर लाना अशोभनीय है ।” देखू ललित बाबूक महानता, मित्र-प्रेम आ परोपकारिता !

ओ भहान पितृमत्त छलाह । हम पहिनहि कहि आयल छी जे एक बेर हुनक पिता हुनका कहने छलथिन जे सपूत ओकरा कहल जाइत छैक जे देशक काज आबय, जे कोशीके बन्धवाबय आ रेल चलावय । ई तीनू बात ललित बाबू आजीवन स्मरण रखलनि । देशक काज करबाक उद्देश्ये ओ नौकारी-चाकरी किंवा आन कोनो वृत्ति नहि कयलनि । स्कूलमे जहिया पढ़ैत छलाह तहिया जे ओ देश-सेवाक व्रत लेलनि तकरा जीवनक अन्तिम दिन धरि नहि छोड़लनि । कोशी क्षेत्रक बच्चा-बच्चा जनैत अछि जे ललित बाबू यदि नहि होइतथि तँ कोशी नहि बान्हल जाइत । १९७२मे श्रीमती इन्दिरा गांधी हुनका पुछने छलथिन जे कोन मंत्रालय हुनका देल जाय । अनायास ओ कहने छलथिन — ‘रेल’ । पिताक वचन हुनका मोन छलनि—‘सपूत ओ जे रेल चलावय ।’ ललित बाबू भारतीय रेलक विकासमे कोन भूमिकाक निर्वाह कयने छथि तकर विवरण पहिनहि देल गेल अछि । सम्भवतः आधुनिक भारतमे कोनो रेल-मन्त्री दुइ वर्षक अवधिमे एतबा काज नहि कयने छथि । केहन साहसिकता आ शालीनतासँ रेल हड़ताल आदिक समस्याक समाधान कयलनि, इतिहास एकर साक्षी अछि आ एहू बातक साक्षी अछि जे ओ केहन उदात्त चरित्रक लोक छलाह । पिताक वचनक ओ अक्षरशः पालन क’ क’ देखा देलनि । हुनक पिताक मृत्यु पूर्वहिं भ’ चुकल छल । दुख एहि बातक जे ओ अपन कर्तव्यनिष्ठ पुत्रक सभटा बात नहि देखि सकलाह ।

ललित बाबूक एक विशिष्ट गुण ई छलनि जे एक बेर ओ जकरा अपना लेलनि ओकरा फेर छोड़’-नहि जनैत-छनाह । पं० जवाहरलाल नेहरू हुनक राजनीतिक गुरु छलथिन । जखन एक बेर ओ जवाहरलाल जीकेँ कोनो वृत्तिक प्रसंगमे विदेश जयबाक विषयमे पुछलथिन तँ ओ उत्तर देने छलथिन —

“देशमे रहकर काम करो ।” ललित बाबू एकटा मिरत मास्ति लेलनि । ताजीवन ओ नेहरू जीक प्रति भिन्ना एवं आस्था रखलनि । एकर रगतम जास मरु अरनहि लिखने छथि जे रामगढ़ कमिसेम ओ गुमास भएत जावकें कातम अन्वेषक हेतु एहि कारणे भीत देत छलथिन जे तेतक जी ई भावीत रहलाह । आबत नेहरू जी जीलाह, हुनका प्रति ललित बाबूक आस्था अगम भएत ।

हुनक मृत्युक बाद इन्दिरा जीक प्रति जे सम्बन्ध ओ एक बेर बनयोननि से अ जीवन क्षुण्ण रहल । १९६७मे चतुर्थ निर्वाचनक कात जयम अम सात राज्यक संग बिहारहुमे कांग्रेसक रिघाते गड़बड़ा गेलक त मानन बाबू चुन नहि बैगल रहलाह । उत्तर बिहारक कात कोमक ओ भागन कमलनि । कांग्रेस जनमे नव-जीवनक संचार कमलनि । १९९९क निर्वाचनमे ललित बाबू जाहि संगठन शक्ति आ चातुर्यक परिचय देलनि ओ कातसक मर्गवाकें प्रतिष्ठित कमलनि से कठिन पड़ीमे सुख-सुखसँ कार्य करवाक हुनका पारम्भ तैत अछि । १९६९मे बगलोर कांग्रेसक बैठकका पश्चात् ओ भागतक प्रमुख राजनीतिज्ञक रूपमे सुप्रतिष्ठित भेलाह । हुनक एहि कालक मार्गकालामे एक बात आओर अछि । ओ इन्दिरा गांधीक पदांतर भ’ चुकल छलाह ओ नाब ओ हुनकर पदके सबल बनायब अपन करार्य्य बुझैत छलाह । ओ छपहु कारण छल जे एही समयसँ प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी निकटसँ निकट राजनीतिक समस्यापर विमर्श करबाक क्रममे सभसँ अधिक महत्व ललित बाबूकेँ दैत छलथिन । ओ हुनकर वफादारी आ संगठन-क्षमताकेँ बुझैत छलीह आ हुनका पर निर्भर रहैत छलीह । अन्तिम दिन धरि ओ श्रीमती गांधीक संग माह छोड़लनि । श्रीमती गांधीकेँ एक निर्भीक सहयोगी भेटलथिन । ओ हिनका अद्भुत संगठन-शक्ति एवं राजनीतिक कौशलसँ अत्यन्त प्रभावित छलीह आ हिनकर आस्थाक कारणे ओ हिनकापर कतिपय कार्य जेल अवलम्बित छलीह । ललित बाबू जीवन पर्यन्त हुनक संग देलथिन ।

ललित बाबूक व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे श्रीमती गांधीक विचार हुनके शब्दमे देबू :—

“श्री ललित नारायण मिश्र का सारा जीवन जनता की सेवामे समर्पित था । उन्होंने अपने छात्र जीवन से ही देश के प्रति निष्ठा दिखाई । उनमें अपूर्व साहस था । उन्हें व्यक्तिगत हितों के बजाय देश के व्यापक हितों की ज्यादा चिन्ता थी । उन्होंने जिस पद पर काम किया लगन और मेहनत से

किया और यही कारण है कि वे एक लोकप्रिय राजनीतिज्ञ हुए। उनमें मनुष्यता और भारतीयता कूट कूट कर भरी थी। उन्होंने अपनी सहृदयता के कारण बहुत लोगों का दिल जीता। उनका विश्वास था कि एकता और अनुशासन से ही देश आगे बढ़ सकता है। वे राष्ट्रहित के लिए मजबूत कदम उठाने में कभी नहीं हिचके।”

ललित बाबूक व्यक्तित्वक जे मूल्यांकन श्रीमती गांधी कयने छथि से शत-प्रतिशत ठीक अछि। ललित बाबूक देशभक्ति आ प्रतिभाशाली व्यक्तित्वक विषयमे फिल्म जगतक ख्यातनामा कलाकार श्री सुनील दत्त कहैत छथि—

“एक कट्टर कांग्रेसी नेता होने के नाते उन्होंने बिहार प्रान्त को कई बार संभाला और बिहार के नेताओं का पथ प्रदर्शन किया। वह कभी भी नहीं घबड़ाते थे। मौत भी उनके लिए कुछ नहीं थी। उनके अद्भुत साहस और कर्मठता का परिचय तब मिला, जब उनके रेल मंत्रित्व कालमें, रेलवे में हड़ताल हुई। यह नाजुक परिस्थिति मिश्रजी के लिए बहुत कड़ी परीक्षा थी जिसमें सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें बहुत बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। शाम का समय होता तो रेल भवन स्थित कार्यालय से निकलकर, घर आते, फिर वहाँ से अशोक होटल के सामने नेहरू उद्यान में प्रतिदिन टहलते और वहाँ खिले हुए फूलों को बारम्बार देखते और एक भोले बच्चे की तरह मचल उठते थे।”

ललित बाबूक स्नेह आ चुम्बकीय व्यक्तित्व कोना दोसराके आकृष्ट क' लैत छल ताहि प्रसंग सुनील दत्तहिक अनुभव सुनू—

“वह मुझे कितना मानते थे और स्नेह देते थे, इसे बताने के लिए कई बातें हैं। जब मिश्र जी ने अपने लड़के की शादी में आमन्त्रित किया तो मैं सब काम से समय निकाल पटना पहुँचा। वहाँ पाया कि पटना के अतिरिक्त बाहर के मुख्य अतिथियों में, एक जनरल मानिक शा थे और दूसरा मैं। वैसे, उनके और भी आत्मीय थे लेकिन उन्होंने मुझे विशेष रूप से स्वागत पूर्वक बुलाया। मेरे हृदय में उनके प्रति रहा प्रेम और भी बढ़ गया। मुझे लगता था कि मैं, अपने ही घर में किसी शादी के अवसर पर आया हूँ और मिश्र जी मंत्री नहीं बल्कि मेरे पिता की तरह हैं। उस विवाहोत्सव का मैंने खूब आनन्द लूटा, जो मेरी स्मृतियों में आज भी एक दिलचस्प कहानी बनकर रह गयी है।

“ललित बाबू भी गुप्ते वैसे ही बहुत स्नेह करते । बचपन में, मैंने अपना पिता खो दिया था और पितृस्नेह से वंचित रह गया था । लेकिन उम पितृ स्नेह की अनुभूति मिश्र जी से मिला । मैं इसे, अपना सौभाग्य समझता हूँ ।”

सुनील दत्त सन विख्यात प्रौढ़ विचारक व्यक्तिक ई धारणा अछि ललित बाबूक प्रति । ओ निरभिमान छलाह । हुनक व्यवहार वच्चा सन निष्कल आ सरल होइत छल ।

ललित बाबूक सम्पर्कमे आब'बला प्रत्येक व्यक्तिकेँ एक जे आ सभसँ पैघ हित-अपेक्षित हुनके छथिन—ओ हुनक छथिन आ सते, ओ समान रूपेँ सभक छलथिन । निकट स्वजनक सुख-दुख तँ ओ देखे करथिन, नहि जानि समस्त भारत आ बाहरोक कतेक अनचिन्हारकेँ ओ अपन बनबोलनि । हुनका-लोकनिक सुख-दुखमे भागी भेलथिन—ई छल हुनक व्यक्तित्वक महिमा । ओ राजनीतिक जीवनमे निरन्तर सीढ़ी चढ़ैत गेलाह, किन्तु व्यक्तितगत आ सार्वजनिक जीवनमे हुनक व्यवहारमे कहियो परिवर्तन नहि भेल, प्रभुताक मद हुनकामे कहियो नहि आयल, सभक लेल हुनक प्रेम आ स्नेह अपरिमित आ अपरिवर्तनीय छल । मानवताक ओ पुजारी छलाह । पदसँ ओ पैघ नहि भेलाह, पद हुनकासँ मर्यादित भेल ।

ललित बाबूक सहृदयता, उदारता आ दानशीलताक सम्बन्धमे रेलवे सेवा आयोगक अध्यक्ष श्री केदारनाथ ठाकुर लिखैत छथि—

“ललित बाबू इतने सहृदय, उदार और दानशील प्रकृति के महापुरुष थे कि शब्दों में उनकी इस प्रवृत्ति को पूर्णरूपेण बांधना सर्वथा असंभव ही महसूस होता है । एक बार जब कांग्रेस अध्यक्ष श्री प्रजापति मिश्र गम्भीर रूपसे अस्वस्थ हो गये थे तब ललित बाबू चुपके से उनके यहाँ जाकर चिकित्सा एवं दवा-दारु के लिए यथेष्ट आर्थिक सहायता दे आये । उस समय ललित बाबू सिर्फ संसद-सदस्य थे । ललित बाबू अपने साथियों और मित्रों को दुखी देखकर उनकी पूरी सहायता के लिए व्यग्र हो जाते थे और हर तरह से सहायता करते थे । जिस किसी की भी वे सहायता करते थे, बिल्कुल गुप्त रूप से । यदि उन्हें पता चल जाता कि कोई बड़ा समर्थ व्यक्ति कष्टमें पड़ गया है तो वे चुपचाप उसकी सहायता कर आते थे ।”

ललित बाबू दानवीर छलाह । जे केओ जे किछु हुनकासँ मंगलक, पओलक । हुनका लग छोट-पैघ याचकक भीड़ लागल रहैत छल । विवाह,

उपनयन आ ध्यादिमे गति मगि'बालाक कोनो कमी नहि । ललित बाबू ककरहु फिरय नहि देत छलथिन । हुनकर निवास स्थानपर, पांच आ दिल्ली हो किवा बलुआ, सैकड़ो याचक पहुँचि जाइत छल । परन्तु ललित बाबूक एक विशेषता ई छलनि जे ओ दोसर ककरहु नहि वृक्ष' देत छलथिन । एहि सम्बन्धमे 'हिन्दुस्तान टाइम्स'क प्रकाशक डा० गीरीशंकर राजहंस लिखैत छथि—

“ललित बाबू के पिता पं० रविनन्दन मिश्र का आकस्मिक देहान्त १९५० ई० में हो गया था । पाँच भाइयों में ललित बाबू सबसे बड़े थे और श्री जगन्नाथ मिश्र (बिहार के तत्तमान मुख्यमंत्री) सबसे छोटे, जो उन दिनों स्कूल में पढ़ रहे थे । भाइयों ने घर का पूर्ण दायित्व ललित बाबू पर छोड़ दिया और साथ ही यह भी कहा कि पिता जी की सम्पत्ति को वे जिस तरह भी चाहें, देशपर खर्च कर सकते हैं । ललित बाबू के पिता जी प्रायः ४,००० एकड़ जमीन छोड़ गये थे, जिसकी कीमत अब १०,००० रु० प्रति एकड़ है । बिहार में और बिहार के बाहर भी ललित बाबू को जाननेवाले लोग यह भी जानते हैं कि इसी जमीन को बेच-बेचकर ललित बाबू कांग्रेस के लिए दोनों हाथों रुपया जुटाते थे । उनके भाइयों की इसमें पूर्ण सहमति थी । आज भी दिल्ली में इस बात के साक्षी लोग मौजूद हैं कि ललित बाबू के छोटे भाई श्री श्याम नारायण मिश्र कभी धान बेचकर, कभी जूट बेचकर और कभी जमीन बेचकर नोटों के बंडल ललित बाबू को देते और ललित बाबू कर्ण की तरह उसे जरूरतमन्द साथियों को देते ।”

आश्चर्यक बात तँ ई जे विरोधी दलक नेता सभ सेहो हुनका ओहि ठामसँ कहियो निमुख भ' नहि फिरलाह । कतेक विद्यार्थी, कतेक प्रडित आ गुणीजन आ अन्यान्यो ललित बाबूसँ उपकृत भेलाह, उकर सूची के बना सकत ? हुनका ओहि ठाम साधु-सन्त लोकनिक आयब-जायब लगले रहैत छलनि आ ओ सभक समुचित आदर-सत्कार करैत छलथिन । हुनक निवास स्थानपर पूजा-पाठ आ धार्मिक अनुष्ठान होइते रहैत छल । ई गुण हुनक अनुज डा० जगन्नाथ मिश्र (मुख्य मन्त्री)मे सेहो अछि । देवाइ-धर्माइमे हिनकहु बड़ निष्ठा छनि । बर एना कहबाक चाही जे ई गुण हुनकर पारिवारिक परम्परामे अवैत अछि ।

ललित बाबूकेँ सनातन धर्ममे पूर्ण निष्ठा छलनि । ईश्वरक सत्तामे हुनक अखंड आस्था छल । धर्मक आन्तरिक नहि, धर्मक बाह्य विधि-विधानहुँमे हुनका आस्था छलनि । जतय कतहुँ आ जायि, ओहि परिसरक मन्दिरमे

जायब हुनक कार्यक्रमो सम्मिलित रहैत छल । ज्योतिषी-सांख्यिक सभपर हुनका विश्वास छलनि । जे कोनो साधु-सन्त हुनकासँ याचना करैत छलथिन, हुनक ओ सहायता करैत छलथिन । मन्दिर सभमे जखन जाथि तँ घंटाक घंटा पूजा करैत रहैत छलाह । नेपालमे फौक टा मन्दिर अछि जतय ओ पूजाक निमित्त समय-समयपर पहुँचबै टा करथि । एक बेर ओ बाबा बैद्यनाथक मन्दिरसँ पूजा क' क' बहरयलाह तँ लोक सभ कहलकनि जे अधिक काल धरि मन्दिरमे पूजा करब बड़ कष्टप्रद होइत छैक । ललित बाबू श्रीघरे मन्दिरमे पंखा लगबा देलथिन । दरभंगा जखन कखनहुँ ओ गेलाह तँ कंकालीक मन्दिरमे दर्शनार्थ अवश्य जाथि । मन्दिरमे पूजा करब, चरणामृत लेब, प्रसाद लेब आ किछु चढ़ीआ चढ़ायब हुनक संस्कार भ' गेल छल । ई संस्कार हुनका प्रारंभहिसँ छलनि आ राजनीतिक जीवनक व्यस्तता रहितहुँ ओ एकरा कहियो नहि छोड़लनि अपितु, हुनक ई आस्था दिनानुदिन बढ़ले गेल ।

ललित बाबूकेँ साहित्य आ कलामे अभिरुचि छलनि । मधुबनी चित्र-कलाक लेल ओ जे कयलनि से बिहारक बच्चा-बच्चा जनैत अछि । कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार, संगीतज्ञ जे केओ ललित बाबू लग पहुँचलाह हुनका ओ प्रोत्साहित करैत छलथिन । दरभंगामे हमरा बहुत गोटा कहलनि जे ललित बाबूक साहाय्यसँ ओ अपन ग्रन्थक प्रकाशन करओलनि । परन्तु ललित बाबू कहियो ककरहु ई नहि कहलथिन जे अमुक कलाकार अथवा लेखककेँ ओ की सहायता कयलथिन । मैथिल संस्कृतिक ओ महान अनुरागी छलाह । चेतना समिति, पटनाक लेल हुनका बहुत अनुराग छल । ओ चेतना समितिक लेल बहुत किछु कर' चाहैत छलाह । हम १९७० ई०मे मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशनमे हुनका पूर्णिया अयबाक हेतु आमन्त्रित कयने छलहुँ । तखन ओ केन्द्र सरकारमे मन्त्री छलाह । बहुत उत्साहपूर्वक ओ परिषद्क कार्यक्रममे भाग लेलनि । स्व० डा० लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' सन हिन्दीक विद्वान सेहो ओहि मंचपर उपस्थित छलाह । भाषा आ साहित्यपर ललित बाबूक विचार सुनि 'सुधांशु' जी गद्गद छलाह । ललित बाबूक एक लेख 'गेहूँ ओर गुलाब — स्मृतियाँ जवाहर लाल की' 'कादम्बिनी'क मई, ७३क अंकमे प्रकाशित भेल छल । हुनक दोसर लेख 'महात्मा गाँधी ओर उनके बाद — अब इन्दिरा गाँधी' जे केओ पढ़थि हुनका इएह बुझि पड़तनि जे ललित बाबू यदि साहित्यिक क्षेत्रमे जइतथि तँ ओहूमे अपन विशिष्ट स्थान बना लिअथि । किन्तु अपन साहित्यिकताकेँ ओ दोसर रूप देलथिन । साहित्यिक आ कलाकारक ओ संरक्षक

छलाह । एहि सम्बन्धमे 'कादम्बिनी'क सम्पादक श्री राजेन्द्र अवस्थीक विचार देखू—

“कम लोग जानते हैं, ललित बाबू लेखक भी रहे हैं और यदि राजनीति से समय निकालकर कुछ लिखते तो शायद उनका लेखन अपने क्षेत्रमे विशिष्ट स्थान रखता । एक बार मैंने आग्रह किया था, 'कादम्बिनी' के लिए वे कुछ लिखें । मेरे साथ मेरे मित्र डा० गोरीशंकर राजहंस भी थे । ललित बाबू थोड़ी देर सोचते रहे - फिर बोले, “क्या लिखा जा सकता है ?” यह कहते हुए वास्तवमे वे कुछ तलाश रहे थे । फिर बोले, “तो अभी लिख लीजिए ।” तुरन्त उन्होंने जो लेख लिखवाया वह उदाहरण है उनके लेखन-कौशल का । वह लेख बाद में 'कादम्बिनी'मे प्रकाशित हुआ था । इस पर अनेक प्रतिक्रियाएँ आयी थीं और पाठकों ने जवाहर लालजी के सम्बन्धमे उनके विचारों तथा धारणाओं का स्वागत किया था ।”

ललित बाबू स्थितप्रज्ञ छलाह । ओ कहियो घबड़ाइत नहि छलाह । केहनो विषम परिस्थितिमे ओ अपन-संतुलन बनओने रहैत छलाह । जीवनक अंतिम दू-तीन वर्षमे तँ हुनकर विरोधीलोकनि हुनका खूब परेशान कयलनि । कहियो लाइसेन्स काण्ड, कहियो रेल हड़ताल आ कहियो पार्लियामेन्टमे हंगामा । दिल्लीसे बिहार धरि कतेको कुचक हुनका विरोधमे चलैल छल । हुनका विरुद्ध अनर्गल आक्षेप, निराधार भ्रष्टाचारक आरोप आ हुनक चरित्र-हननक प्रयासक एक नहि अनेक दृष्टान्त अछि । किछु लोकके हुनका प्रति एतेक द्वेष आ डाह छल जे डेग-डेगपर ओ ललित बाबूके नीचा देखयबाक प्रयासमे रत छलाह । एहनो विषम परिस्थितिमे ओ साहसपूर्वक अपन राजनीतिक ओ समाज-सेवाक कार्यमे संलग्न रहैत छलाह । प्रतिदिन हुनकर विरोधमे पडयन्त्रक रचना होइत छल परंच ओ अपन उदारता, साहसिकता, निर्भीकता आ कर्मठताके मृत्युपर्यन्त नहि छोड़लनि । 'हिन्दुस्तान टाइम्स'क प्रकाशक डा० गोरीशंकर राजहंस लिखैत छथि—

“कभी-कभी मैं उनसे कौतूहलवश पूछ लेता कि इतने सारे तनावों को आप कैसे बर्दाश्त कर लेते हैं । इस पर वह जवाब देते कि जिस ईश्वर ने मुझे देश व समाज के लिए काम करने को भेजा है, वही ईश्वर मुझे सब कुछ सहने की शक्ति देता है ।”

समस्तीपुर बम विस्फोटमे घायल भेलाक बाद ललित बाबू ने प्रथम प्रश्न पूछने छलथिन मे छल हा० जगन्नाथ मिश्रक निषगमे । जीवन-युग्मक बीच संवाद होइत छल, परन्तु ओह समयमे अग्रजक जे कर्तव्य अनुजक प्रति होइत छैक से हुनका नहि बिगरेलनि । 'दशा-दिशा'क सम्पादक श्री शिवशंकर मिश्र एहि प्रसंगमे लिखैत छथि—“बम विस्फोटमे बुरी तरह घायल हो जाने के बाद ललित बाबू ने जो पहला सवाल पूछा, वह था—“जगन्नाथ (हा० जगन्नाथ मिश्र) तो ठीक है न ?” ई एहि बातक छोटक अछि जे केहनो विषय परिस्थितिमे ओ विचलित नहि होइत छलाह आ कर्तव्य-बोध हुनक संग नहि छोड़ैत छलनि ।

ललित बाबूक लक्ष्यक प्रति निष्ठा आ तकर प्राप्तिक हेतु हुनकर प्रयास, सतर्कता आ दृढ़ता सराहनीय छल । ओ एक कर्मठ व्यक्ति छलाह, अध्यवसायी छलाह आ हुनकामे अनवरत परिश्रम करबाक क्षमता छलनि । एक बेर जवाहर लाल नेहरू हुनका संकेत कयलथिन जे अहाँ नोकरी करबाक हेतु विदेश नहि जा देशमे रहि देश-सेवाक काज करू । ओहि दिनसँ जेना ई गुरुवाक्ष्य हो, एकरा मानि ललित बाबू देशक सेवाक काजमे जुटि गेलाह आ अन्तिम दिन धरि ओ ओहिमे लागल रहलाह । जवाहर लाल जीक स्वर्गीय भेला उत्तर श्रीमती इन्दिरा गांधीक प्रति ओ आजीवन वफादार बनल रहलाह । हुनक कार्यक्रम व्यस्त रहैत छल । एहि व्यस्तताक कारणे रातिमे ओ बेरीसँ सुतैत छलाह । राजनीति आ राजकाजमे ओ तेना डूबल रहैत छलाह जे पारिवारिक जीवनक आनन्द छठयबाक हेतु एको क्षण हुनका दुर्लभ भ' जाइत छलनि । ई श्रेय तँ हुनक त्यागमयी पत्नि एके छनि जे परिवार-पालनक कार्यसँ ललित बाबूके ओ मुक्त कयने रहथिन । हमरा ललित बाबू स्वयं कहने छथि जे जकरासँ उल्लासपूर्वक गप्प कर' चाहैत छी तकरासँ से नहि भ' पवैत अछि । एतेक धरि जे अपन धियो-पुतासँ कैक दिन धरि भेंट नहि भ' पवैत अछि । १९७० मे हम 'ओल इंडिया इकनोमिक कन्फरेन्स'मे भाग लेबाक हेतु दिल्ली गेल छलहुँ । दिल्ली पहुँचवाक बाद तेसर दिन हुनकासँ टेलिफोनपर सम्पर्क भ' सकल । ओ हमरा पुछलनि जे हम कहिया दिल्ली अयलहुँ ? जखन हम हुनका कहलिअनि जे हम परमुए दिल्ली अयलहुँ तँ ओ बड़ नाराज भेलाह । हम हुनका बुझओलिअनि जे चेष्टा कयलहुँ पर हम सम्पर्क नहि स्थापित क' सकलहुँ तँ खिन्न मोने ओ हमरा क्षमा कयलनि । ओ ई सोचिओ नहि सकैत छलाह जे एतेक विलम्बसँ हम हुनकासँ सम्पर्क स्थापित करब । ओहि राति ओ हमरा

रातुक भोजनपर आमन्त्रित कयलनि । हमरा संगे डा० नर्मदेश्वर झा (कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय) सेहो छलाह । ३१ दिसम्बरक दिन छल । रातिमे ८ बजे भोजनक हेतु हमरालोकनि हुनक डेरा, ९, अकबर रोड, पहुँचलहुँ । सवारीक व्यवस्था ओएह क' देने छलाह । भोजन कयलाक उपरान्त १२ बजे राति तक व्यक्तिगत गप-शप चलैत रहल । ओ हमरा सन बाल-संगीकेँ पाबि आनन्द-विमोर छलाह । १२ बजेक बाद हुनका नव वर्षक बघाइ देबाक हेतु लोक पहुँचय लागल । हमरा स्मरण अछि श्री कुलदीप नैयर, हुनक पत्नी, श्री बंशी लाल आदि आयल छलाह । हुनकालोकनिसँ ओ परिचय करओलनि । एकक बाद एक लोक अबिते रहल । लगभग एक बजे रातिमे हमरालोकनि हुनकासँ बिदा लेलहुँ । ओ कहलनि जे आइ राति भरि जगले रह्य पड़त । दिल्लीमे ओ जखन रहैत छलाह, हुनकर ९, अकबर रोडवाला डेरापर मेला लागल रहैत छल । सबसँ भेंट करयिन, जकरा जे काज होइक से बुझयिन आ क' देखिन । बहुतो गोटा तँ हुनका लग बेटीक विवाह, बेटाक उपनयन आ नोकरी-चाकरीक हेतु साहाय्यार्थ जाइत छलाह । ललित बाबू हुनका लोकनिक भोजन-आवासक व्यवस्था तँ करिते छलाह संगहि बटखर्चाक सेहो प्रबन्ध करयि । साहाय्य देब तँ हुनक स्वभावमे छल । कोना एतबा गोटासँ ओ प्रतिदिन भेंट करयि, कोना फेर हुनकालोकनिक समस्याक समाधानो करयि से हुनकहिसँ बनि पड़ैत छल । ओ अदभुत व्यक्ति छलाह, कर्मयोगी छलाह । अनासक्त भावेँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्'क नीतिकेँ अपनवैत अपन कर्मपर आरुढ़ रहैत छलाह ।

विद्यार्थि जीवनमे ओ राजनीतिमे पदार्पण कयलनि आ तहियेसँ अनवरत बढैत रहलाह । स्वतन्त्रता-संग्राममे वीर सेनानीक रूपमे फाज कयलनि । देशकेँ विदेशी सत्तासँ मुक्त करओलनि आ तत्पश्चात् नवीन भारतक निर्माणमे लागि गेलाह । हम पूर्वहिँ कहि आयल छी जे कोना ओ कोशी बान्ह बन्हओलनि, कोशी नहरि बनवओलनि आ कोना संसदमे प्रवेश क' विभिन्न मंत्रालयमे दक्षतापूर्वक कार्य क' देशक नव-निर्माणक कार्यकेँ आगाँ बढ़ओलनि । विद्यार्थी जीवनसँ मृत्यु पर्यन्त ओ कहियो चैन नहि कयलनि । सतत कार्यरत रहलाह आ अन्तिमो कालमे निर्माण कार्य करिते प्राणत्याग कयलनि । एहन के कर्मठताक जीवनयापन कयने अछि ? देशक भावी पीढ़ीक लेल ओ मार्ग दर्शकक रूपमे द्रंरणाक स्रोत रहलाह । संसद-सदस्य श्री राजदेव सिंह हुनका विषयमे कहने छथि—

“बिहारमें बड़े-बड़े नेता हो गए हैं । भारतरत्न राजेन्द्र बाबू से बड़ा नेता और कौन होगा ? वह बिहार की ही देन थे । किन्तु राजेन्द्र बाबू बिहार को वह नहीं दे पाये जो ललित बाबू ने दिया—तरह-तरह के उद्योग-धन्धे, कोने-कोने में रेल लाइनों और कोशी परियोजना आदि । ललित बाबू ने बिहार को क्या नहीं दिया ? और बिहार के लिए ही एक नयी रेल लाइन का उद्घाटन करते समय उन्होंने प्राणों की आहुति भी दे दी । यह आहुति, यह बलिदान देना हर किसी के लिए सम्भव नहीं होता हर किसी के भाग्य में नहीं होता । ललित बाबूके भाग्य और मानव के रूप में उनकी ऊँचाई का मापदण्ड इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ?

ललित बाबू वस्तुतः जन-नायक छलाह । ओ सवंतोमुखी प्रतिभा ल' क' एहि घराघामपर अवतीर्ण भेल छलाह आ ओहि प्रतिभाक उपयोग ओ कर्मठता-पूर्वक राष्ट्रक आ देशक सेवाक हेतु कयलनि ।

७. महाप्रयाण

२ जनवरी, १९७५ क' ललित बाबूके समस्तीपुर स्टेशनपर छोटी लाइनके बड़ी लाइनमे परिवर्तित करबाक उद्घाटन समारोहक अवसरपर संध्याकाल पहुँचबाक छलनि । अपराह्नमे ओ हवाई जहाजसँ दरभंगा उतरलाह । हम ओहि समयमे दरभंगेमे मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक रूपमे छलहुँ । हमहुँ हुनक स्वागतार्थ हवाई अड्डा गेल छलहुँ । दिन झोंपल छल । सूर्य भगवानक दर्शन नहि होइत छल । किछु कुहेस सेहो छल । मौसम अनुकूल नहि रहबाक कारणे प्लेनके अयबामे बहुत विलम्ब भेलैक । तथापि हजारो लोक ललित बाबूक स्वागतार्थ हवाई अड्डामे डटल रहल । दिन साफ नहि छल । एहन बूझि पड़ैक जेना किछु अशुभ घटना होमयबाला अछि । अन्ततो-गत्वा हवाई जहाज आयल । ललित बाबू एक-एक व्यक्तिसँ भेंट कयलनि । हमरा देखिते ओ भरि पाँज क' पकड़ि लेलनि । के जनैत छल जे ई अंतिम आलिगन छल । ओतय कामेश्वर तिह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक सभा-भवनमे ललित बाबूक अभिनन्दनक हेतु सभाक आयोजन छल । ललित बाबू एहि सभामे (जे दरभंगामे हुनक अन्तिम सभा छल) मिथिला, बिहार आ देशक विकासक हेतु विभिन्न योजनाक विषयमे बजलाह । हमहुँ ओहि सभामे उप-स्थित छलहुँ । हमरा एहने बुझना गेल जे मिथिलाक विकासक हेतु जे काल्हि होयतक से आइए अथवा एखनहि कयल जाय, तेहन ललित बाबूक विचार छलनि । लोक पूर्ण आश्वस्त छल जे आब दरभंगामे रेलवेक क्षेत्रीय कार्यालय आओत, बड़ी लाइन आओत, मिथिलाक चित्रकलासँ ओहिमे लागल लोक सभक आर्थिक विकास होयत, मिथिलांचलमे उद्योग-धंधाक स्थापना होयत आदि । बहुत कम कालमे ललित बाबू सभाक कार्य सम्पन्न कयलनि । लोक सम्मोहित छल । ओ जेम्हरे जायि हजारो हजार लोक हुनक पाछाँ चलयि । एहि सभाक बादे हुनका रेलसँ समस्तीपुरक समारोहमे भाग लेबाक हेतु जयबाक छलनि । ओ दरभंगा स्टेशन पर स्पेगल ट्रेनमे बैसलाह । कोन मुहूर्त छल ई से नहि जानि जाहिमे ओ दरभंगासँ प्रस्थान कयलनि जे फेर घुरिक'

दरभंगा नहि अयलाह । संघाकाल समस्तीपुरक सभामे भाषण कयलनि । एहि भाषणमे देशमे रेलवेक विकासक सम्बन्धमे बजलाह । पुनः समस्तीपुर मुजफ्फरपुर तकक ५३ किलोमीटर लम्बा रेल पथक विशेषताक सम्बन्धमे कहलथिन । पुनः राष्ट्रीय विकासक सम्बन्धमे बजलाह—

“मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि ठोकर मारने से धूल उड़ सकती है, लेकिन खेती नहीं हो सकती । खेत में पैदावार बढ़ाने के लिए या कारखानों में उत्पादन की रफ्तार तेज करने के लिए लगातार एकजुट होकर काम करना होगा । मंहगाई और बेरोजगारी इसलिए है चूँकि उत्पादनमे कमी आ गई है । हड़ताल से या प्रदर्शन से या घेराव से न तो कारखानों में उत्पादन बढ़ेगा, न खेती होगी और यदि उत्पादन और खेती नहीं होगी तो मंहगाई और बेरोजगारी भी दिनपर दिन बढ़ती जायेगी ।”

एकर किछुए काल बाद ओ घटना घटल जाहिसँ माँ मिथिली चीत्कार क’ उठलीह । मंचहिपर बम विस्फोट भेल । ई घटना छओ बजे संघाकाल भेलैक । ललित बाबू, हुनक अनुज एवं तत्कालीन सिचाइ एवं विद्युत मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र (सम्प्रति मुख्यमंत्री, बिहार) सेहो घायल भ’ गेलाह । हिनका लोकनिक अतिरिक्त किछु विधायक, रेल कर्मचारी आ पचोसो अन्यान्यो लोक आहत भेलाह । दरभंगाक तत्कालीन डी० आइ० जी० सेहो गम्भीर रूपसँ आहत भेलाह ।

दू जनवरी, १९७५क ओहि कालरात्रिमे विशेष रेलगाडीसँ घायल ललित बाबूकेँ उपचारार्थ दानापुर अस्पताल पहुँचाओल गेल । लोककेँ ई नहि छलैक जे ललित बाबूकेँ संगीन चोट छनि जाहिसँ हुनक देहान्त भ’ जायत । मुदा घाव ‘सतही’ नहि छल । ई प्राणलेबा छल । समाज आ देशक शत्रु अपन कारनामामे सफल भेल । दोसर दिन लगभग नओ बजे ललित बाबू गाम-घर, परिवार आ देश सभकेँ छोड़ि महाप्रयाण कयलनि ।

ललित बाबूक मृत्युक खबरि गाम-गाममे विद्युत् गतिसँ पसरि गेल । मिथिला आ देशपर वज्रपात भ’ गेल । मिथिलाक कतोक घरमे एहि असंभावित समाचारसँ चूल्हि नहि जरल । ककरो विश्वास नहि होइ जे ललित नहि रहलाह परन्तु वास्तविकताकेँ तँ स्वीकार करहिँ पड़ैत छैक । सम सरकारी भवन पर झंडा आधा झुका देल गेल । तीन दिनक राजकीय शोक मनयबाक घोषणा कयल गेल । सम्पूर्ण बिहार आ देशमे शोक-लहरि पसरि गेल । मृत्युक

उपरान्त हुनक शव सदाकत आश्रममे आनल गेल । अन्तिम दर्शनार्थ हजारो व्यक्ति भीड़ छल । हमहूँ दरभंगासँ अन्तिम दर्शनक हेतु पहुँचलहुँ । लोक बिलखि-बिलखि कानि रहल छल । बिहारक तत्कालीन राज्यपाल श्री भंडारे, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर, विधायकगण, सांसदगण, नागरिकगण, विरोधी दलक नेतागण, सरकारी कर्मचारी सभ अन्तिम दर्शनक हेतु सदाकत आश्रममे उपस्थित छलाह । कतेको माल्यार्पण हुनक शवपर कयल गेल । अपराह्णमे हुनक शव पटना जंक्शन पहुँचाओल गेल, जतयसँ रातिमे विशेष रेलगाड़ी हुनक शव ल' क' बलुआ बजारक हेतु प्रस्थान कयलक । जखन गाड़ी खुजलैक तखनक दृश्य अभूतपूर्व छल । केओ हुनका शव लगसँ हट्य नहि चाहैत छल ।

सभसँ दुखक विषय ई छल जे हुनक धर्मपत्नी आ बच्चा सभ अन्तिम समयमे हुनका लग उपस्थित नहि रहथि । कोना रहितथि ? के ई बात जनैत छल ? संध्याकाल ३ जनवरीकेँ हुनक स्त्री वायुयानसँ दिल्लीसँ पटना आबि सोझे पटना जंक्शन पहुँचलीह । अन्तिम दर्शन करितहिँ ओ बेहोश भ' गेलीह आ बड़ कठिनतासँ हुनका ओहि ठामसँ अलग कयल जा सकल । जीवनसंगी आ जीवनसंगिनीक अद्भुत वियोग छल ।

ललित बाबूक इच्छानुसार हुनक अन्तिम संस्कार बलुआ बजार (अपन पैतृक निवासस्थान)मे होयबाक छल । हुनक शव ४ जनवरीकेँ ओतय पहुँचि गेल । रेलवे स्टेशनसँ बलुआ बजार घरि लाखो नर-नारी हुनक अन्तिम दर्शन कयलक । ओहि दिन हुनक अंत्येष्टि क्रिया दिनमे अढ़ाई बजे ओहि स्थानपर कयल गेल जे ललित बाबू पहिनहि अपन भाय लोकनिकेँ बता देने छलथिन । राजकीय सम्मानक संग वैदिक रीतिसँ हजारो शोकाकुल नर-नारी, भारतक प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी, तत्कालीन स्वराष्ट्रमंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी, निर्विभागीय मंत्री श्री उमाशंकर दीक्षित, कांग्रेस अध्यक्ष श्री देवकान्त बरुआ, बिहारक मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर, अन्यान्य मंत्रिगण, परिवारक सदस्य, बन्धु-बान्धव आ समाजक लोकक उपस्थितिमे पोखरिक कातमे अंत्येष्टि सम्पन्न भेल । हुनक ज्येष्ठ पुत्र श्री विजयकुमार मिश्र मुखारि देलथिन । ईहो दृश्य अभूतपूर्व छल । बलुआ बजार गाममे मेजा लागि गेल छल । भीड़ ततेक जे पुलिसकेँ नियन्त्रण करब मे कठिनाई होइक । अन्तिम संस्कार सम्पन्न होयबासँ पूर्व सेनाक एक टुकड़ी हवामे गोली दागि क' दिवंगत नेताकेँ अन्तिम सलामी

देनक आ हथियार उनटा नेनक । श्रीमती इंदिरा गांधी बिनापर चाननक नकही चढ़ओननि । आ तन्मन्त्रान् विजिग्रेह अविन मम आ परिवारम् मदस्य लोकनि चाननक नकही बिनापर चढ़ओननि । राष्ट्रपतिक निन्नी मखिव हुनका दिमसँ बिनापर कलमाला आ नकही अग्नि कयननि । आव देन-विदेशक नेतानौकनिक मोक-सन्देश आचय लागन । श्रीमती गांधी अपन मोक सन्देशमे विघटनकारी तत्वके ननिन बाबूक मृग्युक नेन उतरदायी बतओलनि । राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद कहलथिन—“नूनंम हिमा ने एक अनन्त संभावनाओं वाले व्यक्तित्व को एकाएक समाप्त कर दिया ।” राज्यपाल श्री आर० डी० मंडारे, मुख्यमंत्री श्री अश्विन गफूर, विधान सभाध्यक्ष पं० हरिनाथ मिश्र आदि अपन-अपन मोकोद्गार व्यक्त कयननि ।

ललित बाबूक प्रयाणपर कविक एहि पंक्ति सभके देखल जाय —

मियिलावासी भेल हतप्रभ ।

विकल लोक, शून आजा नभ ।

दारुण दुश्मसँ तन-मन जबर ।

हा ! हा ! ललित पूकारि रहल छथि ।

माँ मैथिलि चीत्कारि रहल छथि ।

(श्री भागवत मिश्र ‘वियोगी’)

ललित बाबू हमरा लोकनिक बीच नहि रहलाह । मात्र ५३ वर्षक अवस्थामे ओ बैकुण्ठवासी भ’ गेलाह । कतेक लोकके आजा छनैक हुनकासँ, कतेक संभावनायुक्त पुरुष छलाह ओ, परन्तु कालक क्रूर हाथ हुनका हमरा-लोकनिसँ छीनि लेलक ।

ललित बाबू तँ चल गेलाह परन्तु जाहि विघटनकारी तत्वक हाथे ओ गेलाह से समाजके किछु सोचवाक लेन बाध्य करैत अछि । ७ जनवरी, १९७६ क’ दिल्लीमे ललित बाबूक निघनपर एक शोक-सभामे श्रीमती इंदिरा गांधी बजलीह — “एहि देशमे किछु लोक आन्दोलन क’ रहल छथि । एहि आन्दोलनक उद्देश्य की अछि ? आइ जखन सम्पूर्ण देश आर्थिक कठिनाइसँ पीड़ित अछि, ओलोकनि एकर सर्वनाश क’ रहल छथि । जखन एहन स्थिति अछि तखन ओलोकनि चुनावक ढाँचामे परिवर्तन करवाक माँग क’ रहल छथि । ई आवश्यक भ’ सकैत अछि । परन्तु को इएह समय एहि माँगक लेल उपयुक्त अछि ? लोकके मोचन-सामग्रीक अभाव छैक किन्तु ओ सभ

कहैत छथि जे पहिने ई निर्णय क' लेबाक चाही जे चुनावक संचालन कोना कयल जाय । ओ समस्या (अन्नक) ताबत स्थगित कयल जा सकैत अछि । विद्यार्थीगण बेरोजगार छथि । कारण विकास सन्तोषजनक नहि अछि । विकास न्यून उत्पादनक कारणे सन्तोषजनक नहि अछि । ओ लोकनि शिक्षा पद्धतिके बदलबापर जोर द' रहल अछि जेना हमरालोकनि एहि बातके बुझिते ने होइएक । यद्यपि ई शोक-सभा अछि परन्तु तँओ हम उपयुक्त विषय सभ दिस अहाँ सभक ध्यान आकृष्ट कयल अछि । इएह समय अछि जखन हमरा लोकनिके ई सोचबाक चाही जे ललित बाबू किएक गरीब भ' गेलाह । एतवेसँ काज नहि चलत जे हमरालोकनि बैसिक' शोक प्रदर्शित करी । हमरा लोकनि दुखी छी परन्तु हमरा सभकेँ क्रोध सेहो भ' गेल अछि । ई समय अछि जखन हमरालोकनिके संकल्पपूर्वक अपन काज करबाक अछि जाहिसँ ललित बाबू अथवा आओरो अन्य लोकक बलिदान व्यर्थ ने चल जाय । ई अत्यन्त दुखक बात थिक जे देशमे जखन एहन घटना सभ भ' रहल अछि तखन झूठ अफवाहक प्रचार कयल जा रहल अछि । बहुत गोटाकेँ एहि प्रचारसँ मोनमे होमय लगैत छनि जे एहिमे किछु तँ सत्य अवश्य होयत परन्तु सत्यकेँ झूठ आ झूठकेँ सत्य मात्र ओकरा बेर-बेर दोहरा क' नहि बनाओल जा सकैत अछि ।"

ओ कहलनि जे हम लाइसेन्स काण्डमे किएक दृढ़ रहि अपनग्रोलहुँ ? हम जनैत छलहुँ जे एहिमे कोनो गलती नहि छलैक । हम एहि विषयपर जतबा सम्भव छलैक विचार कयने छलहुँ । हम नहि कहि सकैत छी जे कानूनी निष्कर्ष एहिमे की होयतैक । परन्तु जतबा दूर हम एकरापर विचार क' सकलियेक, हमरा इएह बुझना गेल जे एहिमे कोनो गलती नहि छलैक । परन्तु बनक आगि जेकाँ आन्दोलन शुरू क' देल गेल आ ई नगरक चर्चाक विषय बनि गेल । एहिसँ इएह सिद्ध होइत अछि जे एहि देशक अथवा आनो देशक लोककेँ आसानीसँ मार्गच्युत नहि कयल जा सकैत अछि ।"

ललित बाबूक जीवन-कालहिमे किछु राजनीतिक दलक हुताश नेता लोकनि कोनो कुचक्रसँ बाज नहि अयलाह । आब ई बुझना जाइत अछि जे एहि हुताश नेतालोकनिक आक्रोशक शिकार भेलाह ललित बाबू । ललित बाबूक मृत्युक दू-तीन वर्ष पूर्व दोषारोपणक जेना बाढ़ि आबि गेल छल । जकरा चलैत आँखि रहितहु सत्यक साक्षात्कार नहि भ' पाबि रहल छल । बिहारसँ दिल्ली धरि हुनका विष-वमन होइत रहल, गलत आरोप होइत रहल आ आरोपपर आरोप गढ़ल गेल । ललित बाबू आब हमरालोकनिक बीच

नहि रहलाह परन्तु ई आवश्यक बुझना जाइत अछि जे हमरालोकनि सोची कि ओ एहि आरोप सभक योग्य छलाह ? ललित बाबूक प्रति किएक विरोधी पक्षक किछु नेतालोकनिके एतवा डाह छलनि ? ललित बाबूक अरिज हननक हेतु ओलोकनि किएक एतेक सक्रिय छलाह ? एकर उत्तर जनबाक हेतु राजनीतिक स्थितिक इतिहासक विहंगमावलोकन करब आवश्यक । १९४८सँ १९६७ धरि काँग्रेसक संगे विभिन्न राजनीतिक देल सेहो अपन-अपन स्थान सुदृढ़ करबाक प्रयास कयलनि । परन्तु हिनकालोकनिके इच्छित मफलता नहि प्राप्त भेलनि । फलस्वरूप एहि राजनीतिक दल सभक किछु नेतागणक निराशा आओर तामसिक आक्रोशक शिकार ई भ' गेलाह । ई तँ सर्वविदित अछि जे संयुक्त सोसलिस्ट पार्टीक नेतागण बराबरि हीन भावनासँ पीड़ित रहलाह अछि । नेहरू परिवारक प्रति हुनकालोकनिक आक्रोशक कारण निकालब कठिन बात अछि । ललित बाबूक अधिकांश विरोधी सोसलिस्ट पार्टीक नेतागण छलाह । ललित बाबूक निर्वाचनमे सेहो इएह लोकनि हुनकर जोरदार विरोध कयने छनथिन आ प्रशासनमे सेहो इएहलोकनि जोरदार ढंगे ललित बाबूक विरोध करैत रहलाह ।

काँग्रेस संगठनक विभाजनक पश्चात् ललित बाबू ओहि नेतृत्वक संग देलनि जे प्रगतिशील, क्रांतिकारी, समाजवादी आ धर्मनिरपेक्ष विचारधाराक प्रतीक छल । इएह कारण छल जे ओ समर्पित भावसँ श्रीमती गांधीक संग देलथिन । एहि कारणे संयुक्त सोसलिस्ट पार्टी, जनसंघ आ काँग्रेसक नेतागण बीखला उठल छलाह । एतवे नहि ललित बाबूक अपन जे काँग्रेस दल छलनि तकरो किछु नेता हुनक उदार व्यक्तित्वक कारणे राजनीतिमे जे हुनक स्थान बनल जाइत छलनि से देखि द्वेषक तापमे जरय लगलाह । वास्तविकता ई छल जे ई विद्वेषी नेतालोकनि श्रीमती गान्धीक आदर्श विजयसँ तिलमिला गेज छलाह ।

१९७१ ई० मे मध्यावधि चुनावक बाद श्रीमती गान्धीक नेतृत्वमे पुनः काँग्रेस सशक्त भ' उठल । विरोधी दलक हाथमे जे किछु दिनक लेल सत्ता आयल छल से समाप्त भ' गेल । देशक दलित वर्ग, मजदूर वर्ग, किसान वर्ग सभ अपन समृद्धिक भविष्य श्रीमती इन्दिरा गान्धीमे देखय लागल । श्रीमती गान्धीपर प्रत्यक्ष प्रहारक फल होइत जनताक आक्रोश अथवा कोपभावन होयत ते ओलोकनि हुनक अनुयायी आ आधारस्तम्भपर आघात करब प्रारंभ

कयलनि । ई सर्वविदित अछि जे बिहारमे काँग्रेसक उत्थानक श्रेय ललित बाबूकेँ छनि । ललित बाबू जातिवादक देवालकेँ ढाहि देलनि आ बिहारक प्रत्येक वर्गक आ जातिक लोकक ओ विश्वास प्राप्त कयलनि । डॉ० वचनदेव कुमारक एहि प्रसंग निम्नलिखित उद्धरणकेँ देखल जाय—

“पिछड़े हुए लोगों और अल्पसंख्यकों को संगठन या शासन में जो महत्व या पद प्राप्त हुआ है वह नहीं होता, यदि बिहार का नेतृत्व श्री ललित नारायण मिश्र के हाथों में न होता । श्री मिश्र के व्यक्तित्वमे बिहार विभिन्न वर्गों, समुदायों और जातियों की महत्वाकांक्षा जीवित हो उठी और यह देखकर विरोधी राजनीतिक दलों को लगा उनके पांव तले से घरती खिसकती जा रही है । इसलिए विरोधी दलों की निराशा, कुंठा और आक्रोश स्वाभाविक है ।”

ललित बाबूक जीवन-कालहिमे प्रो० वचनदेव कुमारक ई मत छल । ललित बाबू जखन बिहारक राजनीतिक लगाम अपना हाथमे लेलनि तँ बिहार विधान सभामे विरोधी दलक शक्तिमे बहुत ह्रास भ' गेल तेँ ओ सभ प्रत्यक्ष रूपेँ ललित बाबूकेँ एकर कारण बूझय लगलाह । ललित बाबूक विरुद्ध बीरपुर, दुमका आदि स्थानमे जाहि तरहक प्रदर्शन कयल गेल ओ स्पष्ट सिद्ध करैत अछि जे विरोधी दलक नेता सिद्धान्त आ आदर्शक आधारपर ललित बाबूक सामना नहि क' आनो तरहें हुनका पदच्युत करवाक इच्छा रखैत छल । ललित बाबूपर आरोप लगाओल गेल जे ओ खेतिहर मजदूर आ हरिजन सभक जमीन हथिया लेने छथि । एहि हेतु राष्ट्रपतिकेँ शापन देल गेल । परन्तु आश्चर्यक बात ई अछि जे जाँव-पड़तालक क्रममे कोनो हरिजन ललित बाबूपर ई आरोप नहि अनलक । ललित बाबू काँग्रेसमे आविक' जगह-जमीन अथवा आन कोनो सम्पत्ति नहि बढओलनि । प्रत्युत पितासँ जे हुनका जमीन भेटल छलनि तकर अधिकांश भाग बेचिक' ओ समाजक कार्यमे लगओलनि । एहि आदमीक प्रति ई कहब जे ओ हरिजनक जमीन ल' लेलनि कतवा दूर धरि सत्य अछि से अनुमान कयल जा सकैछ ।

कोशीपर बान्ह बन्हवा आ नहरिक निर्माण करा ललित बाबू कोशी क्षेत्रक वन्ध्या भूमिकेँ उपजाउ बना देलनि । जतय कौड़ीक मोल जमीन बिकाइत छल ततय हजारो रुपैया बीघा जमीनक दाम भ' गेल । की कोनो कोशी क्षेत्रक लोक ललित बाबूक चरित्र-हननक प्रयासमे सँग द' सकैत अछि ?

जाहि 'कोशीक बाबू' क सत्प्रयासे आ कठिन तपस्याक कारणे कोशीक भोकरसे कोशी अंचलक क्षेत्रक लाकके जाण भेटलैक ताहि ललित बाबूक विषयमे जे केओ मनगदन्त बा । करत तकरा ओ सभ नहि मानि सकैत अछि । ईएह कारण छल जे हुनक अर्थी देखवाक हेतु फारविसगंजसे बलुआ बजार धरि बीस मीलक रास्तामे तड़कक दुनू कात असकय नर-नारी अंतिम दर्शनक हेतु ठाढ़ छल ।

ब्लिट्जक सम्पादक श्री आर० के० करंजियाके ललित बाबू कहने छलनि—“हमारी राजनीतिक प्रणाली एकदम सड़ी हुई है । इसे बदलना ही होगा । नहीं तो हम सब खरब हो जायेंगे ।” श्री करंजिया कहैत छथि—“जाहिर है कि उन्हें (ललित बाबू) अपनी मोत की चेतावनियाँ मिल चुकी थीं । लेकिन यह निर्भय होकर उसका सामना करने लिए आगे बढ़ रहा था । ज्योतिषमे उसे बहुत आस्था थी । उनके ज्योतिषी हरमुख पंडित ने निश्चय ही उसे आगाह किया होगा । मैं अन्दाजा लगा सकता हूँ कि उसे ललित ने कहा होगा कि कायर अपनी मोत से पहने अनेक बार मरते हैं और वीर मोत नहीं जानते—जबतक मोत आ ही न जाये । हरया होने के एक महीने से ज्यादा अग्रे पहने उसने रहस्य खोल दिया था । ललित ने मुझसे कहा था—“मैं इन आदमखोरों से परमान आ चुका हूँ । वे जल्दी मेरी जान ले लेंगे ।” श्री करंजिया एहि अपराधक पाछी ककर हाथ में सकैत छल तकर अनुमान करैत कहैत छथि—“मित्रविरोधी मृद्धिम संघम या गरिमा की तमाम सीमाएँ लाँघ चुका था । हो सकता है इससे सह पाकर पागलों ने यह जघन्य अपराध किया ।” लेकिन विरोध-श घृणा और हिंसा के उस आतावरण को पैदा करने की परोक्ष जिम्मेदारी से बच नहीं सकता जो एक अकेले मंत्रों के खिलाफ उछाना गया था । उनके राजनीतिक दुश्मन और सभी लोग यह मानेंगे कि व्यक्तिगत तौर पर ललित नारायण मिश्र भ्रष्ट नहीं थे । वह जितना भी पैसा जमा करते थे, पार्टी के खर्चा की सौर देते थे ।”

चरित्र-हत्याक आन्दोलन अपन देशमे नव बात नहि थिक । बी० के० कृष्णमेनन, टी० टी० कृष्णमाचारी आदि अनेक देशभक्तक चरित्र-हत्याक प्रयास कयल गेल । आ हुनक विरोधी अपन प्रयासमे सफल भेल । उपर्युक्त दिग्गज लोकनिक चरित्र-हत्या परोक्ष रूपमे जवाहर लाल नेहरूक चरित्र-हत्याक प्रयास छल । ओकर ओहिना ललित बाबूकेँ निहाना बनावब परोक्ष

रूपमें इंदिरा गांधीपर साधल गेल निशाना छल । ललित बाबूक निधनपर आयोजित दिल्लीक एक शोक-सभामें प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी कहने छलीह—

“मैं जानती हूँ, सारा विश्व जानता है कि लक्ष्य फोन था ।”

एहिसँ स्पष्ट भ’ जाइत अछि जे ललित बाबूक हत्याक पाछाँ की उद्देश्य छल । ललित बाबूक हत्याक हेतु जे बम विस्फोट भेल ताहि सम्बन्धमें श्री शिव-सागर मिश्र, निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालय कहैत छथि—

“मैं पाँच छह रोज पहले समस्तीपुरमें था । वहाँ मुझे मालूम हुआ कि इस समारोह के विरुद्ध विरोधी दल के लोगों की कई बैठकें हो चुकी है । उनलोगों ने समारोह में विघ्न डालने का निश्चय कर लिया है । विघ्न का रूप क्या होगा यह मुझे मालूम नहीं हो सका था ।”

प्रतिक्रियावादी आ फासिस्ट सभकेँ ललित बाबूक प्रति एक आओर कारणे आक्रोश छलनि । हुनकालोकनिकेँ देखबामे अयलनि जे ललित बाबूक विवेक-शील नेतृत्व आ संगठन-क्षमताक कारणे बिहारमें कांग्रेस पुनः सुदृढ़ भ’ गेल आ आपसी मतभेद सेहो बहुत दूर धरि समाप्त भ’ गेल । हुनके प्रेरणासँ बिहारक जनतांत्रिक जनता फासिस्ट आन्दोलनक समुचित उत्तर देने छल । एहि प्रसंगमें बिहारक खाद्य, आपूर्ति आ संसदीय कार्यमंत्री श्री रामाश्रय प्रसाद सिंहक विचार द्रष्टव्य अछि—

“यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिहार में फासिस्टों के इरादे क्या थे । हर कोई जानता है कि किस तरह से उन्होंने छात्रों और युवकों को गुमराह करने का प्रयास किया, किस तरह उन्होंने राज्य में हिंसा को बढ़ावा दिया और किस तरह से उन्होंने जोर जबरदस्ती दबाव और हिंसा का सहारा लेकर प्रजातांत्रिक मूल्यों की हत्या करने की कोशिश की । बाहर यह आन्दोलन चलता था और दूसरी ओर महीनों तक संसदीय कार्रवाई को ठप करने का सामूहिक प्रयास होता था । ललित नारायण मिश्र, प्रधानमंत्री, और कांग्रेस सबके प्रति दुर्भावना का वातावरण तैयार

करने का अभियान चलाया जा रहा था। यह अभियान ललित बाबू की हत्या के बाद भी बन्द नहीं हुआ, केवल इसका रूप थोड़ा बदल गया। सेना और पुलिस जैसे संगठनों की बफादारी और देशभक्ति जैसी पवित्र भावनाओं के विरुद्ध झड़काना इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि भारत की जनता में और हमारे जनतन्त्र में उनकी कोई आस्था नहीं है।”

उपर्युक्त विवरण सभसे स्पष्ट भ' जायत जे ललित बाबूक हत्याक पाछाँ कोन साजिश आ कुचक्र सभ काज क' रहल छल।

८. ललित बाबू मिथिला

३ जनवरी, १९७५ के मिथिलापर बज्रपात भेल जखन समस्तीपुरक सभामे बम विस्फोटक कारणे ललित बाबू एहि धराधामके छोड़ि विदा भेलाह । हुनक निधनसँ समस्त देश शोक-विह्वल भ' उठल, जकर वर्णन पूर्वहिँ कयने छी । मिथिला अपन सपूतकेँ गमाक' क्रन्दन क' उठल । प्रत्येक परिवारकेँ इएह बोध भेलैक जे ओकरे घरक दीप मिझा गेलैक, ओकरे परिवारक मुखियाक मृत्यु भ' गेलैक । ललित बाबूक निधनक दुइए चारि दिन बाद हम झंझारपुर लोकहा जे नव लाइन वनैत छलैक, ओहि दने जाइत छलहुँ । मजदूर सभ ओहिपर काज करैत छल । हमरा लोकनिकेँ देखि पुछलक जे ललित बाबू त' विदा भ' गेलथिन, अब हमारा लोकनिकेँ रोजी-रोटी केँ देत ? ई कहि ओहि पारि क' कानय लागल । ओकरा सभकेँ ई विश्वास नहि होइत छलैक जे ललित बाबूकेँ छोड़ि आओरो केओ ओकरा सभक मसीहाक रूपमे ठाढ़ भ' सकैत अछि । सम्पूर्ण मिथिलामे जनमानसपर ई प्रभाव आओर दोसर व्यक्तिक नहि भेलनि ।

स्व० ललित बाबू एहि देशक महान् नेता छलाह । हुनक व्यक्तित्वक प्रभाव देश-विदेश सर्वत्र छल । मिथिलाक एहि वरदपुत्रक मिथिलांचलक कण-कणसँ आजीवन प्रगाढ़ सम्बन्ध रहल । अतीतमे याज्ञवल्क्य, वाचस्पति, मंडन, उदयन आदिपर जेना मिथिलाकेँ गर्व रहलैक, ओही प्रकारेँ आधुनिक कालमे ललित बाबू मिथिलाक गर्व आ गौरव छलाह । ललित बाबूक जीवनक अन्तिम चरणमे मिथिला ललितमय भ' उठल छल । ओ जाति आ वर्गसँ ऊपर छलाह, सभक प्रिय छलाह आ निर्विवाद रूपेँ मिथिलांचलक नेता छलाह । गाम-गाममे ललित बाबूक जीवनकालहिँमे हुनक यशोगाथाक गान होइत छल । हिनका होइत छलनि जे अपन जीवनकालहिँमे मिथिलाकेँ सर्वसम्पन्न क' दी । मिथिलाकेँ दिल्लीसँ कोनो लगाव तक नहि छलैक । मिथिलाकेँ दिल्ली आ देशक आन भागसँ जोड़वाक श्रेय ललित बाबूकेँ छनि । देश-विदेशमे मिथिला चित्रकलाक प्रचार क' ललित बाबू ओहि वर्गक बीच अमर भ' गेलाह जे

गरीब-पुखी स्त्रीगण युग-युगसे एहि गलाक रक्षा कयमे रहथि । परन्तु ललित बाबूक प्रयाससे ई कला अर्थकारी भ' गेल । ललित बाबूक बिना की ई सम्भव होइतैक ?

ललित बाबू मात्र मिथिलेक नहि छलाह, मात्र मिथिलेक उदारक हेतु ओ कार्य नहि कयलनि, ओ सम्पूर्ण देशक छलाह आ सम्पूर्ण देशक आर्थिक आ सांस्कृतिक विकासक हेतु ओ प्रयत्नशील रहलाह । जोलाह तँ देशक लेल, मरलाह तँ देशक लेल काज करैत । मिथिला आ मैथिलीकेँ ई गवं छँक जे ओ देशकेँ एहन वरद पुत्र समर्पित कयलक ।

ललित बाबू चल गेलाह । आब ई बुझबामे नहि अवैत छँक जे हुनक अनुपस्थितिमे मिथिलामे जे नाना प्रकारक समस्या छँक तकर समाधान के करत । आर्थिक दृष्टिएँ भारत-वर्षक सभसेँ पछुआयल क्षेत्र अछि मिथिलांचल । प्राकृतिक दृष्टिएँ ई भूभाग सम्पन्न अछि, उपजाऊ भूमि, आ प्रचुर जल, तथापि कृषिमे सेहो ई अत्यन्त पछुआयल अछि । व्यवसाय तँ मिथिलांचलमे नगण्ये अछि । तीन कोटि मैथिल संतान युग-युगसे उपेक्षित आ प्रताड़ित रहल अछि । ललित बाबू सम्पूर्ण मिथिलाक आशाक केन्द्रबिन्दु छलाह । हुनका जीवितावस्थामे मैथिल बहुत आशान्वित छलाह । हुनका गैलाक बाद पुनः ओ सभ निराशावादिताक अथाह सागरमे डुबकी लगाबय लगलाह । कविक शब्दमे ललित बिनु मिथिलाक स्थितिकेँ देखू—

दिन बिनु सुरुज, राति बिनु चान
ललित बिनु मिथिला एक समान
नयन बिनु ज्योति अधर बिनु हास
फल बिनु गाछ, पुहप बिनु वास
जल बिनु सरिता, तन बिनु प्राण
ललित बिनु मिथिला एक समान

बिनु बादरि जनु साओन सून
श्याम बिना जनु गोकुल सून
छरम बिनु धाम, अवध बिनु राम
ललित बिनु मिथिला एक समान

पथ बिनु पथिक, पथिक बिनु आँखि
खोँता बिनु चिड़ै, चिड़ै बिनु पाँखि

(१६)

धरा बिनु गगन, घगुन बिनु घाग
सलित बिनु मिथिला एक समान
करइत कर्म विदेह मेला ओ
अग-जग जानय अमर मेला ओ
पूजा बिनु ध्यान, भयण बिनु कान
गुरु बिनु ज्ञान
ललित बिनु मिथिला एक समान

हंस बिना जनु मान सरोवर
रंग बिना जनु लीखल कोवर
शुभ बिनु पान, खोंइछ बिनु धान
ललित बिनु मिथिला एक समान

—श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर

कवि जे चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि ताहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक जनमानस ललित बाबूकेँ कोन दृष्टिसँ देखैत छल ।

ललित बाबू कोशीक विभीषिकासँ मिथिलाकेँ मुक्त करओलनि । मिथिलांचलक यातायातमे नव रेल लाइन सब बना क' कमे दिनमे क्रान्तिकारी विकास कयलनि । मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना कराक' उच्च शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलाक हेतु अमूलपूर्व काज कयलनि । परन्तु की एतबे काजसँ मिथिलाक सब समस्याक निराकरण भ' गेल ? ललित बाबू तँ मिथिलाक समस्या समक समाधानक परम्परा प्रारम्भ कयने छलाह । मिथिलाक लोक आश्वस्त भेल जाइत छलाह जे मिथिला आर्थिक आओर सांस्कृतिक विकासक क्षेत्रमे आव ककरहुसँ पाछाँ नहि रहत । परन्तु के जनैत छल जे क्रूर काल वक्र दृष्टिएँ मिथिलाकेँ ताकि रहल अछि । समस्तीपुरक बम विस्फोट ललित बाबूकेँ हमरा लोकनिसँ छीनि लेलक । दुखद प्रसंग ई अछि जे जाहि क्षेत्रक विकासक हेतु ललित बाबू सम्पूर्ण जीवन लागल रहलाह ओही क्षेत्रमे अर्थात् मिथिलाक दुयारिअहिपर ओ हत्याराक क्रूर पडयंत्रक शिकार भेलाह । मिथिलावासीकेँ किछु दिन घरि एहन लगैत रहनि जे आव ललित बाबूक बिना मिथिलाकेँ के देखत ? परन्तु बाहू रे ललित बाबूक सूझ-बूझ । ओ अपन जीवनकालहिमे अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रकेँ राजनीतिमे अयबाक हेतु अभिप्रेरित कयलनि । आइ सम्पूर्ण मिथिलावासीक आशाक एक मात्र केन्द्र छथि डा० जगन्नाथ मिश्र जी । आइ हुनके ललित बाबूक उत्तराधि-

कारि मानि मिथिलावासी जीवि रहल अछि । जगन्नाथ जी स्वयं मन्त्रि
बाबूक राजनीतिमे सहायक बनबाक उद्देश्यसँ एहि क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि ।
डा० जगन्नाथ मिश्र जीक एक लेखसँ निम्नलिखित उद्धरण एहि बानके
स्पष्ट करत—

"हम राजनीतिमे कोनो पदक लालसासँ नहि अयलहुँ । बड़का भैयाक
हमरा प्रति अटूट प्रेम छलनि । ओहि प्रेमक ऋण चुकयबाक उद्देश्यसँ
हम राजनीतिमे अयलहुँ । एना कहल जाय जे बिहारक राजनीतिमे
हुनक एक अनन्य सहायकक रूपमे हुनका सहयोग देबाक हेतु हम अयल
छलहुँ । हुनक शहादतक बाद हमरा एना लागय जे अब हमर राज-
नीतिमे रहबाक कोनो उपयोगिता नहि अछि । जखन भैया नहि रहलाह
तँ ककरा लेल हम राजनीतिमे रहू । किन्तु हमरा मनमे दू बात उठल ।
एक ई जे ललित बाबू प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीक एक निष्ठा-
वान एवं सर्वतोभावेन समर्पित सिपाही छलाह । ओ अपन सम्पूर्ण
शक्ति इन्दिराजीक संकल्प सभकेँ पूरा करबामे एवं हुनक प्रतिष्ठा
बढयबामे लगा देने छलाह । भैया चल गेलाह । हुनक हमरा प्रति जे स्नेह
छलनि, ओकर प्रतिदान इएह अछि जे हम श्रीमती गांधीक कार्य-
कलापकेँ पूरा करबामे ललित बाबू जेकाँ सम्पूर्ण शक्तिसँ योगदान
करबाक चेष्टा करी ।

"दोसर बात ई जे ललित बाबूक मोनमे बिहारक उपेक्षित एवं पीड़ित
लोकक लेल बड़ दर्द छलनि । ओ चाहैत छलाह जे देशक मानचितपर
बिहार चमकैत तारा बनि क' उभड़य । ओ चाहैत छलाह जे बिहारक
निरीह आ गरीब लोकक बीच सुख आ शान्तिक स्वर्ग उतरय । हम
सोचलहुँ जे ललित बाबूक ओ सपना अपूर्ण रहि गेल अछि । हम बिहारक
दीन-हीन, उपेक्षित-पीड़ित जनताक बीच सुख-सौभाग्य उतारबाक प्रति
अपनाकेँ पूर्णतः समर्पित क' ओहि सपनाकेँ साकार करबाक यथासामर्थ्य
प्रयास करब । हमर राजनीतिमे रहबाक आ मुख्यमंत्री बनबाक इएह
उपयोगिता अछि ।"

ललित बाबू वस्तुतः मिथिलाक जन-जीवनक उद्धारक हेतु अवतार लेने
छलाह । एतबा ओ क' क' गेलाह जे मिथिलाक बहुमुखी समस्याक समाधान
कोना भ' सकैत अछि तकर मार्ग देखओलनि । कम समयमे मिथिलाक हेतु

ओ जे क' सकैत छलाह रो कयलनि धाओर अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रकेँ ओ अपन उत्तराधिकारीक रूपमे मिथिलाक, बिहारक आ देशक समस्याक समाधानक हेतु द' गेलाह । आब सम्पूर्ण मिथिलाक आशा हुनकेमे केन्द्रीभूत अछि । माँ मैथिली हुनका चिरायु करथि ।

एहि ठाम एक प्रसंगक चर्चा कयने बिना मन नहि मानैत अछि । ललित बाबूक देहावसानक उपरान्त सम्पूर्ण मिथिला शोक-विह्वल भ' उठल । एहि संदर्भमे ६ फरवरी, १९७५केँ गफूर मंत्रिमंडल मिथिलाक केन्द्रमे अवस्थित मिथिला विश्वविद्यालयक नामक संग ललित बाबूक नाम सेहो जोड़वाक ऐतिहासिक निर्णय लेलक आ मिथिला विश्वविद्यालयमे ललित बाबूक नाम जोड़ि मिथिलाक घावमे मलहम लगओलक । सरकारक एहि निर्णयक सर्वत्र स्वागत भेल । सभ एकर सराहना कयलक । ललित बाबूक प्रति सम्मान प्रदर्शित करबाक उद्देश्यसँ तत्कालीन सरकार मिथिला विश्वविद्यालयक संग 'ललित नारायण' शब्द जोड़लक । विधानमंडलक भीतर वा बहार कतहु केओ एहि पुनीत कार्यक ओहि समयमे विरोध नहि कयलक । स्व० ललित बाबूक उदात्त अवदानक प्रति बिहारवासीक कृतज्ञता ज्ञापित करबाक उद्देश्यसँ बिहार सरकार मिथिला विश्वविद्यालयक नामकरण 'ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय' कयने छल । ई निर्णय कोनो राजनीतिसँ प्रेरित नहि छल ।

१९७७मे जे जनता सरकार बिहारमे बनल से जे एकटा प्रमुख काज मिथिलाक क्षेत्रमे कयलक से छल मिथिला विश्वविद्यालयसँ 'ललितनारायण' शब्दकेँ निकालि देब । जनता सरकारकेँ ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक 'ललितनारायण' शब्दपर ई आक्रोश किएक भेल ? महात्मा गांधी, डा० अम्बेदकर, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री जय प्रकाश नारायण, डा० राम मनोहर लोहिया, आदिक नामसँ देशमे अनेक संस्था कार्यरत छल । कतहु कोनो भागमे ककरो नाम नहि हँटाओल गेल । मुइलोपर ललित बाबूपर ई आक्रोश किएक जे हुनकर नाम हँटा देल गेल ? मिथिला-चलक बुद्धिजीवी, विद्यार्थी, किसान, मजदूर, नागरिक तथा राजनीतिक दल सरकारक एहि निर्णयक विरोध कयलक । हम तखन ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति छलहुँ । एहि निर्णयक विरोधमे हम २७ सितम्बर, १९७७ क' पदत्याग कयलहुँ । बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर सँ सरकारक एहि निर्णयक अनेक नेता विरोध प्रकट कयलनि । दरभंगामे आन्दोलन प्रारम्भ भेल आ विस्फोटक स्थिति भ' गेल । दरभंगामे सभ शिक्षण

संस्था अनिश्चित कालक लेन बन्द भ' गेल । बिहारक भूतपूर्व मुख्यमंत्री सेहो एहि निर्णयक बापसोक माड कयलनि । प्रदेश कांग्रेसक तत्कालीन अध्यक्ष श्री केदार पाण्डेय एहि निर्णयकेँ अनैतिक आ दुर्भाग्यपूर्ण बतओलनि । परन्तु एकर कोनो फल नहि भेल । १९७७ ई० मे ई मिथिलापर दोसर बज्रपात छल । १९८०मे जखन बिहारमे पुनः कांग्रेस मंडिमंडलक गठन भेल तखन पुनः ललित बाबूक नाम मिथिला विश्वविद्यालयक संग जोड़ल गेल । ललितबाबू सम्भवतः एहन एके नेता छलाह जे जीवनकालोमे आ मुइलोपर अपन विरोधीक आक्रोशक शिकार भेलाह । मुदा एहि संसारमे वस्तुतः जीवित ओ अछि जकर कीर्ति छैक—‘कीर्तियंस्य स जीवति’ । ललितबाबू मरिओ क' अमर छथि ।

पिताक परोक्ष भेलापर लोकक ध्यान स्वभावतः पुत्रपर जाइत छैक, कारण जे भारतमे पुत्र पिताक अवतार मानल जाइत अछि—आत्मा वै जायते पुत्रः । आ ते लोक पुत्रहुँमे ओहि सभ गुणक आशा-आकांक्षा रखैत अछि जे पितामे विद्यमान छल । अतः स्व० ललित बाबूक कथा ता घरि पूर्ण नहि होयत जा घरि हुनक पुत्रक विषयमे किछु चर्चा नहि कयल जाय ।

आशाक अनुरूपे ललित बाबूक जेठ बालक श्री विजय कुमार मिश्रमे अपन पिताक बहुत रास गुण स्पष्टतः लक्षित होइत अछि । पिते जकां इहो छात्रा-वस्थहिँसँ समाज सेवाक क्षेत्रमे अवतीर्ण भ' गेलाह । आरम्भमे किछु दिन शिपिंग कारपोरेशनमे काज कयलनि आ ओहि काजसँ विदेशो गेलाह । तकर बादो कैक बेर कतेक महत्वपूर्ण कार्यसँ विदेश गेल छथि । १९७६ ई० घरि ई सामाजिक क्षेत्रमे ततवा ख्याति प्राप्त क' लेलनि जे बिहार हाउसिंग को-आपरेटिव फेडरेशनक अध्यक्षक पदपर निर्वाचित भ' गेलाह आ तहिआसँ एहि संस्थाक माध्यमे समाजक बहुत पैघ सेवा करैत रहलाह अछि । १९७७ ई०मे ई बिहार विधान परिषदक सदस्य निर्वाचित भेलाह । सहकारिताक क्षेत्रमे ई अनुपम संघटन शक्तिक परिचय देलनि आ तकर फलस्वरूप आइ ई बिहार हाउसिंग फेडरेशनक अध्यक्षक पद सम्भारैत बिहार कन्ज्यूमर्स कोअपरेटिव फेडरेशनक अध्यक्ष पदकेँ सेहो सुशोभित क' रहल छथि तथा बिस्कोमान (बिहार स्टेट कोअपरेटिव मार्केटिंग यूनियन)क बोर्ड आफ डायरेक्टर्सक सदस्य सेहो छथि । एहि तरहें चि० श्री विजय बाबू आइ बिहार राज्यमे सहकारिताक क्षेत्रमे शीर्षस्थ नेताक रूपमे सर्वत्र समादृत छथि । आब तँ हिनक ख्याति अखिल भारतीय स्तरपर पहुँचि गेल अछि आ तकर फलस्वरूप ई १९८१-८२मे सेन्ट्रल कोअपरेटिव हाउसिंग फेडरेशनक उपाध्यक्ष पदकेँ सुशोभित क' रहलाह अछि ।

अपन पितहिं जेका हिनफहुं अपन धंस-कोरासँ, अपन लोक-वेदसँ, अपन भाषा ओ संस्कृतिसँ अपार अनुराग छनि । सम्प्रति ई मैथिलक सभसँ पैघ साहित्यिक ओ सामाजिक संस्था, चेतना समिति, पटनाक उपाध्यक्ष छथि ओ एहि संस्थाक सर्वविध कायंमे, विशेषतः विद्यापति-भवनकेँ पूर्ण करवामे दत्तचित छथि । मिथिला-मैथिल-मैथिलीकेँ हिनकासँ बहुत किछु आशा छैक, जहिना हिनक पितासँ छलैक ।

जे केओ हिनका निकटसँ जनैत अछि तकरा हिनकामे एकटा स्वस्थ राजनैतिक चिन्तक, उत्साही समाजसेवी, कुशल संघटक ओ उदार एवं स्नेहा-प्लुत आत्माक स्पष्ट आभास भेटतैक । एखन तँ ई अपन यौवनकालमे पदापंणे कयलनि अछि । भविष्यमे हिनकासँ मिथिलाकेँ, विहारकेँ ओ सम्पूर्ण देशकेँ बहुत किछु पयबाक आशा छैक ।

स्व० ललित बाबूक अन्य पुत्र लोकनि सेहो अपन-अपन व्यवसायमे लागल छथि । सभ मेधावी, सुसंस्कृत आ सज्जन छथि । माँ मैथिलीसँ प्रार्थना जे इहो लोकनि अपन पिताक अनुरूप प्रतिष्ठा प्राप्त क' प्रमाणित करथि जे 'आत्मा वै जायते पुत्रः ।'

मिथिला-विभूति ललितनारायण मिश्रक किछु अमर्याणी

- हमर ई निश्चित धारणा अछि जे हिन्दीकेँ कोनो क्षेत्रीय भाषासँ टक्कर नहि छैक । क्षेत्रीय भाषा सभक विकासक बिना हिन्दीक विकास असम्भव अछि । भारतमे बङ्गला, तमिल, मलयालम, तेलुगु, आदि भाषामे उच्च कोटिक साहित्य लिखल गेल अछि आओर लिखल जा रहल अछि । हमरा लेखेँ भारतक सभ भाषा नमस्य थिक । हिन्दीक संग-संग क्षेत्रीयो भाषा सभक विकासार्थ प्रयत्न होयबाक चाही । जाहि-जाहि क्षेत्र देने हमरालोकनिक रेल जाइत अछि ताहि-ताहि क्षेत्रक भाषाक प्रयोग ओहिठामक रेलवे कार्यालय तथा स्टेशन सभपर अवश्य कयल जाय । भाषा प्रेम आ सद्भावक वाहन थिक, ठूसि लड़वाक वा झगड़ा लगयवाक साधन नहि थिक ।
- अमर महाकाव्य 'रामायण'क प्रेरणा-बिन्दु बनबाक गौरव एहि मिथिला-भूमिकेँ प्राप्त छैक । विद्यापतिक भक्ति-भावना-भरल गीतक स्वर-लहरी आइयो मिथिलाक माटिमे सौरभ भरि रहल अछि ।
- हम बिहारक थिकहुँ आ बिहार हमर थिक । हम ओकर उन्नतिक हेतु सभ किछु निछाउर क' सकैत छी ! केओ हमरापर प्रसन्न रहओ वा अप्रसन्न । हम रही वा नहि रही, बिहार बढ़िक' रहत !
- हमर दरमाहा आ हमर खेत-पथार हुनका लोकनिक (परिवारक सदस्य लोकनिक) थिकनि । हुनकालोकनिक हेतु हमरा लग आओर किछु टा नहि अछि । हमरा दाथमे टाका-पैसा अबैत अछि अवश्य, मुदा ओ हमर नहि, संगठनक रहैत अछि । हम नहि चाहैत

छी जे रांगठनक एको फोड़ी हगरा घरमे खर्च हो । ओ तँ हमरा हेतु बिप होयत ।

- कर्मचारी लोकनिसँ हमर लड़ाइ नहि अछि । हम तँ प्रजातन्त्रक हेतु लड़ि रहल छी । हमरा लड़ाइ अछि फासिस्टसँ । हम ओहि व्यक्तिमे छी जे एहि बातमे विश्वास रखैत छथि जे प्रजातन्त्र आओर ट्रेड यूनियन आन्दोलन संग-संग चलबाक चाही । यदि हम प्रजातन्त्र चाहैत छी तँ हमर ट्रेड यूनियन सेहो शक्तिशाली होयबाक चाही ।
- एक उद्योग, एक यूनियन ।
- हम एतवे टा कह' चाहै छी जे ठोकर मारने गरदा उड़ि सकैत अछि मुदा खेती नहि भ' सकैत अछि । खेतमे उपजा बढ़यबाक हेतु वा कारखानामे उत्पादनक गति तेज करबाक हेतु लगातार एकजुट भ' काज करय पड़त । महंगी आ बेकारी एहि हेतु अछि किएक तँ उत्पादनमे कमी आबि गेल अछि । हड़तालसँ, वा प्रदर्शनसँ आ कि घेरावसँ ने कारखानामे उत्पादने बढ़त आ' ने खेतिए होयत । आओर यदि ने उत्पादन होअय आ' ने खेती होअय तँ महंगी आ बेकारी दिन-दिन बढ़ितहिँ जायत ।
- मनुखक असली जाँच विरोध आओर संकटक घड़ीमे होइत छैक । घरतीक छातीकेँ चीरि गहुँम अँकुरैत अछि, बढ़ैत अछि । काँटक अन्तरालहिँमे गुलाबक फूल फुलाइत अछि, गमकैत अछि ।
- कार्यकुशल तथा प्रभावकारी प्रशासनक हेतु सबसँ पहिल आवश्यकता अनुशासनक होइत अछि ।
- भारत एक विकासशील देश अछि । देशक सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक अछि जे दिन-राति तन-मन-धनसँ कार्यरत रहल जाय । विकासक गतिकेँ बन्द होबय देबाक अर्थ होयत देशकेँ पाछू दिस ल' जायब आ' विकासक गतिकेँ रोकबाक अर्थ होयत— देशद्रोह !
- यदि देश गरीब अछि आ' देशक विकास रुकैत अछि तँ स्पष्ट अछि जे अहाँक घर सुखी-सम्पन्न नहि भ' सकैत अछि ।

- अङ्ग्रेज सरकार अपन सुविधाक हेतु रेल-यात्रा बनबीसक । ओकरा एहि ठामक कच्चा माल ऊपि-ऊपिक' अपना घर ल' जयबाक छलैक, अपन रोगा एक स्थानसँ दोसर स्थान पहुँचयबाक छलैक । परन्तु स्वाधीनताक बाद हमर नेतालोकनिके ई चिन्ता छलनि जे कोन प्रकारेँ देशक किसान आओर मजदूरकेँ, विद्यार्थी आ बेरोजगार केँ एक स्थानसँ दोसर स्थानक यात्रा करबामे नीकसँ नीक साधन सुलभ कराओल जाय । हुनकालोकनिकेँ चिन्ता छलनि जे कोन तरहें कारखानाक उत्पादन आ' सेतक उपजा एक ठामसँ दोसर ठाम सुविधापूर्वक पहुँचाओल जा सकय ।
- वास्तवमे हुनक (जवाहरलालजीक) व्यक्तित्व आकर्षक छल । हुनकामे जेना कोनो जादू छल जे अलक्षित रूपेँ अपना दिस खींचि लैत छल । जवाहरलालजी कहैत कम छलाह, किन्तु हुनक बहुत बात कोनो अज्ञात आध्यात्मिक शक्ति-जेकाँ प्रभावित क' दैत छल । हम हुनक सहज व्यक्तित्वक शिकार अचानक भ' गेल छलहुँ ।
-

ललितनारायण मिश्रक विषयमे कतांक विशिष्ट व्यक्तिक उद्गार

(क) नेता-लोकनिक

श्री अब्दुल गफूर—भूतपूर्व मुख्य मंत्री, बिहार

ललित बाबू सँ बिहारके बहुत रास आशा छलैक आओर हुनक सभ आशा आइ बिला गेल । ई सोचिक' हृदय आओर विकल भ' उठैत अछि जे ललित बाबू अपन महाबलिदानहुक समयमे उत्तर बिहारक अतिवांछित विकास-योजनाक शुभारम्भ क' रहल छलाह । ओ बिहारक एक महा-विभूति छलाह आओर एहि पश्चात्पद प्रदेशक सार्वदैशिक विकास कोना होयत एकर चिन्ता हुनका सदा रहैत छलनि । हुनक सेवा देशक इतिहासमे घोहर रहत ।

श्रीमती अरुणा आसफ अली—

हुनका (ललित बाबू)सँ हमर संगति कोनो औपचारिक ढंगक नहि छल । ओ हमरा सदा जेठि बहिनि मानैत रहलाह आ' हमरासँ ओहने अन्तरंगता रखलनि जेना अपन पारिवारिक सदस्यसँ राखल जाइत छैक । कखनहुँ-कखनहुँ हम हुनका-अप्रिय सलाह सेहो दैत छलियनि, परन्तु हमरा जे गलत बूझि पड़ैत छल से जँ हम हुनका कहि दैत छलियनि तँ तकरा ओ कहियो अन्यथा नहि मानथि । ललितनारायण जी उदार हृदयक पुरुष छलाह । हुनक वास्तविक शक्ति हुनक समृद्धिमे नहि छलनि, जेना कि किछु गोटेय बुझै छथि । हुनका प्रति लोककेँ अनुराग एहि हेतुएँ छलैक जे हुनक द्वार सभक हेतु खुजल रहैत छल आ हुनकामे एक सन्मिलक वास्तविक गुण छलनि ।

ललित नारायण जीक हत्या एहि बातकेँ उधार क' देलक जे हमरा लोकनिक देशमे कोना हिंसात्मक ओ फासिस्ट राजनीतिक तांडव भ' रहल

अछि जकरा गत कतोक धरिसँ किछु हताण आ विध्वंसक शक्ति चला रहल अछि । हुनक हत्याक बादसँ देशमे जे घटना सभ भ' रहल अछि से एहि बातक साक्षी अछि जे देशमे अस्तव्यस्तता उत्पन्न करवाक हेतु तथा हमरालोकनिक गणतान्त्रिक ढाँचाकेँ अवनमित करवाक हेतु योजनाबद्ध रूपमे कोनो कुचक्र चलि रहल अछि ।

श्री कमलापति त्रिपाठी—भूतपूर्व रेल-मन्त्री, भारत सरकार

ललितबाबू सुविख्यात राजनीतिज्ञ आओर प्रशासक तँ छलाह, किन्तु हुनकामे सभसँ पैघ विशेषता छल हुनक आत्मीयता । ओ जकरासँ भेट करैत छलाह, हृदय खोलिक' करैत छलाह । हुनक व्यवहार एतेक स्नेह पूर्ण आ निश्छल होइत छल जे प्रत्येक व्यक्ति हुनक एक मधुर स्मृति ल' क' विदा होइत छल ।

डा० जगन्नाथ मिश्र—मुख्य मन्त्री, बिहार

हमर मानस-पटलपर ललितबाबूक जे छवि अंकित होइत अछि जो रहैत अछि एक देवोपम पुरुषक, सदा-सर्वदा हमरा हेतु अनुकम्पा आओर आशीर्वादक वरद हस्त उठओने ।

श्री नसीरुद्दीन हैदर खाँ—श्रम मन्त्री, बिहार

हम स्व० ललितबाबूक स्मृतिमे नतमस्तक होइत छी, जे एक महान् राजनयिक द्रष्टा छलाह आ सच्चरित्रता एवं सामाजिकताक साकार मूर्ति छलाह । जँ क्रूर नियति हुनका किछुओ दिन आओर छोड़ि देने रहितनि तँ ई बिहारकेँ भारतक नक्शामे एक स्पृहणीय स्थान बना देने रहितथि । हुनक राजनैतिक प्रतिभा तथा सर्वव्यापी प्रेम भारतीय जनताक हृदयकेँ जीति लेने छल । हुनक समस्त जीवन दीन-दुखी जनताक कल्याण सम्बन्धी समस्या सभक समाधान खोजि निकालबामे समर्पित रहल ।

स्व० फखरुद्दीन अली अहमद—भूतपूर्व राष्ट्रपति

नृशंस हिंसा एक अनन्त सम्भावना बाला व्यक्तिकेँ एकाएक समाप्त क' देलक ।

श्री बंशीलाल—भूतपूर्व रक्षा-मन्त्री

श्री ललितनारायण मिश्र एक वास्तविक समाज-सेवी छलाह । ओ अपन सिद्धान्तक खूब दृढ़तासँ पालन करैत छलाह । अर्थशास्त्रक विद्यार्थी होयबाक

कारण ओ भारतीय जन-अभिरुचाक समस्या समर्पे समीक्षतामे सूचित छलाह आ समाजवादी संघमें ओकरा मोक्षरथवाक रुपमे हुनका गमिन्द पड़ैत छलनि ।

मोहम्मद साफो कुरैशी - भूतपूर्व रेल राज्यमन्त्री

ललितबाबूक अपन वैयक्तिक जीवन एकदम सन्त-महात्मा सन छल, किन्तु हुनक हृदय महान् समृद्ध छल । किन्तु गोटाके ई दुर्घारणा होयतनि जे ललितबाबू धन सम्पत्ति वाला लोक छल होयताह । किन्तु हुनका तँ एकटा खजाना छलनि—प्रेम आ मोहब्बतक खजाना, जकरा ओ दुनू हाथे 'हृदय खोलिक' बँटैत-बँटैत चल गेलाह, किन्तु हुनक ओ खजाना खाली नहि भेल ।

श्री रमेश झा—कृषिमन्त्री, बिहार

जीवनमे जे किछु ललित ओ ललाम अछि, ललितबाबू ओहि सभके मूर्तिमान स्वरूप छलाह तथा एहि अर्थमे हुनक नाम बहुत सार्थक छल । राजनीतिक ओ कर्ण छलाह आओर मित्रक कोन कथा, शत्रुओ कहिओ हुनक द्वारसँ खाली हाथ नहि घुरल ।

श्री राधानन्दन झा—अध्यक्ष, बिहार विधान-सभा

राजनीतिक क्षितिजपर ललित बाबू मिथिला-मार्तण्डक रूपमे उदित भेल छलाह आओर हुनक रश्मि क्रमशः अखिल भारतीय स्तरपर विकीर्ण भ' गेल ।

श्री सुनील दत्त—नेता, अभिनेता ओ साहित्यकार

अतीतक पृष्ठ उधारैत छी तँ ललितनारायण जी, जनिका राजनीतिक क्षेत्रक लोक बड़ स्नेह आ' आदरसँ ललितबाबू कहैत छलथिन, अपन प्रभाव-शाली व्यक्तित्व एवं मस्ती-भरल ठहाकाक संग आँखिक समक्ष नाचि जाइत छथि । हुनक वार्तालापमे सादगी आ व्यवहारमे बड़ आत्मीयता छल । हुनक साक्षात होइतहि केओ व्यक्ति प्रभावित भ' उठैत छल । जे वचन ओ दैत छलाह तकर पालन ओ अवश्य करैत छलाह—इएह हुनक सबसँ पँथ विशेषता छल आओर एही कारणे, नेता होथु वा संसद-सदस्य, अध्यापक होथु वा समाजसेवी, प्रातःकालहिसँ हुनक अकबर रोड स्थित निवासपर आवाय लगैत छलाह आ साँझ तक जमल रहैत छलाह ।

श्री हरिनाथ मिश्र—भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार विधान-सभा, सम्प्रति केन्द्रीय राज्यमन्त्री

ललितबाबू अपन योग्यता एवं कर्मठताक बले भारतीय राजनीतिमे एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त क' लेने छलाह। ओ एक लोकप्रिय नेता आओर प्रशासनक शक्तिशाली स्तम्भ छलाह।

(ख) साहित्यकार लोकनि

डा० राजकिशोर कक्कड़—सदस्य, रेल हिन्दी मलाहकार समिति

हुनक दुःखद अन्त ग्रीक दुखान्त नाटकक महानायकक रूपमे भेलनि, जनिक अन्त भय तथा कष्ट भावक प्रेरक होइत छल आओर चरित्रक सज्जनता तथा मूलभूत सद्गुणे जनिक अन्तक कारण होइत छल। हुनको महाप्रयाण किछु एहने-सन छल। एहि युगक इतिहासमे हुनक बलिदानक निश्चित एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहत।

श्री राजेन्द्र अवस्थी—सम्पादक, 'कादम्बिनी'

ललितबाबू एक योग्य प्रशासक छलाह। जाधरि ओ जीवित रहलाह, बिहारक सकल राजनीति हुनके संकेतसँ संचालित होइत रहल। दिल्लीमे रहितहुँ बिहारक जनताकेँ ओ ककरो अन्का जिम्मा नहि छोड़ि देलनि। राजधानीमे हुनक व्यस्तता हुनक मित्र एवं हितैषीलोकनि निकेँ ना जनैत छथि। कार्य करबाक हुनक क्षमताक साक्षी हुनक कार्यालयक कर्मचारी अछि। जे निर्णय लेबाक होइन, ओ तत्काल लेलनि।

डा० वचनदेव कुमार—हिन्दी विभागाध्यक्ष, रांची विश्वविद्यालय

ललितबाबू अयाची ब्राह्मण छलाह, किन्तु जे केओ हुनक सम्मुख याचना करय आयल, ओकरा निराशा नहि भेटलैक। हम परमात्मासँ याचना करैत छी जे ललितबाबूक व्यक्तित्वसँ विस्फुरित होअबाला दिव्यरश्मि हमर पथकेँ सदा आलोकित करैत रहय।

श्री शंकर दयाल सिंह—भूतपूर्व संसद सदस्य

सत्ये आइ ललितबाबू नहि रहलाह, किन्तु हुनक जीवन्तता, हुनक विशाल-हृदयता, हुनक मृदु स्वभाव एवं सभकेँ मदति करबाक हुनक अपन वृत्ति केओ बिसरि नहि सकैत अछि।

श्री शिवसागर मिश्र—निदेशक, राजभाषा एवं औद्योगिक प्रचार, रेल मन्त्रालय

ललितबाबू देवता नहि गानघोषित भूत्यसँ सम्पन्न पूर्ण मानव छलाह । सम्पर्क एवं साहससँ सम्पुक्त एक गहन आस्थायान् पुण्य छलाह, जनिक आस्थाक दीप भाइ मृत्युक शंकायातके 'पाबिभोक' प्रदीप्त अछि ।

श्री श्यामनन्दन किशोर—भूतपूर्व कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय

ललितबाबू जीलाह तँ अद्भुत, मुइलाह तँ अद्भुत । 'जीलाह तँ दानवीर जेकाँ, मुइलाह तँ दानवीर जेकाँ । केवल जीवनहिके नहि, मृत्युके सेहो ओ किछु द' गेलाह । ललितबाबूक जीवनक आफमे उतार तँ छले नहि—प्रगतिक शिखरपर चढ़ैत-चढ़ैत ओ आकाशमे लीन भ' गेलाह ।

(ग) पत्रकार-लोकनि

श्री अक्षय कुमार जैन—सम्पादक, नवभारत टाइम्स

श्री ललितनारायण मिश्रमे जतय मिथिलाक शान्ति आओर कोशीक उग्रता छल, ओतहि चाणक्यक राजनैतिक कुशलता सेहो विद्यमान छल । ओ जाहि कोनो काजमे हाथ लगओलनि, तकरा सफलताक चरम बिन्दुपर पहुँचा देलनि ।

श्री स्मर० के० करंजिया—सम्पादक, बिल्डज, बम्बई

ललितबाबू अपन प्रगतिशील आस्था तथा वामपंथी राजनीतिक हेतु विख्यात छलाह । ओ सरकारक समाजवादी आदर्श तथा भारत सोवियत सहयोगक सभसँ बेसी समर्थक छलाह । जहिया ओ गृह-उपमन्त्री छलाह ओ खुफिया विभाग हुनक हाथमे छलनि, तहिया ब्रिटिश अमेरिकी सूत्र हुनका लोभयबाक प्रयास कयलक, किन्तु ओ तकरा ठोकरा देलनि ।

(घ) शिक्षाविद् ओ विद्वानलोकनि

श्री निर्मल कुमार चौधरी—भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार वर्किंग जर्नेलिस्ट यूनियन

Lalit Narayan Mishra may be dead, but he has left a legacy of noble and enduring spirit purified by hard and honest work as also sufferings bequeathing to his friends and followers as also his countrymen in calamity and distress, the undying

mexims of sweet morality which sustained him to stand up against all the travails and trauma of the life of a political leader .

प्रो० अमृतधारी सिंह—मैनेजिंग डाइरेक्टर, हथुग्रा मेटल्स तथा डाइरेक्टर एच० ई० सी०, राँचो

Lalit was religious and spiritual to the core. Only a few days before he was to proceed to Samastipur, he mentioned to me at Delhi, "Babu Saheb, I am praying to the God to call me in His service. This world is not worth living." His eyes were full of tears. I told him to do his duty and not to bother for the result. He faced death as boldly as he faced life. His death made him immortal. He has become a liberated soul. May God bless him.

डा० जयमन्त मिश्र—कुलपति, का० द० संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
कुलीन वंशमे उत्पन्न ललितबाबू वस्तुतः आदर्श पुरुष छलाह । ओ जेहने धीर छलाह तेहने सुधी, जेहने मनीषी छलाह तेहने क्रियावान पुरुषार्थी । जे सत्संकल्प लैत छलाह से पूरा कैए क' छोड़ैत छलाह ।

डा० रामकरण शर्मा—भूतपूर्व कुलपति, का० द० संस्कृत विश्वविद्यालय

माँ मैथिली एहन सुपुत्र (ललित बाबू)केँ उत्पन्न क' ने केवल मिथिला अपितु समस्त भारतकेँ गौरवान्वित कयलनि । हुनक सुकीर्तिलताक कथा वर्णनातीत अछि ।

डा० शालिकनाथ मिश्र—कुलसचिव, पटना विश्वविद्यालय

ललित बाबूक जीवन जेहन ज्योतिर्मय छल, हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व जेहन प्रेरक, प्रेरणापूरक छल, तेहने हुनक स्मृति-स्तम्भ आइ मिथिला-विश्वविद्यालयक संग नाम सम्बद्ध भ' युग-युगक हेतु उल्लेखित-आरोपित भेल अछि ।

ललितनारायण मिश्रक जीवनक प्रमुख घटना-क्रम

- १९२३ : २ फरवरी (वसन्त पंचमी) दिन जन्म : अपन मातृक कुपर बाजितपुर (जिला वैशाली)मे ।
- १९२८-४९ : शिक्षा : प्राथमिक—मातृकमे । माध्यमिक—विलियम हार्ड स्कूल, सुपौल (जिला सहरसा)मे । उच्च शिक्षा—चन्द्रधारी मिथिला कलेज, दरभंगा : टी० एन० बी० कालेज, भागलपुर, तथा पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
- १९४१ : बिहार प्रान्तीय कांग्रेसक संगठन कयलनि ।
- १९४१-४२ : कारावासक दंड भोगलनि ।
- १९४२ : स्वतन्त्रता-संग्राममे पयरमे गोली लगलनि ।
- १९४८-४९ : पटनामे बिहारक पहिल 'इकोनामिक कन्फरेन्स' आयोजित कयलनि ।
- १९४८-४९ : पटना विश्वविद्यालयक सीनेटक सदस्य भेलाह ।
- १९५० : प्रथम-प्रथम अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य-समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।
- १९५२ : लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।
- १९५४ : तत्कालीन प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू तथा बिहारक मुख्य मन्त्री डा० श्रीकृष्णसिंहकेँ कोशी क्षेत्रक निरीक्षण करओलनि ।
- १९५४-५७ : भारत-सेवक-समाजक जन-सहयोग कार्यक प्रभारी रहलाह ।
- १९५५-५६ : प्राक्कलन-समितिक सदस्य बनाओल गेलाह ।
- १९५६-५७ : लघु वक्तक राष्ट्रीय परामर्श-समितिक सदस्यता प्रदान कयल गेलनि ।

- १९५५ : कोषी योजनाक अधीगणेन करओलनि ।
- १९५७ : दोसर बेर लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह, तथा केन्द्रीय योजना, अग एवं नियोजनक संसदीय सचिव नियुक्त भेलाह ।
- १९६० : अग, योजना एवं नियोजन विभागक उपमंत्री बनाओल गेलाह ।
- ☐ जेनेवामे आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संगठन'क ४२म अधिवेशनमे भाग लेलनि ।
- ☐ कोइला एवं लौह-उद्योगक विषयमे औद्योगिक सम्बन्धक अध्ययन हेतु अमेरिकाक यात्रा कयलनि ।
- १९६२-६४ : नेशनल प्रोजेक्ट कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेडक अध्यक्ष रहलाह ।
- ☐ भारत सेवक समाजक सचिव रहलाह ।
- ☐ भारतीय लौह कामगर फेडरेशनक सचिव बनाओल गेलाह ।
- ☐ 'कांग्रेस फोरम' पत्रिकाक सम्पादक रहलाह ।
- ☐ केन्द्रीय गृह मन्त्रालयमे उपमंत्री नियुक्त गेलाह ।
- ☐ राज्य सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।
- १९६६ : राज्य-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह । वित्त-मन्त्रालयक उपमंत्री बनाओल गेलाह । कोलम्बो प्लान कान्फरेन्समे भाग लेबाक हेतु कराँची गेलाह ।
- १९६७ : अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संघटनक प्रशासी निकायक अधिवेशनमे भाग लेबाक हेतु पुनः जेनेवा-यात्रा कयलनि ।
- ☐ १३ मार्चके केन्द्रीय श्रम-मन्त्रालयमे राज्यमंत्री बनाओल गेलाह ।
- ☐ १५ नवम्बरके रक्षा-उत्पादन मन्त्रालयमे अगलाह ।
- १९७० : भारत सरकारक विदेश-व्यापार-मंत्री भेलाह ।
- १९७१ : दरभंगा क्षेत्रसे लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।
- १९७२ : 'एसिया ७२'क नामसे एसिया औद्योगिक मेलाक आयोजन कयलनि ।

(८२)

□ अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य निर्विरोध निर्वाचित भेलाह ।

१९७३-७४ : ५ फरवरी ७३ को कैबिनेट स्तरक रेल मन्त्री बनाव्वाले भेलाह ।

□ एशिया, यूरोप तथा अमेरिकाक विभिन्न देशक यात्रा कयलनि ।

□ रातहुत्तरि विकासशील देशक संयुक्त बैठकमे भाग लेबाक हेतु लीगा तथा भेल भेलाह ।

□ स्वदेशहितार्थ सोवियत यूनियन, रूस, यूगोस्लाविया, रूमानिया, हंगरी, स्विटजरलैंड, अमेरिका, हांगकांग, बेल्जियम आदि अनेक देशक यात्रा कयलनि ।

१९७५ : ३ जनवरीके महाप्रयाण कयलनि ।

मिथिला-विभूति ललितनारायण मिश्रक सम्बन्धमे प्रकाशित साहित्यक सूची

१. ललित-चित्रावली—५५म जयन्ती १९७७क अवसरपर कमलायन प्रकाशन, चाणस्यपुरी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित । आकार २२ × २८ सेन्टीमीटर; पृ० ८८; चित्रसँ ९३ । दिल्ली १९७७; मूल्य २५ रु० ।

२. युगपुरुष : ललित बाबू—सम्पादक धीरेन्द्र-महेन्द्र; प्रकाशक ललित नारायण मिश्र स्मारक समिति, सहरसा; प्रथम संस्करण १९७७ ई०; आकार १४ × २२ सेन्टीमीटर; पृ० १० + ६२; चित्र ४; मूल्य २ रु० । गद्य-पद्यमे शोकोद्गार ओ संस्मरण ।

३. नीलकण्ठ ललित नारायण मिश्र—सम्पादक शिवशंकर सिंह; प्रगतिशील प्रकाशन, अशोक राजपथ, पटना-६; आकार १४ × २२ सेन्टीमीटर, प्रथम संस्करण, १९८१; पृ० ८०; मूल्य १५ रु० ।

४. ललित स्मृतिग्रन्थ—सम्पादक श्री पुरुषोत्तम झा आदि । प्रकाशक मिथिला विकास संघ, सुन्दरपुर, दरभंगा, १९७७; आकार १४ × २४ सेन्टीमीटर; पृ० १० + ८० + ८ (= ९८); चित्र ८; मूल्य १५ रु० ।

५. स्मारिका : ६०वीं जयन्ती समारोह—प्रकाशक भारतीय कला मंच, पटना १९८२; आकार १९ × २५ सेन्टीमीटर; पृ० ८ + ५६ + ४० (= १०४); चित्र २८; मूल्य—(?) ।

६. दशा-दिशा : ललित जयन्ती अंक—प्रधान सम्पादक शिवशंकर सिंह, सम्पादक रमेश गौड़; प्रकाशक शैलेन्द्र कुमार चौधरी, प्रगतिशील प्रेस, अशोक राजपथ, पटना-६; प्रकाशन वर्ष—(?); आकार १९ × २५ सेन्टीमीटर; पृ० ६६ + ३६; चित्र १७; मूल्य (?) ।

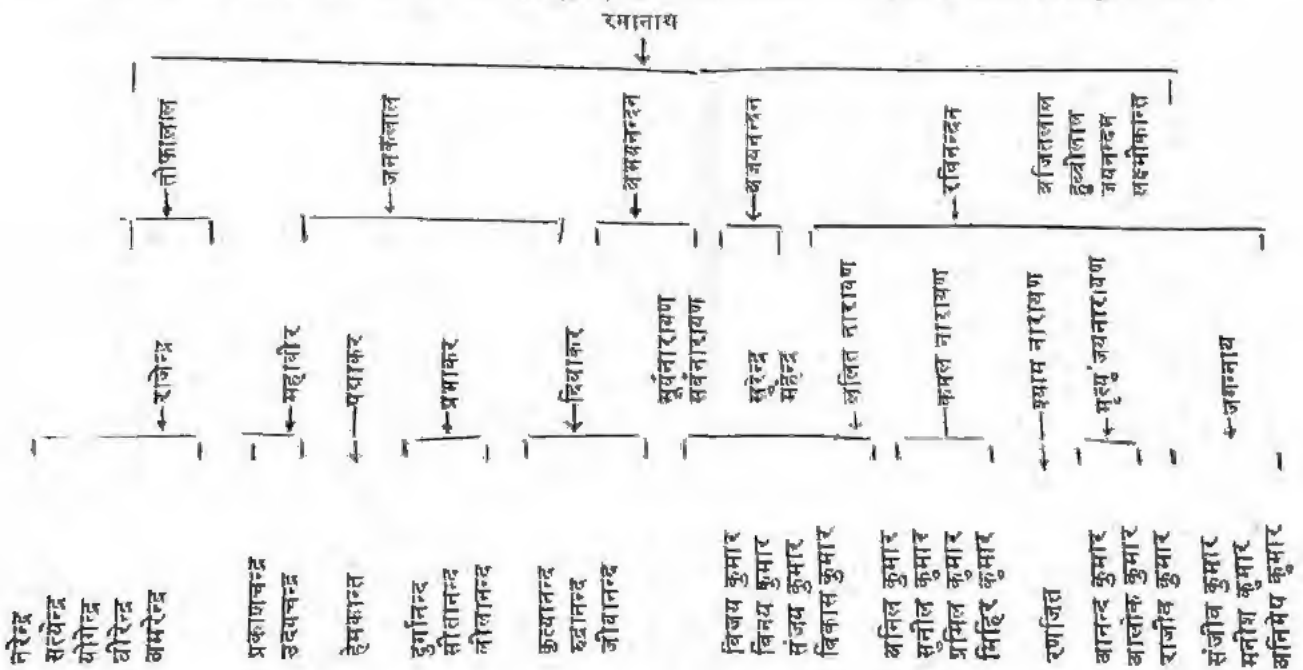
७. भारतीय रेल : ललित नारायण स्मृति अंक—वर्ष १६, अंक ६; जनवरी १९७६। सम्पादक महेन्द्रनाथ बेरी, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड आदि। प्रकाशक संयुक्त निदेशक, जनसम्पर्क, रेलवे बोर्ड, रायसीना रोड, नई दिल्ली। आकार २२ × २८ सेन्टीमीटर; पृष्ठ ८०; चित्र ४४; मूल्य २ रु०।

८. मिथिलापर पुनः वज्रपात—पैम्फलेट, मुद्रक कोशी प्रेस, वीरपुर (सहरसा)। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसे ललितबाबूक नाम हटयबाक सम्बन्धमे देशक कोन-कोनमे व्यक्त आक्रोशक चयनिका। १९७७। आकार १४ × २२ सेन्टीमीटर; पृ० ३२।

९. Lalit Narayan Mishra Commemoration Volume. of the Journal of the Bihar Research Society, Patna (1977-1978) Chief Editor—Prof. Upendra Thakur. Editor-in-charge—Dr. K. K. Mandal. Published by the Bihar Research Society, Patna. Size—18 × 24 cms pp. 888 + XVI, Illustrations—18 pls. Price—Rs. 150. Year of Publication. 1983.

ललितनारायण मिश्रक कुलवृक्ष

ज्ञातव्य जे जीवनाथ मिश्र ओ जयाची प्रसिद्ध भवनाथ मिश्र, (स. म. संकर मिश्रक पिता) सोदर छलाह। जीवनाथ मिश्रक सन्ततिमे ललित बाबू जवंत छथि। एतहिसे सोदरपुर मूल दू शाखामे विभक्त भेल—सोदरपुर दिगोन ओ सोदरपुर हरिगढ।



परिशिष्ट—६

ललितनारायण मिश्रक नामसँ गौरवान्वित कतोक
संस्था, नगर ओ मन्दिर

१. ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
२. ललित नारायण मिश्र इन्स्टिट्यूट आफ बिजिनेस मैनेजमेंट,
मुजफ्फरपुर ।
३. ललितनारायण मिश्र इन्स्टिट्यूट आफ इकनामिक डेभलपमेंट एंड,
सोशल चेंज, पटना ।
४. ललितनारायण मिश्र महाविद्यालय, झंझारपुर, जिला मधुबनी ।
५. ललितनारायण मिश्र स्मारक महाविद्यालय, ललितनगर (वीरपुर),
जिला सहरसा ।
६. ललितनारायण मिश्र इन्स्टिट्यूट आफ मेडिकल साइन्स, अगमकुआं
पटना (आब नालन्दा चिकित्सा महाविद्यालय, पटनाके अन्तरित) ।
७. ललितनारायण-चिकित्सालय, बसानपट्टी, सहरसा ।
८. ललितेश्वरनाथ शिवमन्दिर, खड्गपुर झील, नुंगेर ।
९. ललितेश्वर महादेव-मन्दिर, अन्धरा-ठाढ़ी, मधुबनी ।
१०. ललितनारायण चिकित्सालय, ललितनगर (वीरपुर), सहरसा ।
११. ललितनारायण होम फॉर होमलेस, ललितनगर (वीरपुर)
सहरसा ।
१२. ललित ग्राम रेलवे स्टेशन ।
१३. ललित-समाधि, बलुआ बजार ।
१४. ललित नारायण मिश्र स्मारक सरस्वती मन्दिर, बलुआ बजार,
सहरसा ।

१५. ललित नारायण मिश्र विद्या मन्दिर, बलुआ बाजार ।
१६. ललितेश्वर शिवमन्दिर, ललित बाबूक समाधि पर, बलुआ बाजार ।
१७. ललित नगर (वीरपुरक नव नाम) ।
१८. मिथिला ललित संग्रहालय सह-शोध-संस्थान, सोराठ ।
१९. ललित नगर भवन, त्रिभुवन पार्क, दानापुर, पटना ।
२०. ललित स्टेडियम, सहरसा ।
२१. ललित लक्ष्मीपुर हॉल्ट, राजनगर एवं खजौलीक बीचमे, मधुबनी ।
२२. ललित नारायण कन्या उच्च विद्यालय, गनपतगंज, सहरसा ।
२३. ललित नारायण कन्या उच्च विद्यालय त्रिवेनीगंज, सहरसा ।
२४. ललित नारायण विज्ञान महाविद्यालय, त्रिवेनीगंज, सहरसा ।
२५. ललित नारायण द्वार, पिपरा बाजार, सहरसा ।
२६. ललित नारायण द्वार, उदाकिसुनगंज, मधेपुरा ।
२७. ललित नारायण कला मंच, उदाकिसुनगंज, मधेपुरा ।
२८. ललित नारायण नगर भवन, सहरसा ।

